गुरु नानकदेव

संत कबीर

संत रविदास

संत दादूदयाल

सहजोबाई

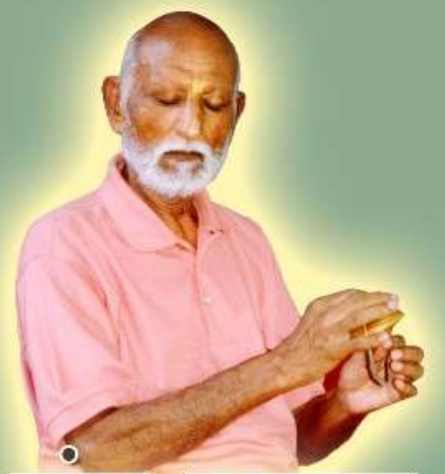

संत सूरदास

मीरा बाई

संत-प्रसाद

स्वामी शिवोम् तीर्थ

संत नामदेव

संत ललद्द

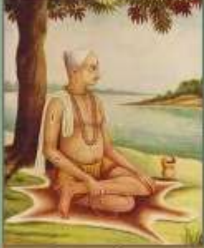
संत तुलसीदास

संत तुकाराम

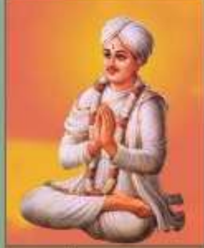
संत एकनाथ

संत–प्रसाद

(भजन–ग़ज़ल संग्रह)

(हस्तलिखित संस्करण)

शिवोम् तीर्थ

प्रकाशक

श्री स्वामी शिवोम् तीर्थ आश्रम

रायसेन (म.प्र.)

संत प्रसाद

स्वामी शिवोम् तीर्थ

(हस्तलिखित संस्करण)

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण 3000

अक्षय तृतीया संवत् 2059

(सन् 1999)

आवरण छायाकंण

हेम शंकर पाठक

मूल्य ४०/-

प्रकाशक :

स्वामी शिवोम् तीर्थ आश्रम

रायसेन (म.प्र.)

मुद्रण :

त्रिमूर्ति प्रिन्टर्स

5 सेक्टर 'डी' सांवेर रोड, इन्दौर

फोन : 421548, 420876

अनुक्रमणिका

१. संत तुलसी दास जी १५
२ परम दीवानी मीरा बाई जी २०
३ संत कबीर साहिब जी ३६
४ परम भक्त सूरदास जी ५५
५ गुरु नानक देव जी ६०
६ परम संत तुका राम जी ८८
७ परम संत नामदेव जी ११२
८ परम तपस्विनी लल द्यद जी १२३
९ परम संत एक नाथ जी १४१
१० परम संत दादू दयाल जी १५०
११. परम संत रविदास जी १५५
१२ परम संत सहजो बाई जी १६०

निवेदन

परम पूज्य गुरुदेव ने भक्तों पर असीम कृपा करके स्वयं की हस्तलिपि में लिखित 'प्रत्यागमन' पुस्तक के प्रकाशन की अनुमति प्रदान की थी। उसी श्रृंखला में द्वितीय पुण्य रूप में 'संत-प्रसाद' का प्रकाशन गुरुदेव की हस्तलिपि में ही यथावत् प्रकाशित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। भक्तजन इससे पूर्व लाभ प्राप्त कर अपने जीवन को सार्थक करेंगे।

भूमिका

अध्यात्म में रुचि उत्पन्न होने के प्रारम्भिक काल से ही मैं, मध्ययुगीन संतों-भक्तों के व्यक्तित्व, कर्तृत्व तथा कवित्व से आकर्षित एवं प्रभावित होता रहा हूं। सच तो यह है कि उस समय संत साहित्य एवं संत-वाणियां ही मेरी प्रेरणा का मुख्य स्रोत रही हैं। जहां एक ओर भक्तों संतों के जीवन-चरित्र पढ़ता रहता था, वहीं उन के द्वारा रचित पदों-भजनों को भी गुनगुनाता रहता था। ऐसा प्रतीत होता था कि संतो के हृदय के भाव, मेरे हृदय में प्रविष्ट हो रहे हैं। उन के पदों में, अपने दोषों के प्रति घृणा तथा उन से छुटकारा प्राप्त करने की छटपटाहट झलकती थी, जगत के प्रति वैराग्य एवं ईश्वर के प्रति प्रेम प्रकट होता था। संत प्रभु के आशिक थे। माशूक के लिए सब कुछ लुटा देना चाहते थे। यहां तक कि शरीर तथा अपने अहम् की भी बलि दे देना चाहते थे। उन के यह सभी भाव, उन की वाणियों में उजागर होते हैं।

उन दिनों अध्यात्म के क्षेत्र में, मैं एकदम नया था। दीक्षा अभी प्राप्त नहीं हुई थी। जप अध्ययन तथा भजन-गायन, यही मेरा साधना क्रम था। ध्यान किस का, कैसे करना ? मैं कुछ जानता नहीं था। किन्तु भजन-गायन मेरे हृदय को छूता अवश्य था। उन भजनों में मुझे संत-हृदय की वाणी स्पष्ट सुनाई देती थी। उन का स्वदोष-दर्शन का भाव, मुझे भी, स्वदोष-दर्शन की ओर प्रेरित करता था। प्रेमोत्पादक भजनों के साथ संत-भक्त भी, प्रेम-मग्न हो कर, नृत्य करते से प्रतीत होते थे। उन के साथ ही साथ मैं भी भाव-विभोर हो उठता था। इस प्रकार अधिकांश समय मध्ययुगीन संतो-भक्तों की संगत में ही व्यतीत होता था।

मन का यही स्वभाव है कि शुभाशुभ जो कुछ भी करो, उस के संस्कार

संचय कर लेता है। सूक्ष्म स्तर पर, अन्तर्मन यही तो करता है। वह तम रज ही नहीं, सत् का संचय करने से भी नहीं चूकता। इस प्रकार मनुष्य को पता भी नहीं चलता कि उस के अन्तर में ढेरों संस्कार संचित हो कर, संस्कारों का एक विशाल वन खड़ा हो जाता है। समय आने पर यही प्रसुप्त संस्कार, उभर कर, उदार हो कर, मनुष्य को, चाहे-अनचाहे कर्मों के लिए प्रेरित करते रहते हैं। सतसंगत के संस्कार एकत्रित तो हुए, किन्तु काल के प्रवाह में, दबे रह कर, सुषुप्तावस्था में, वर्षों तक पड़े रहे।

1959 में मैं, श्री गुरु चरणों में, देवास उपस्थित हो गया तो मेरे समक्ष अध्यात्म का एक विशाल तथा अति गहन मार्ग खुल गया जिस ने मेरी सारी चिन्तन शैली, साधन प्रणाली तथा मान्यताओं को परिवर्तित कर के रख दिया। मैं इस नई विचार-धारा से ऐसा प्रभावित हुआ कि पिछला सभी कुछ भुला बैठा। साधना के साथ साथ महाराज श्री की व्यक्तिगत सेवा तथा आश्रम के उत्तरदायित्वों में ही खो कर रह गया। भजन-गायन तथा अध्ययन एक ओर रखे रह गए। जप का भी रूप परिवर्तित हो गया यह स्थिति 1985 तक चलती रही। 1969 में श्री गुरु महाराज के ब्रह्मलीन होने पर आश्रम का भार भी मुझ पर आ गया। दीक्षा कार्य, प्रवचन, भ्रमण, पत्र-व्यवहार तथा आश्रम व्यवस्था आदि कार्यों में व्यस्त रहा। 1985 के पास क्रिया शक्ति की कृपा से संचित संस्कार उदय हुए। भजन-गायन फिर से आरंभ हो गया। पहले प्रयत्न पूर्वक गाता था, अब स्वभावतः होता था। संगीत-कला से तो मैं अनभिज्ञ था, केवल भाव-प्रधान गायन होता था।

इस बीच अकस्मात्, न जाने कैसे, मेरे अन्तर से भजन, गज़लें तथा गीत प्रस्फुटित होने लगे। गद्य साहित्य मैं ने पर्याप्त लिखा था किन्तु काव्य रचना अभी तक नहीं की थी। अब, लगभग 65 वर्ष की आयु में पद्य रचना करने लगा। संतों-भक्तों के काव्य-संस्कार मेरे अन्दर थे ही। एक दिन यही विचार आया कि क्यों न संतवाणी के आधार पर, उन पदों का पुनर्लेखन किया जाये। इस से संत-वाणी-सानिध्य भी प्राप्त होगा, उस में गहरे उतर कर, उन के भाव को भी, और अच्छी प्रकार समझा तथा ग्रहण किया जा सके गा।

इस प्रकार साधनेतर समय का भी, साधन के रूप में, उपयोग किया जा सकेगा

योग दर्शन में एक सूत्र है, "वीत राग विषयं वा चित्तम्" अर्थात् जिस का चित्त वीत राग हो गया है (काम क्रोधादि विकारों से निवृत्त) उस के चित्त का अवलम्बन लेने से वृत्ति-निरोध हो जाता है। यह अवलम्बन लेने के दो रूप हैं। पहला, साधक संत हृदय का अवलम्बन लेने का यत्न करता है जिसे साधक का प्रयत्न कहा जाता है। दूसरा, संत या गुरु, अपनी चित्त-शक्ति को प्रसारित कर, साधक के चित्त के साथ जोड़ देता है, जिसे संत कृपा या शक्तिपात कहा जाता है। यहां पर जिस विषय की चर्चा हो रही है उस का संबंध प्रथम अर्थात् यत्न साध्य साधन क्रम के साथ है। इसे कृपा प्राप्त साधक भी कर सकते हैं तथा कृपा के जिज्ञासु भी, जिस प्रकार कृपा प्राप्ति के पश्चात् भी जप, उपासना, पठन-पाठन आदि का महत्त्व काफी लम्बे समय तक बना रहता है उसी प्रकार काव्य लेखन तथा गायन का भी। यह बात अलग है कि किस साधक की, किस विषय में रुचि है।

संत बड़े दयालु होते हैं। जब तक उन का भौतिक देह विद्यमान रहता है, वह जन-कल्याण के पावन-कार्य में लगे ही रहते हैं। शरीर त्याग के पश्चात् भी, जहां एक ओर वे सूक्ष्म स्तरों पर साधकों के उत्थान में सहायक होते हैं, वहीं दूसरी ओर, भौतिक स्तर पर भी, अपने पीछे अपनी वाणी छोड़ जाते हैं, जो साधकों का मार्ग-दर्शन करती रहती है, हृदय को प्रभावित करती रहती है तथा उन्हें विकारों से बचाती रहती है। कोई भी साधक संत-वाणी की अवहेलना नहीं कर सकता। मन की शंकाओं का समाधान, प्राय: साधक संतों की वाणियों में ही खोजते हैं। आज भी कबीर के दोहे तथा पद घर घर गाए जाते हैं। तुलसी, सूर, नानक तथा मीरा के पदों को साधक-वर्ग में पूरी श्रद्धा तथा आदर से लिया जाता है।

मेरे अन्दर भी यही विचार उदय हुआ कि संतों की वाणियों का अध्ययन, पठन-पाठन तथा चिन्तन, साधना में अवश्य ही सहायक होगा। इस से संतों की चित्त स्थिति समझने में सहायता मिलेगी। उस के भाव में तल्लीन रहने पर, वह गुण हृदय में प्रकाशित होंगे। उन के दृष्टिकोण

विचार शैली तथा सावधानियों का अन्तर में विकास होगा। अर्थात् उन के चित्त का सहारा ले कर, अपने चित्त को आलोकित करने का मार्ग प्रशस्त हो गा। गुरु कृपा से प्राप्त साधन तो चलता ही है किन्तु हर समय साधन में ही बैठा नहीं रहा जा सकता। साधनेतर समय में, मन को संभालने की आवश्यकता होती है, अपितु उस समय यह आवश्यकता कुछ अधिक ही होती है। फालतू समय में, मन का उपद्रव करने का अधिक अवसर होता है। ऐसे में, कुछ समय सेवा जप में, कुछ पठन-पाठन में, तथा कुछ लेखन या गायन में। इस प्रकार, मन पर अपनी पकड़ ढीली हो जाने की संभावना बहुत कम हो जाएगी।

जब कोई साधक भावमय हो कर, संतवाणी का चिन्तन-गायन करता है तो अपना मन, संतों के मन के साथ जुड़ा हुआ अनुभव करता है ऐसा प्रतीत होता है मानो संत अतीव कृपा कर, अपने हृदय का प्रकाश साधक के हृदय तक प्रसारित कर रहे हों। हाथ पकड़ कर चला रहे हों। विपत्तियों में संभाल रहे हों। ज्ञान-पथ पर आगे बढ़ा रहे हों। संतों के हृदय की विशालता का भान तभी होता है जब उन के हृदय के साथ तादात्म्य प्राप्त किया जाए। तब साधक, जगत की स्वार्थमय, वासनामय मायावी तपश से दूर हट कर, संतों के कृपा रूपी विशाल वट-वृक्ष की शीतल छाया में सुख आनन्द का अनुभव करता है। साधक को ऐसा लगता है जैसे उस के दोष तथा अवगुण, संतों के ज्ञानमयी चित्त कुण्ड में आहुतियों की भान्ति जल कर भस्मीभूत होते जा रहे हैं।

साधना का विषय बहु आयामी है। उस के कई कोण हैं, कई रूप रंग हैं, कई स्तर हैं, तथा कितने ही मोर्चों पर आध्यात्मिक योद्धा को लड़ना होता है। भिन्न भिन्न साधकों में इस का रूप भी भिन्न भिन्न हो सकता है तथा उस का उपाय एक दूसरे से अलग हो सकता है। यह आवश्यक नहीं कि एक ही उपाय सभी साधकों को समान रूप से लाभकारी हो। किन्तु कुछ उपाय ऐसे अवश्य हैं जो अधिकांशतः सामान्य साधकों को फलदायी होते हैं। भजन-गायन उन में से एक है क्योंकि यह तत्काल प्रभावी है। मन तथा हृदय पर

सीधा प्रभाव डालता है। मन को जगत भाव से आत्म भाव की ओर मोड़ देता है। जीवन में सरसता ला देता है। इसी भाव से अभिभूत हो कर मैं ने, मध्ययुगीन संतवाणी के पुनर्लेखन का विचार किया। लिखते समय ऐसा प्रतीत होता था मानो संत विशेष समक्ष बैठे पदों का भाव समझा रहे हों। मेरे चित्त को अपने चित्त के समीप खींच रहे हों। कभी प्रेम से समझाते हैं तो कभी फटकारते प्रतीत होते। कुछ विचित्र सी आनन्दानुभूति होती थी। कबीर अपने फक्कड़पने में, मीरा प्रेम-भाव में, नानक गुरु-अनुराग में, सूर तथा तुलसी माधुर्य रस में डूबे दिखाई देते। जगत से कोई अपेक्षा नहीं, कोई परवाह नहीं, हरदम अपनी मस्ती में मस्त, प्रेम में ही तल्लीन।

संत-वाणी पर आधारित इन पदों में, संतों के भाव, सिद्धान्त तथा विचार-शैली का ध्यान रखा गया है तथा उसे अक्षुण्ण रखने का प्रयास किया है। इन पदों में, पाठकों-गायकों को जो कुछ भी अच्छा लगे, वह सब संतों का ही कृपा-प्रसाद है। जो उन के मन को नहीं भाए, उसे मेरे मन के विकारों का परिणाम समझ कर, उदार हृदय से क्षमा कर दें। मीरा के प्रेम तथा कबीर की मनःस्थिति को समझ कर पाना सरल कार्य नहीं। फिर, मैं तो एक अंजान बालक ही हूं। मेरा तो यह मात्र प्रयास ही है।

इन पदों में मेरा कुछ भी नहीं है, सब कुछ संतों की ही कृपा है, इस लिए प्रत्येक पद में, पद के मूल रचयिता का नाम दे दिया गया है। साथ ही यह पद उस संत-विशेष की रचना नहीं है, यह दर्शाने के लिए अपने नाम का भी प्रयोग किया गया है। उपरोक्त-क्रम के केवल दो अपवाद हैं, कबीर तथा लल। क्योंकि इन दोनों के पद लिखते समय, यह बात सूझी ही नहीं। बाद में यह विचार उदय होने पर सुधार कर लिया गया।

गुरु नानक देव जी इस ग्रन्थ में, सब से अधिक, आप की वाणी के आधार पर ही पद कहे गए हैं। कहा जाता है कि आप ने स्वयं कोई भी कविता या पद नहीं लिखा, अपितु दिव्य-भावावेश में, आप के अन्तर्मन में स्वयमेव ही प्रस्फुटित हुआ। इसी लिए उन के भजनों को पद नहीं कह कर, शब्द कहा जाता है

आप के पश्चात् नौ अन्य गुरु महाराज आप की गद्दी पर आसीन हुए, जिन में से दसवें गुरु महाराज की वाणी स्वतंत्र ग्रन्थ के रूप में संकलित है। तीन गुरुओं ने कोई वाणी कही ही नहीं। बाकी पांच गुरुओं ने जो भी वाणी कही है, उस में उन्हों ने अपना नहीं, गुरु नानक देव जी के नाम का ही प्रयोग किया है। उन्हों ने प्रथम गुरु महाराज को आन्तरिक जाग्रत शक्ति के रूप में मान्य किया, जिस के माध्यम से आन्तरिक वाणियां प्रकट होती हैं। अतः उन्हों ने गुरु नानक देव जी का नाम देना ही अधिक श्रेयस्कर समझा।

मेरा मन भी उपरोक्त तथ्य को स्वीकार करता है, तथा सभी छहों गुरुओं की वाणियों को, गुरु नानक देव जी की वाणी ही मान्य कर, सभी वाणियों को इन पदों का आधार बनाया है। आप के शब्दों में जगत की असारता, जीव की असमर्थता, ईश्वर की सर्व-शक्तिमत्ता, समर्पण, नाम-महिमा, गुरु का महत्व आदि विषयों पर विशद प्रकाश डाला गया है। आप की वाणी गुरु-ग्रन्थ साहिब में संकलित है।

संत कबीर साहिब कपड़ा बुनने वाला एक सामान्य जुलाहा, निर्धनता का साक्षात अवतार, पग-पग पर अभाव की अनुभूति, अंगूठा छाप, गृहस्थ का उत्तरदायित्व, फिर भी मस्तमौला, हर रंग तथा परिस्थिति में आनन्दित रहने वाला आध्यात्मिकता की ऊंचाईयों को छूने वाला। प्रत्येक संगीत सभा में आप की वाणी के स्वर गूंजते हैं। आध्यात्मिक प्रवचनों में आप के उद्धरण दिये जाते हैं। वास्तविक चित्र नहीं उपलब्ध होने पर भी, चित्रकारों ने अनेकों चित्र बना डाले हैं। जाति-पांति तथा मत मतांतरों की सीमाओं से परे। स्वयं अपठित होते हुए भी, आप की वाणियों पर शोध के आधार पर, अनेकों लोग डाक्टरेट प्राप्त कर चुके हैं।

कबीर साहिब की वाणी "कबीर साखी" में संकलित है। वैसे अनेक जगह स्थानीय बोलियों में, आप की वाणी के नाम पर पद गाए जाते हैं। यह कबीर-वाणी की लोक प्रियता का द्योतक है। गुरु ग्रन्थ साहिब में भी आप के बहुत से पद दिए गए हैं

संत लल द्यद जी लल जी का परिचय सर्व प्रथम गुरु महाराज जी से प्राप्त

हुआ। चौदहवीं शताब्दी की यह महिला-संत, काश्मीर में जन्मी, पली तथा वहीं जीवन व्यतीत किया। वह प्रायः नग्न ही रहा करती थी। जब उसे कोई कहता कि क्या पुरुषों के समक्ष, उसे, इस अवस्था में, लाज नहीं आती, तो वह कहती, "जगत में पुरुष है ही कौन? सभी तो स्त्रियां हैं। कोई स्त्री, स्त्री वेष में है तो कोई पुरुष-वेश में। हैं तो सब स्त्रियां ही, फिर किस से तथा कैसी लज्जा। पुरुष तो केवल एक ही है जिस से लाख प्रयत्न करने पर भी, अपना कोई कुछ भी, छुपा या ढक नहीं सकता।"

लल जी बड़ी उच्च कोटि की संत थीं। उन्हों ने काश्मीरी भाषा में कुछ आध्यात्मिक पदों की रचना की है। श्री गुरु महाराज जी के पास मैंने एक छोटी सी पुस्तक देखी थी जिस में लल जी के मूल काश्मीरी पद तथा उन का हिन्दी-अनुवाद था। उस समय मैं ने उधर अधिक ध्यान नहीं दिया। बाद में वह पुस्तक कहीं मिली ही नहीं। श्री जयालाल कौल द्वारा लिखित हिन्दी पुस्तक "लल द्यद" इस समय मेरे पास है, जिस में लल जी के जीवन, साधन, चिन्तन तथा कवित्व पर प्रकाश डाला गया है। छोटी-छोटी पंक्तियों में लल जी के कुछ पदों का हिन्दी अनुवाद भी दिया है। यही भावानुवाद लल जी को समझने, उन के चित्त के साथ तादात्म्य स्थापित करने, तथा उसी के आधार पर पद-रचना करने में सहायता मिली।

परम-भक्त नामदेव जी वासनाओं एवं तापों से व्यथित हृदय को सांत्वना देने में समर्थ तथा जीव की चित्त-स्थिति परिवर्तित कर देने में सक्षम, भक्ति-भावना से ओत-प्रोत पदों के रचयिता भक्तराज नामदेव जी, महाराष्ट्र में तेरहवीं शताब्दी में विद्यमान थे। प्रभु के प्रति समर्पण का भाव, आप के पदों की विशेषता है। आप ने मराठी भाषा में अभंगों की रचना की, किन्तु काफी लम्बे समय तक पंजाब में भी निवास करते रहे, जिस कारण आप हिंदी में भी पद रचना करने लगे। आप के कई पद गुरु ग्रन्थ साहिब में भी सम्मिलित किए गए हैं।

एकनाथ जी महाराष्ट्र में भक्ति रस की गंगा बहाने वाले संत एकनाथ

जी का लीला-काल सोलहवीं शताब्दी है। आप के पदों में गुरु महिमा का विशद वर्णन है। मुक्तक पदों के अतिरिक्त चतुःश्लोकी भागवत तथा एकनाथी भागवत, दो महत्व पूर्ण ग्रन्थ हैं। जिन्हें महाराष्ट्र में काफी श्रद्धा तथा आदर से देखा जाता है

मीरा बाई जी दीवानी मस्तानी मीरा बाई जी को किसी परिचय की आवश्यकता नहीं। उन का जगत त्याग, प्रभु-प्रेम तथा उन पर हुए असहनीय अत्याचारों से कौन अवगत नहीं। इन के भजनों के आधार पर लिखे साठ भजन पहले "गुरुदेव" नामक भजन संग्रह में प्रकाशित हो चुके हैं। यहां केवल बत्तीस पद ही दिए जा रहे हैं

संत तुका राम जी समर्थ राम दास जी तथा छत्रपति शिवाजी महाराज के समकालीन, संत मूर्धन्य महात्मा तुका राम जी का, भक्ति पंथ में विशेष स्थान एवं महत्व है। वैराग्य, प्रेम, जगत का मिथ्यात्व तथा भगवान पाण्डुरंग विट्ठल के प्रति अनुराग से ओत-प्रोत, इन के हज़ारों अभंग प्रसिद्ध हैं। सभी मराठी भाषा में हैं। मैं केवल पच्चास पद ही दे रहा हूं।

इस के अतिरिक्त सूरदास जी, दादूदयाल जी, रविदास जी, तथा तुलसी दास जी के दस-दस, एवं सहजो बाई जी के दो पद, उन की वाणियों के आधार पर, इस पुस्तक में दिए जा रहे हैं। इन के भाव तथा विषय-वस्तु को ज्यों का त्यों रखने का प्रयास करते हुए, पदों की रचना की गई है। अपनी साधना का एक अंग समझते हुए, श्री गुरु महाराज के कृपा-प्रसाद से, यह प्रयास किया गया है। यह सभी पद, बहुत कर के, अपने लिए लिखे गए हैं। इतना अवश्य अनुभव किया गया है कि ऐसे गंभीर प्रयास साधना के उत्थान में अवश्य ही मंगलकारी एवं हितकारी सिद्ध हो सकते हैं। आप भी यदि इन पदों का पठन-मनन करेंगे, गायन करेंगे, तो आप को भी लाभ ही हो गा।

आध्यात्मिक उत्थान केवल बुद्धि-कौशल का विषय नहीं। कोरा बौ विकास प्रायः जगत के मायामय गर्त में गिरने का कारण बनता है। अनुभ

कुछ होता नहीं किन्तु जानकारी का अभिमान इतना उग्र रूप धारण कर प्रकट हो जाता है। ऐसे साधक के पतन की संभावना बलवती हो जाती है। जो विद्वान, संतवाणी को, कोरे तर्क के आधार पर समझने या समझाने का प्रयत्न करते हैं, वह कोरे के कोरे ही रह जाते हैं। वह संतों में दिखाई देने वाले विभिन्न मार्गों तथा सिद्धान्तों की तुलना करने में ही लगे रहते हैं। किन्तु किसी भक्त के लिए, सभी संतों का एक ही मार्ग है। सभी संतों का प्रियतम एक है। वह सभी उसी से असीम प्रेम करते हैं। भाव तथा उपाय, चित्त-स्थिति, योग्यता तथा परिस्थितियों के अनुसार भिन्न-भिन्न हो सकता है किन्तु प्रेम सब में एक जैसा ही है। इसे केवल बौधिक स्तर पर समझ पाना कठिन है। इस के साथ-साथ, हृदय से, भाव को पकड़ना भी आवश्यक है। अतः यह सभी विवाद त्याग कर, प्रभु-प्रेम में रत हो जाओ। कोई कुछ भी कहे, कहने दो। जब आप को जगत से कोई अपेक्षा नहीं रहे गी, तो जगत की परवाह भी नहीं रहेगी। अपने प्रभु से ही अपेक्षा रखो, आशा एवं भरोसा रखो, श्रद्धा तथा प्रेम रखो, प्रभु के चरणों में समर्पित हो जाओ। यही भक्तों का मार्ग है।

संतवाणी का पुनर्लेखन एकदम नया प्रयोग है। संभव है किसी ने पहले कुछ किया हो, किन्तु मेरे देखने-सुनने में नहीं आया। संस्कृत के कुछ श्लोकों तथा कतिपय पुस्तकों का पद्यात्मक भावानुवाद अवश्य देखा है परन्तु संत-वाणी का नहीं। संस्कृत से हिन्दी में भाव-अनुवाद के पीछे भी सिद्धान्त वही एक ही है, कि श्लोकों के सारभाव को समझ कर, मूल रचयिता के चित्त के साथ तादात्म्य स्थापित किया जाय, जिस से उस के चित्त का आश्रय ग्रहण कर, मन-निर्मलता का मार्ग प्रशस्त किया जा सके।

जब आप गायन, पठन या लेखन आरम्भ करेंगे तो प्रारम्भ में आप का लक्ष्य पद के शब्दों, अर्थ, सुर, ताल, लय आदि पर स्थिर होगा। जैसे-जैसे आप का भाव उदय एवं विकसित होता जाएगा, आप की

तल्लीनता बढ़ती जायेगी, आप के समक्ष सुर-ताल-शब्दादि विलीन होते जाएंगे। सुर-तालादि तो अपने-आप, आप के पीछे-पीछे चले आएंगे। उस भावमय अवस्था में, मूल रचयिता द्वारा, स्वयं समक्ष प्रकट हो कर, पद का भाव प्रकाशित किया जाएगा। इस प्रकार प्रेम-मार्ग से, आप के अन्दर का, ज्ञान-मार्ग खुलता जाएगा

स्थानाभाव के कारण, अधिक लिखना कठिन है। सार बात यही है कि कि केवल शास्त्रीय ज्ञान ही, भव के पार ले जा कर, प्रभु-दर्शन नहीं करा सकता। मन का प्रेम, साधना में प्रयत्न, जगत से वैराग्य तथा श्री गुरु चरणों में अनुराग आवश्यक है। जप, अध्ययन, ध्यान, कीर्तन आदि सभी प्रयत्न के अन्तर्गत ही हैं

मैं विद्वान या कवि नहीं। श्री गुरु महाराज का, एक साधारण सा दास हूं। यह गुरु-कृपा ही है, जो लिखवाती है। जैसे गुरु महाराज बजाते हैं, एक-तारा बजता है। एक-तारे का अपना कुछ नहीं।

पदों पर राग-ताल देने का कार्य ब्रह्मचारी पंकज प्रकाश ने किया है। आवरण चित्रांकन श्री हेम शंकर पाठक जी का है। पुस्तक के प्रकाशन में श्री बंसी लाल जी मेड़तिया न अनथक परिश्रम किया है। मेरी पिछली कई पुस्तकों की छपाई के काम का उत्तरदायित्व उन्हीं के कंधों पर है। इस बार पुस्तक प्रकाशन का बोझ स्वामी शिवोम् तीर्थ आश्रम रायसेन ने उठाया हैं। इन सब के प्रति आभार।

यदि एक भी पाठक साधक, पुस्तक से, आध्यात्मिक दृष्टि से लाभान्वित हुआ, तो मैं अपना परिश्रम सार्थक समझूंगा। श्री गुरु महाराज आप सब का कल्याण करें

श्री विष्णु तीर्थ उपवन
फूलों की घाटी
ग्राम पिपलिया राव
इंदौर (म. प्र)

——— स्वामी शिवोम् तीर्थ

संत तुलसी दासजी

राग मिश्र काफी ताल रूपक

दीन हौं, दर का भिखारी, तू जगत दाता बड़ा
न अघाया पाप करता, दर पह तेरे आ पड़ा
आसरा, बे-आसरों का, आय मन-आरत हरे
पाप, मैं आकण्ठ डूबा, शरण तेरी, आ पड़ा
तू हरि, मैं जीव तेरा, तू सुआमी, दास हौं
जगत का नाता न कोई, तू ही नाता, आ पड़ा
तोरे मोर अनेक नाते, मन को भाए, मान ले
मैं चरन तेरे ही जानूं, नात ये ही, आ पड़ा
हौं शरण तेरी ही तुलसी, मन तेरे लागा शिवोम
तू जग धाता-विधाता, मान ये ही, आ पड़ा

राग खमाज ताल भजनी धुमाली

जा हिरदय प्रभु-प्रेम न होवे
ताही त्यागो अति-वैरी सम, प्रिय भले कितना ही होवे
नाता मानो एक हरि का, बाकी नाते सब ही विरथा
लाभ न होवे कोई या सों, अपनापन कितना ही होवे
का करिए अंजन को ऐसे, नयनन फोड़त देवत अपने
नहीं होय तो यही भला है, उत्तम वह कितना ही होवे
छोड़ दिया भक्तन ने सब को, जो अनुकूल नहीं मन अपने
मित्र सखा नाता हो कुछ भी, बंधु वह कितना ही होवे
तुलसी एक हरि हितकारी, दीन-जनन का, भक्त जनन का
तीर्थ शिवोम उसी से नाता, जग मीठा कितना ही होवे

राग जोगिआ ताल केहरवा

ममता तू नहीं जावत मेरे मन सों
इन्द्रन जरजर, झुकी कमरिया, लाज नहीं लोकन सों
अब तो हाथन पकड़ि न आवे, नयनन नाहीं देत दिखाई
श्रवण वचन सब शिथिल भये हैं, बल नाहीं पावन सों
विषयन भोगन जोग नहीं तन, धन वैभव सगले ही छूटे
बंधु मित्र सखा सब त्यागे, पर न छूटत मन सों
ममता मोह सकल परिवारा, मन में बैठा, तन में बैठा
कृपा-हरि ही सकत हटाए, विषय-भोग लोभन सों
तुलसीदास प्रभु बनवारी, हौं तो दास चरन का तेरे
तीर्थ शिवोम् न जावत ममता, हटत नहीं पापन सों

राग बैरागी भैरव ताल त्रिताल

अवसर बीते, पछताएगा
दुर्लभ मानुष देह यह पाई, जीवन बीत वृथा जाएगा
रणयोद्धा, धनवान, कलाधर, काल से कोई बचन पा
लगे सभी ही जगत बनावन, खाली हाथ चला जाएगा
सुत कलत्र दारादि सभी प्रिय, स्वारथ ही में सगले लागे
कोऊ भी जन साथ न चाले, एक अकेला ही जाएगा
हरि चरनन अनुराग जगा ले, त्याग दुरासा मनसा सों
बुझत वासना कबहूं नाहीं, जलत जलत ही चल जाएगा
तुलसीदास हरि गुन गाले, जब लौं अन्तर श्वास चलत है
तीर्थ शिवोम् जगत यह मिथ्या, छोड़ सभी ही चल जाएगा

राग भारा ताल केहरवा

अनुपम किरपा प्रभुहिं कीनी
मानुष देह कठिन बहु पाना, परम-अनुग्रह मोहे दीनी
गुण तुमरे न जात बखानत, मो पर कियो बहुत उपकारा
फिर भी मांगत हौं प्रभु तुम सों, जो दीनी सो तुम सो लीनी
विषय वासना गरत गिरा हौं, जारत रहत मोर नित मनवा
इस से पिण्ड छुड़ाओ हरिहर, अब लौं किरपा मो पर कीनी
मनवा मोरा कीना चंचल, दुख घनेरा विषयन दीना
किरपा सों ही निर्मल मनवा, भक्तन तुम रखवारी कीनी
तुलसीदास वही छुड़वाए, जा ने जीव फसाया जगहिं
तीर्थ शिवोम् करूं क्या वाणी, यह वाणी तुमरी ही दीनी

राग छायानट ताल दादरा

राम जपो रे, राम जपो रे, राम जपो रे सीता राम
भाव जगत का, नीर जगत का, नाव समाना सीता राम
एक ही साधन नाम जपन का, मिलत सकल जो मांगत तू
जोग समाधि संजम बिरथा, बिरथा न इक सीता राम
जग सों तारत, पार उतारत, पाप जराए मन तेरे
जम का दूर सकल भय मन सों, निर्भय करता सीता राम
जगत वाटिका महके सुन्दर, पर तू अटक नहीं या में
लेत लुभाए मनवा तेरा, लेत छुड़ाए सीता राम
तुलसी राम नाम को त्यागे, दुख पाए, संकट आए
तीर्थ शिवोम् उपाय एको, जप ले, भज ले सीता राम

राग भैरवी ताल भजनी ठेका

सरन पड़ा ताही हरि तेरे
जोग विराग ज्ञान भक्ति सब, कुछ भी पास न मेरे
काम क्रोध मद भया दीवाना, मन में पाप घनेरे
लोभ मोह स्वारथ का भरया, रहत हैं हर पल घेरे
जब देखत हूं विषयन को हौं, तो उठ धावत जग में
होश तभी न कोई मो को, जात न तुमरे डेरे
जो विवेक की बात करत भी, तुम्हीं कहावत मो सों
हौं तो पापी नीच कुकर्मी, पाप ही पावत फेरे
तुलसीदास पड़ा विपदा में, कैसे या छुटकारा
तीर्थ शिवोम् आशा है तो सों, इतनी ही मति मेरे

राग यमन कल्याण ताल रूपक

सरन में तुमरी कभी आया नहीं
न कोई अनुराग मन में, राम मन भाया नहीं
दूसरे घर नार देखी, नाचता विरथा रहा
न कभी भी राम शरणीं, गुन-हरि गाया नहीं
नासिका लेवे सुगंधि, जीभ भोजन बहु करे
राम-जप आनन्द मो को, मन कभी आया नहीं
न कभी मन्दिर हरि के, न ही सत्-संगत करी
न ही सिमरन राम कीना, चरन मन लाया नहीं
मैं रहा तुलसी जगत में, उलझता, फसता फिरा
मन मेरे शिव ओम् कबहूं, राम-धुन भाया नहीं

राग भैरवी ताल भजनी ठेका

मूढ़ मन ! सीख लेअ तू मेरी
हरि बिमुखन को सुख न कोई, बात समझ तू मेरी
हरि-भजन ही सुख का दाता, हरि-भजन ही मारग
हरि-भजन जन पार उतारे, मान लेअ तू मेरी
प्रभु-कृपा बिन मिटत नहीं दुख, जतन करौ बहु भारी
———— कृपा होए दुख छिन में जाए, जान बात तू मेरी
हरि-भजन सब संशय मेटे, हरि-भजन परमारथ
मनोकामना करत है पूरी, याद राख तू मेरी
तुलसीदास जगत दुखदायी, आसा छोड जगत की
चरण लाग शिव ओम् हरि के, बांध बात तू मेरी

राग पट्दीप ताल झुमाली

काहे मन विश्राम करत न
सुख जो सहज, भुलाए दीना, काहे सिमरन राम करत न
मन संग लाग अति दुख पायो, जाल विषम माहीं उरझायो
फिर भी राम भजत ही नाहीं, काहे चरनन राम परत न
नाहीं तजत मोहवश जग को, जानत भी, जानन न चाहे
पड़ा कीच ही रहा बितावत, काहे सुखहिं धाम चलत न
गुरुकृपा बिन विमल विवेका, होवत उदय क़भी भी नाहीं
या ही वेद पुरान बतावत, काहे मनहिं राम भरत न
तुलसीदास मिटे मन तृसना, कब हरि चरणीं नेहा जागे
तीर्थ शिवोम् पड़ा तव शरणीं, काहे भव-जल पार तरत न

मतवाली मीरा बाई जी

राग गोरख कल्याण ताल भजनी ठेका

जौन का रोकणहार न कोई, घर चाले गोविन्द हरि के
कैसी लाज, कैसी मर्यादा, चरण पड़े जो कृष्ण हरि के
मान तान अपमान न माने, न ही सुने जगत की बातां
चलता जाए, बढ़ता जाए, घर जा पहुंचे एक हरि के
उच्च शिखर पर पी का भवना, जहां बिराजे निर्गुण पीया
भाव भक्ति से जाए रीझत, लेत बुलावत पास हरि के
मीरा चाली, जाए चलती, न ठहरे, न जग को देखे
एक ही मंज़िल, पी का भवना, न सूझे बिन पीय हरि के
तीर्थ शिवोम् पड़ी है मीरा, पीव की सेजे, सुखमन अन्दर
जग तो बाहर छूट गयो है, एक देश, घर पीव हरि के

राग दरबारी कान्हड़ा ताल रूपक

क्या कहूं? क्या न कहूं? कुछ, मैं समझ पाती नहीं
क्या गति है मन की मेरे, मैं बता पाती नहीं
तुम बिना तड़पा किए हूं, याद तेरी ही रहूं
कसक तेरी ही हृदय में, मैं संभल पाती नहीं
मैं ने समझा दिल दिया जो, तुम ने ले ही है लिया
दिल तो अब भी पास मेरे, मैं निभा पाती नहीं
तुम गए हो भूल ऐसे, याद मीरा न रही
किस के दर पर अब मैं जाऊं, मैं तो जा पाती नहीं
दिल दिया ही क्यों था तुम को, मैं हूं पछताती शिवोम्
तू तो निर्मोही बड़ा है, मन हटा पाती नहीं

राग धनाश्री ताल भजनी ठेका

ता का भाग भलो है जागा, जो पावे साधु की संगत
चढ़ती आवे, बढ़ती आवे, रैण दिनो दिन रंगत रंगत
जो मांगे जग में सुख- सुविधा, आशा करे जगत विषयन की
ता का संग करे क्यों भाई, मन न लागे, पड़त है भंगत
या मन तो है एक खिलौना, जग में जाए, जगत नचाए
मन अपना वश में कर राखो, चाहे बैठन साधु की पंगत
पर-निन्दा, पर-दारा सेवे, ता का मन चंचल हुई जावे
क्रोध-लोभ मदमाता फिरता, भाग में उस को मिले अपंगत
तीर्थ शिवोम प्रभु भगवन्ता, मीरा चरणीं आन पड़ी है
चरण शरण ही मनवा लागे, न बैठूं मैं बीच कुसंगत

राग गौड़ सारंग ताल त्रिताल

गोविन्द चरणीं मनवा लागा, गोविन्द ही गुण गासां
गाय गाय गोविन्द हरि को, मन निर्मलता पासां
चरण कमल नित अमृत पाऊं, ऐसो नाम तुम्हारा
राम नाम मन धारन करने, मन- मन्दिर नित जासां
मीरा प्रेम- हरि मन जाग्या, जगत प्रेम न भावे
हरि मन्दिर नित दरसन करसां, घुंघरू नित्य बजासां
राम नाम भव सागर तारे, राम करत उपकारा
राम नाम का सिमरन हरदम, नाम ही हृदय धरासां
तीर्थ शिवोम शरण में मीरा, शरणीं उमर गुज़ारूं
राम नाम नित हिरदय माहीं, जीवन धन्य बनासां

राग दुर्गा ताल भजनी ठेका

भूल रहा तू राम को काहे, करत बन्दगी न तू काहे
भोगन लागा, विषयन लागा, सूधो चलत नहीं तू काहे
पुष्प की भान्ति तू भी मनवा, खिला चार दिन जग में आए
पल-पल जाए बीतत वेला, सोचत मन में न तू काहे
माया काया छाया सब ही, रहें भ्रमावत मन को तेरे
तू भी बैठा भूल प्रभु को, उतरत मन में न तू काहे
काल समान प्रवाह निरन्तर, बहता जाए, बहता जाए
क्यों तू रहा गवाए जीवन, समझत जग को, न तू काहे
तीर्थ शिवोम् सुनो हे बन्दे, मारग मीरा प्रेमहिं चालो
राम शरणहिं बीते छिन-छिन, करत विचारा न तू काहे

राग जयजयवन्ती ताल केहरवा

मेरो मन लागा चरणीं मीरा
मीरा की गति श्याम के पाहीं, करता मेरो जात निबेरा
मीरा मीरा मीरा गावत, चरणीं मीरा सीस नवावत
गाय गाय गुणगान हरि का, बसे जमन के शीतल तीरा
मनवा चाले पाछे मीरा, मीरा प्रेम हृदय में धारे
मीरा पंथ भरा अनुरागा, पावत मनवा सुख औ धीरा
कसक प्रेम मीरा की धारण, मुरली धुन सुन नाचत गावत
रंगा हृदय घनश्याम कन्हैया, मनवा फिर क्यों बने अधीरा
तीर्थ शिवोम् चलो रे चालो, मीरा दासी रही बुलावत
संग चलें पी घर आपुन के, आतम छोड़ सभी ही चीरा

राग आभोगी ताल झुमाली

मीरा का मन जग न लागे, म्हारा क्योंकर लागे
मीरा मनवा चरणीं दीनो, म्हारा मन न जागे
काम क्रोध मद लोभ समाया, निकल न पाऊं जग से
जग क्यों लागा म्हारे पाछे, जगत ओर ही भागे
दुख पाऊं पर हट न पाऊं, फिर-फिर मनवा धाए
मानत नाहीं, समझत नाहीं, ऐसो बनो अभागे
किरपा बिना तुम्हारी मीरा, मनवा वश न आवे
रंग रहे बस प्रेम हरि में, गोविन्द चरणीं लागे
तीर्थ शिवोम् हे मीरा रानी, तुम तो प्रेम दीवानी
मैं भी लागूं हरि चरन में, नेह-प्रभु मन जागे

राग चन्द्रकंस ताल त्रिताल

भक्तन हेत जगत दुखदाई
जग का भला सदा ही चाहें, फिर भी बने नहीं सुखदाई
अमृत परसें, पुष्प बखेरें, मारग प्रेम सदा दिखलावें
जगत सदा ही कांटे बोए, करत वह काहे मूरखताई
भक्तन को दुख देवे हेतु, अपनी आंख भी लेत है फोड़
अंधकूप में जगत समावे, भक्तन को भी लेत बोलाई
मीरा भोगा जगत तमाशा, पाया कष्ट महान घनेरो
फिर भी बांटा प्रेम हरि का, मारग प्रेम दियो दिखलाई
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, मोहे राख लगाए चरणीं
कुछ भी कहे करे जग म्हासों, रहूं सदा ही नेह लगाई

राग सारंग ताल भजनी ठेका

सीस उतार धरे भूईं पर, करत राम की भगती सोई
मीरा ओलख राम लियो है, बिलग कभी न ता सों होई
लागा मन हरि चरनन माहीं, होए दूर कभी भी नाहीं
रहत जुड़ा ही चरन निरन्तर, प्रेम हृदय जद् परगट होई
मन प्रभाव न लेवे जग का, कोई कैसी भी हो घटना
मस्त रहे मस्ती में हरदम, एक प्रभु ही हर पल होई
कोई शूर होए जो पाका, चढ़त सकत पर्वत के ऊपर
कठिन चढ़ाई प्रेम पंथ की, निश्चय पाका इकदम होई
तीर्थ शिवोम् शिखर पर पहुचीं, संभल संभल कर मीरा रानी
मीरा पंथ जो पकड़े कोई, पहुंचे पर्वत ऊपर सोई

राग देवगिरी बिलावल ताल भजनी ठेका

मन मंदिर गिरधारी आज्यो, मन मंदिर गिरधारी
राह निहारूं, करत प्रतीख्या, आज्यो कदे बिहारी
सतगुरु दीनो हाथ पिआला, राह में लेय खड़ी हूं
आज्यो भगती बख्शश दीज्यो, मांगत रही मुरारी
सतसंगत में लाग्यो मनवा, विषय-जगत न भावें
संतन संग रहूं नित बैठी, मन में आस तिहारी
मीरा तो सों, तो सों मीरा, प्रेम की डोर बंधी है
प्रेम की गांठ खुलत अब नाहीं, बांधी गांठ विचारी
तीर्थ शिवोम् कृष्ण गोपाला, कुंजगली कद आज्यो
मांगत दर्शन एक तिहारे, करो कृपा बनवारी

राग किरवानी ताल केहरवा

आओ वेग मेरे सतगुरु जी, बीज प्रेम का मन में बोवो
प्रभु-विरह की पीरा जागे, हिरदय का दुख सगला खोवो
तुम मिलयां मीरा मन शीतल, तुम बिछुड़े मुरझाऊं
तुम मिलयां आनन्द समाए, मन मेरा हरि चरणीं लावो
मैं कुरलाऊं कोयल भान्ति, बाहर कुछ भी कह न पाऊं
अन्दर अन्दर घुटती जाऊं, घुटन हृदय की दूर करावो
नीर बिना ज्यों तड़पे मच्छली, बिन दर्शन मैं तड़पूं तेरे
मन की पीरा जात है खाय, आओ दुखड़ा दूर भगावो
तीर्थ शिवोम् है दासी मीरा, विनय करत है चरणों माहीं
आंगन पांव धराओ मोरे, किरपा वर्षा मो बरसाओ

राग विलासखानी तोड़ी ताल केहरवा

आरत भाव है जागा हिरदय, राम मिले बिन चैन न आवे
हिरदय पीरा, तड़पत तड़पत, विरह रही कलेजा खावे
पल-पल छिन-छिन राह निहारूं, नैनां हरदम पीव ही लागे
जागत जागत रैण बिताऊं, पीरा बिरहा रही सतावे
पीव ही पीव पुकारूं हरदम, पीव पीव रट हरदम लागी
अवर न कोई दूजी सुध-बुध, पीव ही मन में रहत समावे
आय पीर हरो मीरा की, कृष्ण गोपाला हे गुसाईं
आओ वेग रहूं तड़पत ही, जग तो मोर तनिक न भावे
तीर्थ शिवोम् प्रभु गिरधारी, मीरा व्याकुल, बहु अकुलानी
उमंग पिया की मन में लागी, दर्शन ही मन तपश बुझावे

राग काफी ताल भजनी ठेका

जोऊं बाट तिहारी कान्हा, अटक गए तुम काहे राहे
जो चाहो सो करसो प्रभु जी, चाहे मारो, तारो चाहे
भोग बिलास नहीं मन भावे, नयन कपाट सदा ही लागे
उठ उठ कर मैं झांकत रहती, देखत तुम न आवत राहे
दर्शन बाझों चैन न आवत, होवत जाए कभी प्रभाती
सदा उचाट रहत मन मोरा, श्याम ध्यान न करत हो काहे
तीर्थ शिवोम् कृपा हो तेरी, मो पर मोरे प्रीतम प्यारे
मीरा बिनय करत तो आगे, मन संकोच करत हो काहे

राग बिलास खानी तोडी ताल केहरवा

तू चतुर सुजान महान नेहड़ा तो संग लाग्या
मोहे सूझत नहीं जहान, मानवा तो संग लाग्या
मुरली सुन सुध बुध बिसराई, भान कहीं न कोई
मेरा टूटा सभी व्योहार, जीयड़ा तो संग लाग्या
घर अंगना न सोहे मोहे, जब तें तान सुणी मैं
मोहे जगत करत न बात, एक ही तो संग राख्या
मन में प्रीत तेरी ही हरदम, हरदम ध्यान तेरा ही
इक लागी तोरी आस, आसरा तो संग राख्या
तीर्थ शिवोम् कृष्ण गोपाला, मीरा तोर ही दासी
है जगत न कोई सार, सारवा तो संग भाख्या

राग पहाड़ी ताल भजनी ठेका

मानुष जनम, भजन की बेला, करत नहीं तू काहे बन्दे
भजन-भेद को जाननहारा, तो ही देत बताए बन्दे
भेद-भगती जानत भेदी ही, राम पछाना जिन ने आपुन
अगम-निगम की खबर वह राखे, अनुभव देत कराए बन्दे
नीर प्रवाहित नदिया माहीं, देखूं बहता जल जो अन्तर
बैठ किनारे न्हाय लऊं मैं, प्रभुहि देत लखाए बन्दे
माया रूप जगत को देखूं, मन म्हारा न डोलत कबहूं
नेह लगावो एक हरि से, नेह ही देत कराए बन्दे
तीर्थ शिरोमि प्रभु के भगतो, गिरधर प्रेम दीवानी मीरा
चरण-कमल चित लाए हरिहि, भव से पार कराए बन्दे

राग मिश्र खमाज ताल त्रिताल

मनवा क्यों तू फिरत उदासी
मन ही गंग जमन के तीरा, मन ही तीरथ, मन ही कासी
अपने करमन, अपना लेखा, काहे जग के बीच बंधा है
तीन गुणन का बांट के रस्सा, डाल लई गल अपने फांसी
छोड़ बखेरा जग का प्यारे, दीखत भासित यह तो केवल
सकल गुणन, गुण ही में वरतें, पाए भेद, पाए अविनासी
दाता राम सकल सुख रासी, कर्ता हर्ता वह ही जग का
सतगुरु किरपा जो पा जाए, वही सुखी जो निर-अभिलासी
तीर्थ शिरोमि राम जा प्यारा, सो ही सेवक साहिब प्यारा
सो ही लखे, अलख को सहजे, सो ही सहज, बने उदासी

राग गौड़ सारंग ताल धुमाली

टन टन टन टन बजत निरन्तर, घण्टा यह तेरी काया
ध्यान है नाहीं तेरा कुछ भी, उलझ रहा तू क्यों माया
दशम द्वार धुन रहत बजत है, सुनत रहा न तू काहे
आतम राम सदा परकाशित, उलझा क्यों माया छाया
आतम ज्योति अन्दर जलती, नहीं तनिक अंधियारा है
भ्रम तू पाले काहे बैठा, जग माहीं क्यों भरमाया
केवल संत पुरुष ही जानत, भेद छिपा जो अन्तर में
ताही शरण गहे तू मनवा, हट जाएगा भ्रम माया
तीर्थ शिवोम् प्रभु भगवन्ता, लीला तेरी है न्यारी
मीरा अणंद प्रदान करो जी, टूटे मन जो भरमाया

राग पहाड़ी ताल केहरवा

जग का भ्रम जो हिरदय माहीं, छूट सकत वह कैसे नाहीं
रंग चढ़ा मो पी का ऐसा, उतर सकत वह कैसे नाहीं
सोना मिलत सुहागा जैसे, ऐसे मन तुमरो संग लागा
प्रेम की गांठ पड़ी अब ऐसी, खुलत सकत वह कैसे नाहीं
जैसे पानी कमलनाल में, ऐसे तू भी हृदय समाया
इक दूजे में मिल गए ऐसे, निकल सकत वह कैसे नाहीं
चकवा जैसे मिले चन्द्र से, हमरा मनवा तुमरे पाहिं
छोड़े कैसे चांद पिया को, लौट सकत वह कैसे नाहीं
तीर्थ शिवोम् हे गिरधर लाला, मीरा थारी प्रेम दीवानी
प्रेम अखण्ड असीम अनन्ता, टूट सकत वह कैसे नाहीं

राग मारू विहाग ताल केहरवा

मैं कब की राह निहारूं री, साजन घर आया
मैं आंगन लियो सजाए री, बिरहन पी पाया
मीरा दासी भयी आणंदा, मुख प्रीतम का देख्या
कि चन्द चढ़ा है आज री, प्रीतम घर आया
अन्दर बाहर भया प्रकाशा, तम भागा सारा ही
सुख प्रगट भया है आज री, पी सेज समाया
तन मन इन्द्रिन सभी तरंगित, भाव भरा हिरदय में
मो देयो बधाई आज री, आनन्द मनाया
तीर्थ शिवोम् पिया जी मोरे, करत सुआगत तेरा
हैं बाजे अन्तर साज री, है मन हर्षाया

राग विहाग ताल भजनी ठेका

कोई रोके कितना मुझ को, शाम के धाम चलूंगी
ध्यान लगाय सुनो री सजनी, पाछे नहीं हटूंगी
माया ममता, जग की तृष्णा, चाहे मुझे लुभाए
न मैं मानूं, पी के कारण, नामहि रंग रंगूंगी
मन का निश्चय, दृढ़ है निश्चय, शाम पियाहिं मोरे
दूजा मारग पकडूं नाहीं, राह से नहीं टलूंगी
तन जावे, मन मोरा जावे, सीस भी मोरा जावे
मन लागे हरि सिमरन माहीं, सब की बात सहूंगी
तीर्थ शिवोम् प्रभु भगवन्ता, मीरा चरणी राखो
दर्शन पाऊं नित्य तिहारे, तुमरे द्वार रहूंगी

राग तिलक कामोद

जान गई मैं, जान गई हूं, प्रीत तिहारी जान गई हूं
तुम निर्मोही, प्रीत न कोई, मैं तुम को पहचान गई हूं
जमना तट पर आय् बजाए, मुरली की धुन रहा सुनाए
सभी दिखावा, सभी भुलावा, भेद तिहारा जान गई हूं
मैं पछताई नेह लगाए, काहे मनवा दीना तोहे
मन तुमरे पर असर न कोई, हिरदय तुमरा जान गई हूं
सुख दिखलाया, दुख ही दीना, जलत जात हूं बिरह माहीं
प्रीत की रीत है यह भी कोई, नेह तिहारा जान गई हूं
तीर्थ शिवोम् कन्हैया कृष्णा, मीरा मन हर लीनो काहे
अब तो याद तेरी में डूबी, बात यह हिरदय मान गई हूं

राग कौसी कान्हड़ा ताल कव्वाली ठेका

वेग पधारो, वेग पधारो, कृष्ण कन्हैया वेग पधारो
देर लगाई काहे कृष्णा, वेग पधारो, वेग पधारो
मिलन तेरे को तड़पूं हूं मैं, आहें रहत भरत ही हूं मैं
किरपा करि ने दर्शन दीजो, वेग पधारो, वेग पधारो
शरणीं तेरी आई प्रभु जी, करि किरपा मोहे अपना लो
सुण लो साजन विनय हमारी, वेग पधारो, वेग पधारो
जो मिल जाए एक बार भी, छोड़ूं तनिक नहीं फिर तोहे
विरह संभारो प्रभु जी अपनो, वेग पधारो, वेग पधारो
तीर्थ शिवोम् करत है विनय, मीरा श्री चरणों के माहीं
मन मंदिर में राखूं तोहे, वेग पधारो, वेग पधारो

राग सूरमल्हार ताल भजनी ठेका

सहा न जाए मो सों बिरहा, दूखन नैणां लागे
तो से बिछुड़ पिया दुख पायो, काटत रैणां आगे
काली रात, अंधेरा खाए, सूझत न कछु मोहे
कैसे मिलसी, क्योंकर पासूं, बिना कृपा बैरागे
आहट सुनत तनिक हिरदय में, धड़क कलेजा जाता
आया, अब आया पी मीरा, ऐसा मन में लागे
इक टक पंथ निहारूं तुमरा, देखत नैणां थाके
लाम्बी लाम्बी रात अंधेरी, आगे, आगे, आगे
तीर्थ शिवोम् प्रभु गिरधारी, कबर मिलोगे आय
मीरा राह तकत तोरा ही, अब लौं भाग न जागे

राग श्रीरंजनी ताल भजनी ठेका

पैण्डा लाम्बा, दिन है थोड़ा, देर करत तू काहे
चलो बटाऊ देस पिया के, चलत नहीं तू काहे
जितनी जल्दी होय सकत है, घर पहुंचो तुम अपने
घर ही अपना, घर ही सुख है, सुनत नहीं तू काहे
मानुष तन की कीमत समझो, नहीं निराशा पालो
चिन्ता जग की करत रहा तू, छोड़त नहीं तू काहे
घर पहुंचे मन होय निर्भय, मारग उलझ न जाना
मारग के सुख दुख घनेरो, छूटत नहीं तू काहे
तीर्थ शिवोम् हे चाली मीरा, देस पिया के, घर को
मीरा भान्ति चालत क्यों न, तुरत फुरत तू काहे

राग मालकंस ताल भजनी ठेका

गुरु-चरण हिरदय में धारूं, लागी लगन है मोहे
गुरु सेवा ही मनवा लागे, गुरु ध्यान नित मोहे
चरण कमल बिन भावे न कुछ, चरण-कमल चित्त लागा
जगत वासना सार न कोई, जगत न सोहे मोहे
जगत पसारा सगला छूटा, छूटी तृष्णा माया
ममता शोक शेष न कोई, न जग चिन्ता मोहे
मीरा के प्रभु कृष्ण कन्हाई, गिरधर नागर नन्दा
गुरु शरण ही दीजो मोहे, अवर नहीं कछु मोहे
तीर्थ शिवोम् प्रभु बनवारी, सतगुरुदेव स्वरूपा
मीरा दासी पड़त है पैयां, आस तेरी ही मोहे

राग आभोगी कान्हड़ा ताल केहरवा

कैसे हो तुम भये कठोरा, कैस काठ मन कीना
छिन के माहीं, देखत देखत, मन मोरा हर लीना
मन लीना सो कीना अच्छा, पर न नेह निभाया
यह क्या तुम ने कीया साजन, बिरथा जीवन कीना
न मैं रही काम की जग के, न तुम ही मिल पाए
रही इधर की, नहीं उधर की, दुविधा में कर दीना
मीरा दासी आकुल व्याकुल, मनवा कुण्ठित मोरा
अब क्या कहूं? किसे जा पूछूं? यह छल काहे कीना
तीर्थ शिवोम् भयी मतवारी, मीरा साजन प्यारे
प्रेम मोर स्वीकार करो जी, जो मन तुमहिं दीना

राग आसावरी ताल धुमाली

हरि विराजे हिरदय माहीं, म्हासे बात करत क्यों नाहीं
बन्द किवारी बैठा अन्दर, पर वह खोलत है क्यों नाहीं
मनवा दीनो, हिरदय दीनो, दीना भाव सभै अन्तर का
राम ही देखन चाहूं जग में, पर वह दीखत है क्यों नाहीं
मीरा अर्पन सगला कीना, जनम अनेकों जावत बीतत
कर्म सभी तेरे ही लेखे, मन में धारत है क्यों नाहीं
अर्ज़ गुज़ारूं डरते-डरते, थोड़ा कहा बहुत तुम जानों
दासी तेरी जनम जनम की, अब लौं मानत है क्यों नाहीं
तीर्थ शिवोम् नाथ मीरा के, वेग करत क्यों आवत नाहीं
हौं तो चरण शरण तेरी ही, दर्शन आ देवत क्यों नाहीं

राग कामोद ताल भजनी ठेका

मानुष देह अमोलक पायो, बार-बार वह मिलत है नाहीं
यह अवसर भी बीत न जाए, काहे भजन करत है नाहीं
तू बड़भागी सतगुरु पाया, प्रेम का पंथ गुरु बतलाया
प्रेमहि मारग साचा मारग, प्रेम हरि सों करत है नाहीं
मीरा सतगुरु पूरा पाया, हिरदय माहीं प्रेम जगाया
हिरदय तेरे प्रेम जगे न, काहे नेह करत है नाहीं
हरि गाए आणंद मनाओ, हरि प्रदाता सुख अन्तर का
मगन प्रेम-सुख होए मनवा, गुण गोविन्द जपत है नाहीं
तीर्थ शिवोम् अनादि माया, मीरा तर गई भव के पारा
नहीं तो डूबत भवहिं माहीं, क्यों तू जतन करत है नाहीं

राग नट भैरव ताल भजनी ठेका

अन्तर रूप है दूजा तेरा, बाहर करता पूजा
यह क्या रंग बनाया मनवा, अन्तर बाहर दूजा
जग को तो विश्वास दिलाए, आप तनिक भी नाहीं
फिर मानेगा कैसे कोई, क्यों परभावित दूजा
मीरा अन्तर बाहर एको, एको मन व्योहारा
करनी कथनी अन्तर नाहीं, तो ही मानत दूजा
काम क्रोध मद छोड़ के मनवा, लग जा मीरा पाछे
ताही दूजा भाव मिटेगा, तो ही पावे दूजा
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, दूजा भाव मिटाओ
दूजा पाऊं, दूजा होऊं, जाऊं भूल मैं दूजा

राग शुद्ध कल्याण ताल केहरवा

क्यों नहीं लागत, नाहीं ध्यावत, ईश्वर शुद्ध स्वरूपा
तृष्णा छोड़ जगत व्योहारा, छांड देय तुम भव के कूपा
यह जग तो आटे की चक्की, पिसता जाए, पिसता जाए
कब लौं रहे पिसत तू यूंही, छांड जगत की छांवो धूपा
दूजे भाव लगा तू ऐसा, छूटत नाहीं भाव यह मिथ्या
अन्तर का भ्रम दूजा तीजा, चीन्हत न क्यों निज का रूपा
बाहर डोलत, खोजत फिरता, भटकत भटकत बीता जीवन
खोजत क्यों न अन्तर माहीं, अन्तर ही जो बैठा छूपा
तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुदेवा, तो ही मिलता मारग अन्तर
रंक बना क्यों फिरत रहत है, बनत नहीं क्यों जग का भूपा

राग देस ताल दीपचन्दी

नैनां माहीं श्याम बसो है, आवे नींद न मोहे
पीव ही पीव पुकारूं हरदम, सोवन देत न मोहे
भयी बावरी दुनिया सारी, जग सुख अच्छो लागे
श्याम नहीं हि भावे मन को, छवि ताही न सोहे
हरि बसत हिरदय जा अन्दर, नींद न कू के आवे
मैं फिर कैसे सोऊं जाय, पल भर चैन न मोहे
चौमासे की जाय बावड़ी काहे जल तू पीवे
नाला अमृत झरत निरन्तर, भय संकोच न तोहे
तीर्थ शिवोम श्याम हे साजन, मीरा दर्द दीवानी
दासी अपणी मो कर लीजो, दूर करो न मोहे

राग खमाज ताल केहरवा

प्रेम का दीप जलाए अन्दर, छोड़ गए तुम काहे
याद तेरी ही जलत रहौं नित, दिया विरह मो काहे
जब मैं चलती राह डगर पर, ऐसा लागे मोहे
तुम ही चलत साथ हो मेरे, दीखत फिर न काहे
मोरे सजना, मोरे प्रीतम, टीस उठे नित मन में
अंसुअन नयनां, दर्द हृदय में, सुनत विनय न काहे
अंध्यारा हो या उजियाला, दिखते रहत निरन्तर
छाया तुमरी, या मन भ्रम है, जान सकूं न काहे
तीर्थ शिवोम प्रभु जी सैयां, बिरहा सहा न जाए
गुण गाऊं, नित ध्यान करूं मैं, आवत रहत न काहे

संत कबीर साहिब जी

राग जौनपुरी ताल त्रिताल

आयो वेल भलो है तेरा
करी कृपा मानुष तन दीना, कर ले अपना सकल निबेरा
क्यों तू लागा जग प्रपंचहिं, भजनहिं नाहीं लागे काटे
सत संगत, सतगुरु की सेवा, छूटे झगड़ा सब ही तेरा
जब तू युवा, देह में ताकत, तब लौं राम भजन तू कर ले
शिथिल गात जब होंगे तेरे, होय सकत न कुछ भी तेरा
जग संबंधी घर परिवारा, स्वारथ ही अपना सब साधें
तुझ को नोचें, लूट मचावें, करते सब ही मेरा मेरा
तीर्थ शिवोम् चेत रे पगले, अवसर अनुपम पास है तेरे
निकली यह वेला जो बिरथा, जाने फिर कब क्या हो तेरा

राग गौड़ सारंग ताल भजनी ठेका

लेखा कर्म न टारा जाए
चाहे जतन करो कितना भी, फिर भी भोगन में ही आए
कर्म-काण्ड भी कर कर थाका, तीरथ मन्नत रहा मनाए
जाप ताप शाबर सब कीने, जो होना वह न टल पाए
यदि टले भी दिनन चार को, और प्रबल ता ही हुई जाए
—— फिर उधार हो फल देवन को, अधिक कष्ट ही मानव पाए
जो भी आपन कर्म किए हैं, मन-प्रसन्न फल ता का भोगो
—— लेख कर्म का जाए मिटे तब, तब ही मन निर्मलता पाए
तीर्थ शिवोम् यही है मारग, भगत जनों का; संत जनों का
फल से भगत नहीं घबराए, जो होना, सो हो ही जाए

राग जोगकंस ताल रूपक

सिर कटाए, घर जलाए, वह हमारे साथ आए
हम लुटा सब कुछ हैं बैठे, जो लुटाए साथ आए
प्रेम का घर, घर है ऐसा, कुछ वहां न साथ जाए
इक अकेला, बस अकेला, आप अपने साथ जाए
जिस का ऐसा मन बना हो, वह करे आशा प्रभु की
जो सके न छोड़ जग को, न हमारे साथ आए
लुट गए अपने प्रभु पर, सब लुटा बैठे शिवोम्
जो सके न लुट लुटाए, क्यों हमारे साथ आए

राग तिलंग ताल केहरवा

तनिक सा सिमरन करे तू
सुख अमोलक लाभ होता, दूर सारा दुख करे तू
सिमर ले तू, सिमर ले तू, चाहे भव से छूटना तू
नाम ही नदिया लंघावे, दूर सब बंधन करे तू
जग में तो स्वारथ ही छाया, हर कोई लूटे तुझे है
जब चलेगा छोड़ जग को, त्याग सब कुछ ही करे तू
देखने को जग यह प्यारा, मन में छाया लोभ तेरे
लोभ पूरा न हुआ जो, फिकर चिन्ता क्यों करे तू
छोड़ दे सब को ही तू तो, हाथ से फिसले शिवोम्
भजन कर ले, नाम जप ले, जगत न चिन्ता करे तू

राग गारा ताल त्रिताल

माया मोह न त्यागा जाय
लड़का छोड़ कियो बहु चेला, बदत बदत बदला ही जाय
माया नाईं बेल बाग की, फैलत तो फैलत ही जाय
घेर लेत वृक्षन झाड़न सब, काटो काटो, कट ना पाय
एक तजो दूजा बढ़ जाय, काम क्रोध मद लोभ ईरषा
छूटन कठिन बड़ा माया का, जतन करत पर फल न पाय
राम कृपा ही एक सहारा, माया की दीवार हटाय
ताही कृपा बिना न मनवा, पार सकत माया का पाय
तीर्थ शिवोम् बने बैरागी, सुरती राम चरण ही जाय
भेद अनूठा, प्रीत अनोखी, कोई जन बिरला पा जाय

राग पहाड़ी ताल दादरा

एक कहूं मैं, एक सुने तू, दूजा जाने कुछ न कोई
मन मानत तू एक न मोरी, बात करूं अनुचित ना कोई
कैसा नटखट, ढीठ है कैसा, बात करत अपने ही मन की
डांटो, समझाओ, फटकारो, असर होत ता पर ना कोई
करत न इन्द्रिन निग्रह क्यों तू, पाछे छाया लागा क्यों तू
माया छाया कारण दुख है, सुख तो मिला किसे ना कोई
हिम जल दोनों तत्त्व एक हैं, एक तरल है एक है सघना
जीव ब्रह्म देखन में न्यारे, तत्त्व से दोनों अलग ना कोई
तीर्थ शिवोम् कहूं समझाए, पर तू माने बात जो मेरी
तब अनुभव भी तुझे होय कुछ, अनुभव बिना जगत ना कोई

राग सिन्ध भैरवी ताल भजनी ठेका

तन मैला, मन मैला होया, आए उभर अनन्त विकारा
काम क्रोध मद लोभ अनेकों, मनहिं भया सकल अंधियारा
चंचल मनवा रहे भटकता, जग भोगों में, जग बिषयों में
रोक सके न कोई उस को, अंधा धावत मारा मारा
योगी मुनि ऋषि मिल बैठे, निर्मल कैसे मनवा होए
रहा नचावत जग सारे को, करते मिल कर सभी विचारा
भक्ति, कृपा-प्रभु बिन मनवा, निर्मल होवे कबहुं नाहीं
एक उपाए, सूझा ये ही, ये ही मन मारन उपचारा
तीर्थ शिवोम् यह मनवा ऐसा, निडर दलेर बना है जग में
रहा घुमाए, रहा भगाए, रहा सताए सब संसारा

राग अड़ाना ताल धुमाली

मन समुद्र की लहर समाना, ऊठत बिनसत रहत ही हरदम
मन संकल्प-विकल्प भी चालत, रहत सदा ही उभरत हरदम
रोकन मन का कठिन बड़ा है, उसे दबाओ और उछलता
मन का खेल निराला देखा, होवत रहत घटित ही हरदम
एक ठौर न ठहरे कबहूं, कभी इधर को, कभी उधर को
बदलत रहता ही विषयन को, रहत बना चंचल ही हरदम
कोई मारग रोकन मन को, जीव के पास तो है ही नाहीं
प्रभु कृपा जो करे तो होवे, प्रभु कृपा से ठहरत हरदम
तीर्थ शिवोम् प्रभु भगवन्ता, तेरी किरपा, याचक हूं मैं
मेरे रोके रुकत नहीं मन, जो तू रोके, रुकत वह हरदम

राग मारु बिहाग ताल अध्धा

मोह में लागा काहे मनवा, हरि भजन को मानत नाहीं
मोह बने जग बंधन कारण, जगत कभी भी छोड़त नाहीं
दर्शन करन दिए प्रभु नयनां, लागा देखन जग सुन्दरता
सुनने ज्ञान श्रवण को दीना, शब्द विषय तू छोड़त नाहीं
मुख तो मिला प्रभु गुण गाने, तू तो लागा जग की बक झक
हाथ सुकर्म कारण दीने, दूजे को दुख देवन नाहीं
क्या से क्या मति हुई है तेरी, काहे दिया तू लागा काहे
अवसर राम भजन को दीना, जगत विषय को भोगन नाहीं
तीर्थ शिवोम् हे मूरख मनवा, अजहूं सोच समझ मन माहीं
जीवन अलभ अमोलक मिलया, निकल गया फिर आवत नाहीं

राग असावरी ताल दादरा

नाम हरि का जप ले बंदे, नाम हरि का जप ले
नाम ही काज सवारे तेरे, नाम हरि का जप ले
जगत दिखावा, एक भुलावा, उलझा, फसा, गया वो
आपुन आप संभाले राखो, नाम हरि का जप ले
न तेरा, न तू काहू का, बिरथा मेरा तेरा
मेरे तेरे उलझे नाहीं, नाम हरि का जप ले
जीवन पाया, अवसर पाया, लाभ तू ले ले इस का
अवसर बीता, पछताएगा, नाम हरि का जप ले
तीर्थ शिवोम् यह जाए बिनसे, यह तन तेरा सुन्दर
समय गया अब और नहीं तू, नाम हरि का जप ले

राग चन्द्रकंस ताल त्रिताल

गर्व करत काया तू काहे
चंदन सा तन माटी इक दिन, फूला फूला फिरे तू काहे
क्या ले कर तू आया जग में, क्या ले कर तू जाएगा
मेरा तेरा जगत दिखावा, करत रहा बिरथा तू काहे
काया रोगी, काया भोगी, क्षुधा पिपासा काया को सब
रोम रोम काया का चंचल, नाम जपत नाहीं तू काहे
नाम-हरि-जप पार उतारे, जप ले, जप ले, जप ले तू
नाम एक आधार जगत का, छाया पकड़ रख्या तू काहे
तीर्थ शिवोम् करेगा जैसा, वैसा ही फल पाएगा तू
राम जपे, परमारथ साधे, साधे राम नहीं तू काहे

राग अहीर भैरव ताल त्रिताल

धारा सतगुर लेत नहाए क्यों न
धोए काया, निर्मल होए, नाम गुरु तू क्यों न
मेरा-तेरा लागा कहने, राम मिलावा कैसे होवे
छोड़त नाहीं मेरा तेरा, पड़त चरण तू क्यों न
मैं समझाऊं अनुभव अपना, तू है करत किताबी बातां
समझे बात मेरी तू कैसे, कान धरत तू क्यों न
बार बार चेताऊं तोहे, तू अनचेत बना है बैठा
कैसे निपटारा हो तेरा, करत चेत तू क्यों न
तीर्थ शिवोम् मान ले कहना, राम-भजन मन ला अपना तू
राम भजन सुख सभी समाया, करत भजन तू क्यों न

राग पहाड़ी ताल चुमाली

मानस देहा, भौतिक देहा, दीना प्रभु ने तोहे
इड़ा पिंगला खम्भे गाड़े, महल बनाया तोहे
सुखमन जल की धारा भीतर, बनी सकल हरियाली
लहर बहर सब चहकन लागा, दिया सभी सुख तोहे
महल बनाए दस माह लागे, रंगा रंग सब कीना
सजे सवारे रंग महल में, लाए बिठाया तोहे
सिरजनहारा भूल गया तू, राग-रंग मन लाया
खान-पीन खेडन में लागा, होश रहा न तोहे
तीर्थ शिवोम् प्रभु ने दीना, महल यह सुन्दर सुथरा
पर तू सब गंदा ही कीना, लाज न आवत तोहे

राग मिश्र पहाड़ी ताल भजनी ठेका

गुरु श्रवण कर, समझ लेय तू, मानुष जनम न बारम्बारा
तू अपमान करे या तन का, लागा धन जोड़न परिवारा
हाड़ मांस को कर एकत्रित, प्राण दिए, अन्दर बैठाए
जीवन दान दिया प्रभु तोहे, लागा देह, फसा संसारा
साबुन रगड़े, मल मल न्हाए, ज्ञान का साबुन नाहीं
कैसे छूटे मैल हृदय की, मैल पुरानी, आर न पारा
जीवन बीता देह इसी में, भला-बुरा न सोचा कुछ भी
अब तो सोच समझ मन मूरख, क्योंकर तेरा हो निस्तारा
तीर्थ शिवोम् देह यह मन्दिर, आतम राम विराजे अन्दर
सांभ संभाल करे जो इस की, भव-सागर, तू जाए पारा

राग मिश्र शिवरंजनी ताल केहरवा

मुरदा चाले, मुरदा बोले, मुरदा ही सब काम करत है
भरा जगत मुरदों से सारा, जीवित कोई नहीं बसत है
रहे मौत के साये में ही, जीवन का भ्रम जब तक पालें
मुरदा ही मुरदा हुई जावे, मुरदा मुरदों जात मिलत है
मुरदा मुरदे से है लड़ता, मुरदा मुरदे प्रेम करत है
मुरदा गाए, मुरदा नाचे, मुरदा मुरदे मेल करत है
योगी ध्यानी भक्त न छूटा, मुरदे ही सब करें साधना
मन का भ्रम जब जात हटत है, तो मुरदा निज रूप धरत है
तीर्थ शिवोम् सुनो हे मुरदो, जीवन यह जीवन है नाहीं
प्रभु बनाए सब ही पुतले, जैसा चाहे, नाच नचत है

राग हमीर ताल भजनी ठेका

सुख के सागर माहीं रहता, फिर भी रहत दुखी क्यों मनवा
आनंद समाय रहा हर पासे, रोगी बना फिरत क्यों मनवा
भटकत काहे सुख ढूंडन को, वह तो अन्दर ही है तेरे
आतम-राम सभी सुख व्यापे अन्तर देखत न क्यों मनवा
भगती एक, सभी सुख या में, क्यों तू राम भजत है नाहीं
भगत होय, दुख चरण प्रभु में, मारत सोहत न क्यों मनवा
हर घट राम रह्या आलोकित, घट तेरे भी होत प्रकाशा
क्यों न जात शरण में ताही, पकड़त चरण नहीं क्यों मनवा
तीर्थ शिवोम् प्रभु अविनाशी, अन्दर बाहर रह्या विराजे
जो ता पावे, सो सुख पावे, निर्मल होत नहीं क्यों मनवा

राग अहीर भैरव ताल धुमाली

जग में सदा न रह पाएगा
जो भी जग में प्रकट हुआ है, इक दिन छोड़ सभी जाएगा
पानी लहर समान जगत है, उभरे जाय विलीन होय वह
लहर सदा न उभरी रहती, तू भी छोड़ जगत जाएगा
यह जग दीखे, यह जग विनसे, जगत बना है आवन-जावन
आया गया, गया फिर आया, तू भी इक दिन चल जाएगा
सद्गुरु एक ठिकाना जग में, सदा रहे, जग विनसे उभरे
सद्गुरु शरण गहे तू प्राणी, गुरुकृपा से तर जाएगा
तीर्थ शिवोम् जो आया जग में, वह तो इक दिन जाएगा ही
राम भजन तू लग जा मनवा, भव के पार निकल जाएगा

राग दुर्गा ताल धुमाली

जगत प्रकट यह सपन समाना, इक पल उभरे, दूजे जाना
जब तक दीखत रहे सामने, कठिन बड़ा इस से बच पाना
बहत मोह की धार निरन्तर, जन कोई भी छूट न पाया
बहे जात सब, बहे जात सब, साधु या संसार का बाना
पात डाल से जैसे टूटे, न लग सके जाय फिर से
तैसे जीवन छन भर का है, गया यहां से, फिर नहीं आना
तन काला गोरा जैसा भी, प्रभु बनाया, प्रभु ने दीना
काहे तू अभिमान करत है, जैसा मिलया, वैसा पाना
तीर्थ शिवोम् लगाओ नेहा, प्रभु नाम से, प्रभु चरण से
प्रेम ही काटे, फंद जगत का, जा पाया से भेद यह जाना

राग भैरवी ताल केहरवा

सन्तन का जो संग करेगा, तर जाएगा, तर जाएगा
जग निपटारा हो जाएगा, तर जाएगा, तर जाएगा
भेद हंस का हंस ही जाने, कागा तो बस कायं कायं
संग हंस मिल हंस बनेगा, तर जाएगा, तर जाएगा
संतन संग कमाई पूरन, जग से नाता जाए टूटे
हिरदय माहीं राम है दीखत, तर जाए गा, तर जाए गा
भक्तन उतरे सतसंगत से, भक्तन कर ली नेक कमाई
तू भी पल्ला संतन पकड़े, तर जाए गा, तर जाए गा
तीर्थ शिवोम् राम के प्रेमी, सतसंगत में लाए मन को
सत संगत पाए हरि दर्शन, तर जाए गा, तर जाए गा

राग दुर्गा ताल भजनी ठेका

भजन बिना कोऊ सुख नाहीं
जात है बीतत जीवन सारा, भजन बिना जग सार है नाहीं
परलय होय जगत न दीखत, उपजत सगला दीखन लागे
कभी दिखे, विनसे, जग यों ही, थिरता या जग मे कछु नाहीं
भजन करे तू राम हरि का, जिस ने सारा जगत सवारा
पिण्ड प्राण सगले उपजाए, तारनहार है दूजा नाहीं
काहे लागा जग के पाछे, काहे बिरथा जनम गवावे
काहे दुख में समय बितावे, सुख जग देवनहार है नाहीं
तीर्थ शिवोम् सम्भल जा मूरख, रह्या बिगारत जीवन अपना
राम भजन कर, राम सिमर ले, रोकनहार कोई जग नाहीं

राग गौड़ मल्हार ताल भजनी ठेका

भजन करन को देह धरा तू
जग में आय जगत में लागा, न कुछ सिमरन राम करा तू
मति कहां की लई लपेटे, कुमति मति भयी जो तेरी
छोड़ राम, जग को तू धाया, कूप अंध में जाय परा तू
बात न साची लागे तोहे, झूठ सुनत मनवा ललचाय
राम नाम क्यों भूल गया रे, भोगन माही रहे जरा तू
जनम यह जुआ खेल है नाहीं, मिला तुझे यह भजन करन को
काहे खेल जगत में लागा, सूझत कुछ न, भूल परा तू
तीर्थ शिवोम् कहूं क्या तोहे, समझे तो यह बात बड़ी है
विषयन जीवन बिरथा जाय, राम भजे तो पार परे तू

राग रागेश्वरी ताल केहरवा

जग झगड़े तो देय लड़न तू, तू तो राम भजन कर
क्या मतलब जग के लड़ने से, तू तो राम भजन कर
मारन मरन ही काम जगत का, करने दे जो काम है वा का
तू तो मस्त रहे अपने में, तू तो राम भजन कर
पास तेरे न समय कोई है, लड़ने-मरने या खपने का
समय लगा तू राम भजन ही, तू तो राम भजन कर
जिन ने प्रेम-प्रभु अपनाया, राम भजन से ही तिन पाया
समझ भेद यह अपने मन में, तू तो राम भजन कर
तीर्थ शिवोम् राम ही साचा, साचा ता का प्रेम भजन है
जग मिथ्या में सार न कोई, तू तो राम भजन कर

राग मिश्र काफी ताल केहरवा

दो दिन केवल जग में रहना, नेक कमाई कर ले बंदे
काहे रहता जगत फसा ही, मन से रहत सदा ही गंदे
आया जग में घूमत घामत, मन संयुक्त भया तन साथे
छूटे तन, मन कहां रहे गा, काहे पड़त बीच तू फंदे
एक गुरु ही अन्त सहारा, बाकी सब ही स्वारथ मारा
भटकन छोड़ गुरु शरणाई, मन हो जावे तेरा चंगे
गुरु एक ही साचा जग में, नाम-गुरु तू भज ले मूरख
दो दिन बीते पछताएगा, रहा जो मन, गंदे के गंदे
तीर्थ शिवोम् जगत में रहना, प्रेम से, तन से, मन से सेवा
यही मारग परमारथ का है, जग में सभी प्रभु के बंदे

राग बैरागी ताल केहरवा

जब छोड़ चले दुनिया को हम, तू रहा लपेटे चादर है
अब चादर, चाहे न चादर, अब काहे का यह आदर है
छूटा देह निकाला घर से, छूटा सब ही घर परिवारा
दोनों नयना होए उलटे, घर में छाया पातक है
चाहे रहो सजाए अर्थी, फैंको चाहे गाड़ को नदिया
चाहे जारो या दफना दो, फर्क न कोई लागत है
चाले तो यह तन संग नहीं, मन तृष्णा ही संग चाले
छूटत न यह मरने पर भी, बनी हुई यह आफत है
शिव ओम् तू कर ले सब पूरा, जो भी मन तेरे में आए
हम छोड़ के चाले सब कुछ ही, दुनिया तो यह लानत है

राग आनन्द भैरवी ताल खेमटा

जिस घर में तू घर है कीना, घर यह तेरा घर है नाहीं
घर में लागा मेरा तेरा, मेरा तेरा कुछ भी नाहीं
तोबा हाये महल बनाया, कांकर पाथर जोड़े जोड़े
लोग कहें यह घर है मेरा, न तेरा है, मेरा नाहीं
कोई कितना भी हो साथी, चाले कोई संग है नाहीं
हाथी घोड़ा महल खज़ाना, पड़ा यहीं पर, कुछ भी नाहीं
जग में सब ही स्वारथ साथी, मुंह से बोलत मेरा मेरा
अन्त समय चलने का आए, साथ कोऊ भी चलत है नाहीं
तीर्थ शिवोम् मान मन मूरख, लाभ इसी में तेरा है रे
इक दिन बनहिं वासा होवे, घर परिवार साथ कुछ नाहीं

राग जैत कल्याण ताल दीपचन्दी

पाहुना यौवन चार दिनन का
गर्व करे जो इस का मिथ्या, होत पशु भोगन का
ढलक जाए जब देह शिथिल हो, यौवन दिखत कहीं भी नाहीं
अहंकार मदमस्त फिरे जन, मानत नहीं किसी का
सिर ऊंचा, ठोकत है छाती, ललकारे जग सारा ही को
मारे काटे धूम मचावे, याद न राम चरन का
अन्दर भरया सब ही गन्दा, बाहर चमक शरीरा करया
बीता यौवन, आए बुढ़ापा, रहा न काम करन का
तीर्थ शिवोम् युवाजन समझो, युवा नाहीं नित है रहना
राम भजन ही थिरता लाए, बाकी वृथा करन का

राग तोड़ी ताल केहरवा

काचा कुम्भ शरीर है, आया या संसार
नदी पड़े गल जात है, करत नहीं वीचार
लागे ठनका टुट गया, न कुछ आया हाथ
गर्व करे नासमझ मन, रहा उलझ विस्तार
पाई पाई जोड़ के, भवना लियो बनाय
साथ न चाले काम कुछ, रहा संभार संभार
राम नाम सुमिरन नहीं, नाहीं तत्त्व विचार
यहां वहां दुख पाएगा, होगा बहुत खवार
माया नगरी फस गया, भरमाया शिव ओम्
बीच पड़ा मझधार में, सकत जात न पार

राग बागेश्वरी ताल धुमाली

कहां ढूंढता, कहां खोजता, मैं तो तेरे अन्दर बैठा
आगे पीछे रहत सदा हीं, मैं नाहीं तीरथ में बैठा
व्रत तीरथ उपवास करे तू, कभी रास्ता मन्दिर पूछे
जप तप काहे कष्ट उठावे, मैं तो हरदम अन्दर बैठा
क्रिया कर्म संन्यास सभी कुछ, मुझ को नाहीं छु हैं सकते
पिण्ड प्राण आकाश सभी से, न्यारा भी मैं, अन्दर बैठा
शोध प्रेम से तुरत मिलूं मैं, देर न पल भर भी करता मैं
देखे जीव जभी अन्तर में, देखत वह मैं, अन्दर बैठा
तीर्थ शिवोम् जो बंदे मेरे, करत प्रेम विश्वास है मेरा
अन्दर बाहर सभी जगह में, मुझ को देखें, अन्दर बैठा

राग भैरव कल्याण ताल झुमाली

गर्भवास में लरका उलटा, भूल गया सब आ के बाहर
लागा काज जगत के करने, भूल गया जगदीष हरि हर
अंधकार घुप सूझत कुछ न, अग्न भयंकर अति ही भारी
लरका रहा मास नौ ऐसे, याद न कुछ भी आया बाहर
तब तो ऐसे सोचत मन में, कब छुटकारा होगा मेरा
कैसे टूटे कैद भयानक, याद करूं प्रभु, आ के बाहर
बाहर आ बिसरे दुख सारे, खोया भोगन विषयन में तू
भूल गया जो सोचा मन में, सिमरन नाहीं, आ के बाहर
तीर्थ शिवोम् है मूरख मनवा, दुर्लभ जनम प्रभु ने दीना
सिमरन नाम हरि न लाया, हुआ तुझे क्या, आ के बाहर

राग दरबारी ताल झुमाली

मानुष देह लाख का भवना, लगे चिंगारी सब जल जावे
ज्ञान-ध्यान का मिलया हीरा, व्यर्थ कहीं यह न चल जावे
चार दिवस का खेल यह सारा, आए मौत बिखर सब जावे
क्यों समझत तू नहीं दीवाने, आए काल, चला तब जावे
छिन-छिन पल-पल बदले देहा, हरदम यह चंचल है बनया
इस का गर्व करे तू काहे, आज दिखे, कल यह चल जावे
बात कही जो माने मेरी, रैन दिवस तू राम भजन कर
राम भजन बिन जीवन बिरथा, पुष्प खिलें, सांझे मुरझावे
तीर्थ शिवोम् सोच मन पगले, जा कारण आया सो कर ले
सोचत-सोचत निकल न जाए, गया समय फिर लौट न पावे

राग गुणकली ताल भजनी ठेका

गुरु का भेद, गुरु से प्रीति, ता का पाना कठिन बहुत है
प्रीत नहीं तो काम बने न, गुरु समर्पण, कठिन बहुत है
सब जग गुरु गुरु मुंह बोले, शरण गुरु न समझे कोई
गुरु की शरण, गुरु की सेवा, प्रीत निभाना, कठिन बहुत है
गुरु करन को निकले घर से, मस्तक देवे गुरु नवाई
पर मन अपने पास ही राखे, मन समझाना कठिन बहुत है
सेवा-गुरु करे जो मन से, सेवा नहीं किसे दिखलाए
सेवा होत बिना हंकारा, करना सेवा, कठिन बहुत है
तीर्थ शिवोम् भक्त जो साचा, न हंकार, रहे रत सेवा
ज्ञान-गुरु ता अन्तर प्रगटे, ज्ञान-गुरु का, कठिन बहुत है

राग हंसध्वनि ताल त्रिताल

राम भेद कोई नहीं जाने,
छिपा राम माया के माहीं, कोई ता को नहीं पछाने
राम बसे मन मन्दिर माहीं, निर्मल देह करन सब लागे
भेद खुले न राम का कबहूं, जतन करत सब ही अनजाने
दाग़ न छूटे जब लौं मन का, प्रकट राम अन्तर में कैसे
अन्दर ढेरों मैल जमा है, मैल दिखे, पर राम न जाने
राम विराजे हिरदय हरदम, राम मिलन का जतन न कोई
जतन सभी मन निर्मलता के, निर्मल मनवा राम को जाने
तीर्थ शिवोम् करो मन निर्मल, दर्श जो चाहो राम का पाना
मन मलीन तो राम दिखे न, वृथा सभी जो राम न जाने

राग धनाश्री   ताल भजनी ठेका

कब तू भजेगा हरि नाम
आज काल में जीवन बीता, पूरा हुआ न तेरा काम
जीवन छोटा, काम बड़ा है, यही तू सोचत रहता
अवसर जब अनुकूल मेरा हो, तो ही मैं जप लूंगा राम
गया बालपन, गई जवानी, अब तो वृद्ध भया है
अब तो देहा कांपन लागा, अब क्या भज लेगा तू राम
अब तो अवसर जैसा जो भी, भजन राम में लग ही जा तू
मृत्यु द्वारे आन खड़ी है, अब तो भज ले तू श्री राम
तीर्थ शिवोम् हे मूरख मनवा, जात है बीत उमरिया तेरी
राम सिमर अब, राम सिमर अब, सिमरत क्यों नाहीं तू राम

राग काफी ताल केहरवा

होत नहीं कुछ तन योगे से, जब लौं मन का योग न होवे
तन तो केवल भौतिक काया, योग तो मन का, मन से होवे
लहरें उठतीं मन के माहीं, मन के साथ देह भी चंचल
जब मन थिरता, देह भी थिर हो, चंचलता तब कुछ न होवे
योग सिद्ध करने के हेतु, शुद्ध वासना होत सहायक
भाव शुद्ध और कर्म शुद्ध बिन, योग सिद्ध कबहूं न होवे
जतन करो तो होत नहीं यह, गुरु शक्ति अन्तर्मुख होवे
स्वतः सिद्ध होवे तब साधन, गुरु शक्ति ही योगी होवे
तीर्थ शिवोम् सुनो हे साधो, योग जतन का नाम नहीं है
योग घटित हो, साधक देखे, योग गति ऊपर को होवे

राग देसी ताल केहरवा

सत- संगत, हरि-नाम गान-गुण, कलियुग नाव समाना
जो जन चढ़े सो उतरे पारा, भव में नहीं भुलाना
सिमर सिमर तर गए अनेकों, गाय गाय उद्धारा
मन निर्मल हो, कर्म शुद्ध हो, नाम ही एक कमाना
नाम कमाई जा जन कीती, ता ने सकल कमाया
यही कमाई साथ है जाए, बाकी यहीं रहाना
प्रेम-भाव, सतसंगत कर ले, प्रेम हरि गुण गा ले
प्रेम से ही साधु की सेवा, प्रेम ही पार लंघाना
तीर्थ शिवोम् प्रेम मन राखो, राग-द्वेष नहीं उलझो
प्रेम का मारग जात है सीधा, बाकी सकल बहाना

राग धनाश्री ताल दीपचन्दी

कलियुग जीव काम में लागा
छोड़ लाज मर्यादा सब ही, सुख इन्द्रिन ही लागा
ता व्यवहार काम-वश होवे, कपट दिखावा सब ही
राम नाम न जानत कोई, धावत जग ही लागा
संत जनों सब रहे पुकारत, समझावत बतलावत
जग में पर मानत न कोई, संत चरण नहीं लागा
जो बीतत है कामहिं जीवन, काल चक्र ही घूमत
निकलन का मारग न कोई, काम के जो वश लागा
तीर्थ शिवोम् समझ तू बंदे, जो छूटन भव चाहे
छोड़ देह आसक्ति मनवा, राम-चरण नित लागा

राग सिंध भैरवी ताल रूपक

मैं बुरा हूं, मैं बुरा हूं, मैं बुरा, सब से बुरा
जग में कोई दूसरा न, अधिक मुझ से जो बुरा
पाप की गठड़ी हूं बांधे, पाप ही मन में भरा
पाप की मूरत बना मैं. कौन जो मुझ से बुरा
देखता जग में बुराई, मन बुराई मैं लिए
मैं बुरा खुद ही बना पर, जानता न मैं बुरा
हे प्रभु! मन में न राखो, जो बुराई हूं लिए
तुम दयालु हीन हूं मैं. तुम ने देखा हूं बुरा
क्या करूं मन जो बुरा, जग में बना मेरा शिवोम्
दूर हो कैसे बुराई, मन बुरा, तन भी बुरा

राग मियां की सारंग ताल भजनी ठेका

कलियुग कठिन बहुत है भाई
साधुन आदर करत न कोई, मनमुख सब हुई जाई
कामी क्रोधी लोभी जन जो, वह सत्कार हैं पाएं
साधुन घूमत डगर डगर पर, बात न पूछत भाई
हरि-नाम-सिमरन मन साधन, जानत यह न कोई
माया ममता सब ही लागे, लाज बेच सब खाई
दम्भ ही पूजित हो कलियुग में, दम्भ का नारा न्यारा
दम्भ ही शोभे, आदर पावे, दम्भ बिना न काई
तीर्थ शिवोम् यह माया कलियुग, अपरम्पार अनन्ता
न कोई जानत, न कोई बूझत, सकल रह्या लिपटाई

सूर दास जी

राग- अड़ाना
ताल- केहरवा

कब लौं नाचूं मैं गोपाल
नाच-नाच पाओं भी थाके, मन भी हुआ मलाल
मन विकार हैं रहे नचावत, होश कछु भी नाहीं
मनवा तनवा साथ न देवे, बिगड़ रही है चाल
रहो नचावत कब लौं मोहे, कब लौं ताल बजे यह
कब लौं रहो देखते ऐसे, यह ही तोर कमाल
जग को रहा नचाए काहे, काहे जग भरमाए
काहे यह माया फैलाई, नटखट हे नन्दलाल
सूर पड़त है तेरी चरणीं, अब तो मोहे छोड़ो
तीर्थ शिवोम बख्श दे मोहे, अर्ज़ करूं गोपाल

राग मारू विहाग ताल धुमाली

पतित है मो सों बड़ो न कोए
हौं सरताज सकल पतितन को, बड़ो न कोए होए
हैं सब पतितन, नाम के पतितन, किरपा तुमरी चाहें
मेरी वा से होड़ न होए, नहीं बराबर कोए
कौन सार-थक नाम पतित है, या ही मोर बड़ाई
तुम तो अपनी विरद संभारो, पूछनहार न कोए
सूर यही है आशा मन में, तारो आय पतित को
यही शिवोम विनय है तो सों, और न कहना तोए

राग धनाश्री ताल दीपचन्दी

भगतों की किरपा कर भगवान
जग में कुछ भी मिल भी जाए, होवत नहीं रुझान
चाहत गिरन गरत में जो जन, राख सकत न देव भी आए
घूमत रहत प्रलोभन जग के, रहत बना अंजान
जनम लिया जा दिन से जग में, यही गति है मन की मेरे
जानत विषय समाना विष के, तो को सगला मान
बार-बार जमदूतन आए, मुख दिखलाया अति भयानक
बार-बार मो नरकहिं पटका, जगत फसा ही जान
सूर न छोड़ूं आशा तुमरा, एक बचावनहारे तुम ही
तीर्थ शिवोम् पड़त है पैयां, तुम्हीं एक बलवान

राग सावेरी ताल केहरवा

अवगुण दोषन पापन मेरे, मन में नाहीं लाओ प्रभु जी
तुम हो समदर्शी अघनाशक, दीन को आए बचाओ प्रभु जी
पारस नाईं हिरदय राखो, लोहा देत बनाए कंचन
पूजा में या हो लोहार के, भेद नहीं मन लाओ प्रभु जी
दोष गुणन सब तुम ही कीने, तुम को सब ही एक समाना
हौं पापी पर सेवक तेरा, मोहे नहीं रुलाओ प्रभु जी
बना भिखारी दर का तेरे, दाता जगत-प्रदाता तुम हो
मो पर किरपा भी हो तेरी, किरपा मो बरसाओ प्रभु जी
सूर डूबती जात है नैया, अपनी बिरद संभारो जागो
तीर्थ शिवोम् शरण हूं तेरी, अब की पार कराओ प्रभु जी

राग आसावरी ताल भजनी ठेका

हौं निर्बल को बल है तो सों
संतन बिगड़े काज सवारे, एक आशा है तो सों
जब लौं भगत करे हंकारा, तब लौं काज सरे न
निर्बल हो जब तुम्हें पुकारत, मिलत कृपा है तो सों
अपबल, तपबल काम न आए, बल भौतिक भी नाहीं
दाम का बल भी चाले नाहीं, ताकत एक है तो सों
जो जन तत्त्व पछाने तुमरा, करत नहीं हंकारा
शरणी होय चरण में लागे, सरत काम है तो सों
सूर हरि ही बल है एको, जो समझे सो पाए
तीर्थ शिवोम् शरण हूं तेरी, पावत बल है तो सों

राग देस ताल रूपक

कुटिल खल कामी प्रभु हौं, कोई भो सम है नहीं
जा प्रभु ने तन दियो मो, याद ताही है नहीं
भागता फिरता विषय को, पेट भरता ही नहीं
नाईं शूकर मन मेरा है, ठहरता पल है नहीं
साधु की संगत करे न, बन विमुख हरि सों रहा
जग की ही करता गुलामी, मानता मन है नहीं
मुझ सा पापी कौन होगा, मैं बड़ा, सब से बड़ा
है पतितन में नाम ऊंचा, भजन करता है नहीं
सूर को न और कोई, और इक स्वामी मेरा
आशा है शिव ओम् तुम से, आशा दूजी है नहीं

राग दुर्गा ताल धुमाली

अच्छो भलो वही जग माहीं, हरि का नाम नित्य ही गावे
हर्षित सदा, सबन से मीठा, जा के मन इक राम ही भावे
शोक मोह से रहे निआरा, राग-द्वेष न मन कोऊ से
जप आप व्रत तीरथ साधे, मन में भाव हरि ही लावे
ठौर एक ही चरनन माहीं, वासा वहीं, निवासा ताही
चरन-कमल मन एक सहारा, गिरधर छोड़ नहीं ही जावे
भृंगी जावे दसों दिशाएं, मनवा एक ठौर ही राखे
रहे लिपट हरि चरनन सों ही, जग में मनवा न ही धावे
सूरदास हरि संत समागम, जीवन-रस ताही में पावे
तीर्थ शिवोम् प्रभु ब्रजवासी, मनवा तोर चरन ही जावे

राग गोरख कल्याण ताल धुमाली

जगहिं उतरत जात हूं गहरे, नहीं उबारत मो क्यों आए
करुणा सागर, दीनदयालु, कृपा करत न, मो क्यों आए
दुख बादर घनघोर घटाएं, रहा छाय तम सघन अंधेरा
जावत भटकत, रहा बुलावत, मारग सीधन, मो क्यों आए
काम क्रोध मद मनहिं चंचल, करत तरंगित मन है मोरा
आए उबारो मो दुष्टन से, पार करत न, मो क्यों आए
तृसना ममता मोह समाए, पल-पल मोहे रहत नचाए
कब लौं नाचूं ताल पह इन कौ, नहीं बचावत, मो क्यों आए
सूरदास गोपिन मन भावन, करो सहाय आए मोहे
तीर्थ शिवोम् प्रभु बनवारी, नहीं छुड़ावत, मो क्यों आए

राग आनन्द भैरवी ताल भजनी ठेका

प्रभु जी ! आया तेरी सरनी
लाज संभारो, अन्तर्यामी, नाहीं कुछ भी करनी
अवगुण रमा, न भूलत कबहूं, हर पल रहत सतावें
पापन गठड़ी सिर पर राखी, होगी कैसे तरनी
मोह क्रोध मद लोभहिं उलझा, छूट सकत हौं नाहीं
जग ही डूबत जात रहा हौं, लागूं कैसे चरनी
जगत बना विकराल भयानक, आवत खावत मोहे
जल असीम, उत्ताल तरंगें, पांव टिकत न धरनी
सूर प्रभु आ वेग उबारो, पापन नाव भरी है
तीर्थ शिवोम् तुम्हीं रखवारे, तुम बिन होवत मरनी

राग बिहाग ताल अद्धा

आवत भीजत माया माहीं, काहे नहीं उबारत मोहे
दीन-बंधु करुणाकर स्वामी, क्यों नहीं आय तारत मोहे
तृसना ममता बूंद पड़त हैं, सरिता क्रोध प्रवाहित होता
लोभ करत है गरजन भारी, रहत करत हैं आहत मोहे
देख रहे सब मूक बधिर हो, रहे बजावत, बैठत मुरली
पिसत रहा जग दोषन माहीं, रहत है डारत, जारत मोहे
मन मल, माया मल ही जारे, जीव को रहत डसत ही हरदम
किरपा बिन न पार उतारा, रहत करत ही, आहत मोहे
सूरदास जग-वन्दन स्वामी, कलिमल जारे, पार उतारे
तीर्थ शिवोम् विनय है तो सों, आय करो, किरतारथ मोहे

गुरु नानक देव जी

राग धनाश्री ताल केहरवा

शब्द भाव जा मन में नाहीं
उस को मृत ही समझो भाई, सांस लेत पर जीवन नाहीं
शब्द भाव जा मन में होवे, जीवन हो, पर मिरत समाना
कर्म करे पर रहे अकर्मी, जगत भाव पर या मन नाहीं
मरा हुआ जो जीवित समझे, अहंकार ही बोले उस का
करत न कुछ भी, करत गर्व ही, गर्व बिना उस में कुछ नाहीं
नानक जीव तत्त्व न कोई, जीव भाव ही मन का केवल
जीव भाव ही नाम गर्व का, निकला गर्व, जीव कुछ नाहीं
तीर्थ शिवोम् सुनो हे मनवा, नाश करे जो गर्व का अपने
जीते जी वह ही मृत होवे, जीवन मुक्त और कुछ नाहीं

राग मेघमल्हार ताल त्रिताल

हुआ इशारा मेघा बरसे
नाम जपा जिस संग गुरु के, सुख कारण वह काहे तरसे
यह सब किरपा तेरी प्रभु जी, जो आशीष जीव को दीना
सद्गुण प्रकट किए हिरदय में, सोए भाग हैं जागे फिर से
सद्गुरु संग नाम जप कीना, पाया ज्ञान हृदय के माहीं
तुमरी कृपा बिना नाहीं कुछ, नाम भजन ही होत है हम से
नानक होवत जो कुछ जग में, तुम ही कर्ता हर्ता सब हो
तुमरी शक्ति, लीला तुमरी, होवत घटित सभी कुछ तुम से
तीर्थ शिवोम् नाम प्रभु साचा, सदा धिआओ गुरु कृपा से
जनम मरण भय सकल निवारण, जावत संशय सब ही मन से

राग यमन ताल भजनी ठेका

संत जनों की चरण-धूल माथे पर लाऊं
मांगत ये ही मनवा, चरणीं सीस नवाऊं
श्रवण कथा सतसंगत कीनी, हरि-रंग चढ़्या मो पर
संत जनां की महिमा न्यारी, उन पह हौं बलि जाऊं
हम अजान, गति-हरि न जानें, संतन सोझी दीनी
अवचेतन मन चेतन कीना, हरि हरि नाम धिआऊं
सत-संगत हरि दर्स कराये, मन के पाप मिटाए
संत मिलन सम सुख न कोई, प्रीतम सन्मुख पाऊं
तीर्थ शिवोम् करत अरदासा, चरणीं मोहे राखो
नानक संत चरण नित सेवूं, जीवन सफल बनाऊं

राग मिश्र पीलू ताल केहरवा

ठाकुर मिलना दूर बड़ा है, कठिन बड़ा है
अगम अगोचर सर्व बिआपे, फिर भी पाना कठिन बड़ा है
पाठन-पठन, न सेवे तीरथ, न ही मिले वह पूजा अर्चा
न ही जुगत, करन चतुराई, दर्शन पाना कठिन बड़ा है
जतन करों और करो उपाय, उलटे-सीधे सांस को रोको
जोग ध्यान जप संयम कर कर, उस का पाना कठिन बड़ा है
नानक कृपा करे भगवन्ता, तो सहजे वह मिलत है आई
करत उपाय काम न कोई, जतन से पाना कठिन बड़ा है
तीर्थ शिवोम् प्रभु भगवन्ता, अपना आप देत पकराए
किरपा से ही मिलत प्रभु है, किरपा पाना, सरल बड़ा है

राग बैरागी भैरव ताल चुमाली

किरपा गुरु करे तां भगती
जब गुरु लेत मिलाय शिष को, तो ही करत सकत वह भगती
धूल वासना हरत है मन सों, निर्मल मनवा होवत ता का
साचा प्रभु साच ता वाणी, सुनता जीव, करत वो भगती
भगती-हीन वृथा है जीवन, मन-मुख लीन नहीं गुरुसेवा
विरथा सब ही ऊठन बैठन, काहे लागे करन वह भगती
नानक प्रभु सकल सुख दाता, सर्व जनों का भाग विधाता
जा पर कृपा प्रभु की होए, देवत सुरती, करत वह भगती
तीर्थ शिवोम् जगत इक पिंजरा, जा में फसा जीव बेचारा
अन्त मरण कोई साथ न चाले, अपंद वही जो करत है भगती

राग जैत कल्याण ताल भजनी ठेका

नाम पदारथ हिरदय माहीं
गुण सब व्याप रहिआ अन्तर में, बाहर कुछ भी राखा नाहीं
कोई पावे शब्द यह अन्तर, पल-पल नाम जपे दिन राती
भरा अखण्ड लबालब अन्तर, बड़भागी ही इस को पाहीं
निन्दा द्वेष त्याग सब मन सों, गुरु भाव थिर अपना आपा
राम जपन कर, ध्यान राम का, पा जावे सब हिरदय माहीं
नानक एक सहारा शब्दा, करत विचारत एक प्रभु का
उज्जवल मुख, मन हर्षित ता का, प्रभु-चरण ता हिरदय माहीं
तीर्थ शिवोम् नाम ही साचा, काया माया सब ही छाया
एक नाम ही तारन-हारा, जो पावत नर हिरदय माहीं

राग देसकार ताल धुमाली

गुरु उपदेश सुना, मन लागा, तिन्हां पाया घर में वासा
गुरुमुख करत प्रभु गुनगाना, त्यागत मन सों तृसना आसा
शब्द रते सो निर्मल होए, घट अन्दर परगासा तिन के
हिरदय माहीं बसत हरि है, परगट माया भ्रम अकासा
हे मनवा हरि नाम ध्याओ, निर्मल अपना हृदय बनाओ
लेख लिखावा मस्तक लाए, तिन के अन्दर होत प्रकासा
नानक बसत हरि अन्दर ही, दृष्टि अन्दर, पाओ अन्दर
गुरु शब्द वाले जन राहीं, पावत हरिहिं, नहीं निरासा
तीर्थ शिवोम् नहीं मन निष्ठा, ज्ञान प्रभु बहु पाय सकत न
सत्य कहा जन अनुभव अपना, निष्ठा होय, होत परकासा

ताल श्रीकल्याण ताल त्रिताल

मनमुख प्रीतम घर न जावत
जो सत्कर्म करत है कुछ भी, तो भी सेज पति न पावत
मोह विकार भ्रमित ही निसदिन, पावत संग न कन्त पिया का
रूप को अपने नहीं पछाने, जगहिं रहत सदा वह धावत
इक-मन हो हरि नाम धिआओ, साध-संग सुख मन में पाओ
गुरुमुख सदा सुहागिन नारी, पी का नाम रहे मन धारत
नानक जा मन गुरु निवासा, ता ही शरण प्रभु की पाए
ता ही शोभित होत पिया घर, ता ही सुख मन पी का पावत
तीर्थ शिवोम् पिया जो भावे, वह ही अमृत, ता सुख है
गुरुमुख रहे पिया की शरणीं, सेवे साच, साच ही पावत

राग गारा ताल दादरा

जग में आया काज संवारन, उलझ पड़ा माया के माहीं
अन्त कालवश जाय पड़ेगा, पछताएगा मन के माहीं
अंध जीव! तू नदी किनारे, भाग होय गुरु शरण मिलेगी
तभी कटेगा फंद यह तेरा, जीव मिले गुरु चरणों माहीं
मृत्यु द्वारे आन खड़ी है, हरण करन को प्राण तेरे है
चारों पहर बिताए माया, रहा भटकता जग के माहीं
नानक धन्य साध की संगत, किरपा जा मन होत उजाला
मिलत जीव है जाय प्रभु से फिर न आवत जग के माहीं
तीर्थ शिवोम् प्रभु भगवन्ता, सद्गुरु दीन मिलाए मोहे
चरण भजूं और शरण गहूं मैं, जाय मिलूं तव चरणों माहीं

राग नट भैरव ताल केहरवा

जा पासे अधिकार है कोई, उस का जग में, सब ही होई
गुरु अधीन बना जो मनवा, बाल न बांका ता का होई
गुरु उपदेश कमावे साची, साचा प्रकट होत मन माहीं
साचे शोभा होवत जग में, साचे से ही मिलना होई
एक बार साचे जा मिलया, बिलग नहीं फिर ता से होवे
बूंद मिलत सागर में जाए, सागर से मिल सागर होई
नानक एक प्रभु भगवन्ता, दूजी न कुछ चाहत मोहे
गुरु कृपा से मिलती जन को, दूजा नहीं उपाय कोई
तीर्थ शिवोम् जिन्हों ने पाया, गुरु का नाम, गुरु उपदेशा
परगट गुरु अन्तर में जानो, मिलत प्रभु किरपा जो होई

राग खमाज ताल केहरवा

दीन-दयाल दया की जिन पर, गुरु चरण परगट मन माहीं
अंगीकार किया प्रभु ताहीं, मुक्त भए ते जन छिन माहीं
मन तन में आ प्रगट भया है, साचा साहिब प्रभु गोसाईं
काल भी नेरे आवत नाहीं, हर्षित हरदम हिरदय माहीं
जो कुछ करता, तू ही करता, मन बुद्धि कुछ समझ न पावे
परदा उतरा भ्रम का मन सों, प्रभु सहायक हर पल माहीं
नानक भक्तन एक सहारा, प्रभु नाम का, प्रभु-चरण का
ध्यान प्रभु का रहत सदा ही, जपत नाम हिरदय के माहीं
तीर्थ शिवोम् हरि गुण गाएं, भक्त जना आनन्द मगन हो
पार ब्रह्म सर्वत्र समाना, पार करत भक्तन पल माहीं

राग गोरख कल्याण ताल धुमाली

नाम मिला मनवा तृप्ताया
विरथा जीवन था प्रभु मोरा, नाम मिला मन में सुख पाया
गुरुमुख सजन मिला मो आए, दिया संदेशा प्रीतम मोहे
नाम प्रगास भया मो अन्तर, हर्षित भये सभी मन काया
सिमरन नाम ही मेरा जीवन, सिमरन बिन है जीवन बिरथा
देओ भेद सभी समझाए, सोच समझ मनवा हर्षाया
नानक नाम अमोलक रतना, मिलत जीव को सद्गुरु ही से
सद्गुरु जे अनुकूल होय तो, भक्तन आप मनोरथ पाया
तीर्थ शिवोम् सरोवर अमृत, सदगुरुदेवा मेरे स्वामी
ताही किरपा, ताही शक्ति, प्रीतम अपना मैं ने पाया

राग जन सम्मोहिनी ताल अद्धा

मन प्राणन का एक अधारा
भक्त जनन गावत गुण तेरे, गाय गाय आनन्द अपारा
सभी गुणन का नाम निधाना, सिमरन किए सुखी मन होया
इच्छा मन, आवत दर तेरे, सतसंगत मिलहिं करतारा
सतगुरु दर्शन हो मन सिद्धि, सकल पदारथ होत मनोगत
जग दीखत आनन्द समाया, एक प्रकाशित अपरम्पारा
नानक अगम अगोचर सतगुरु, साधक सिद्ध गयानी ध्यावें
मंगल करण, अमंगल हर्ता, पार उतारत जग विस्तारा
तीर्थ शिवोम् होय किरपालु, विरद संभारो आपुन आपे
घर मेरे निज रूप प्रकाशो, शोक मोह सगला निस्तारा

राग अड़ाना ताल दादरा

धन्य धन्य यह मन्दिर देहा
जा में सिमरन हो प्रभु तेरा, और न देहा, कहें जो देहा
वही हृदय सुख होवे वासा, जा में तेरा नाम विराजत
संत बसत सो धरती शोभे, बाकी देह, नाम के देहा
कही न जाय महिमा तेरी, सर्व शक्ति सम्पन्न प्रभु तू
धन्य देह जो नाम भजे है, और न देहा, पापिन देहा
नानक बार बार जन धिआए, यश तेरा महिमा गुण गाए
सदउपदेश का अनंद उठाएं, जो यह करे, वही बस देहा
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी साचे, तेरा अन्त न जाने कोई
सर्व विआपे, अन्तर्यामी, जो यह जानत, सो ही देहा

राग खमाज ताल भजनी ठेका

अविनाशी प्रभु स्वामी मेरे, दुख है कोई नाहीं मोहे
कष्ट हरण दुख भंजक प्रभु जी, करत है रक्षा आए मोहे
इष्ट देव से मिलत है साधक, गुणन-इष्ट हैं जात समाय
साधक हो अविनाशी रूपा, बात जमत यह ही है मोहे
जो तू करे कराए दाता, दासन तेरे लेत प्रसादा
जेन गुरुमुख प्रसाद यह पाया, लागत अच्छे वह हैं मोहे
जिन जीवों- भक्तों को जग में, मीठी लागत तेरी करनी
व्यापक राम मिला घट माहीं, दीखत कण-कण तू है मोहे
नानक एक समाया सब घट, हुक्म एक का सभी विराजे
तीर्थ शिवोम् शरण में तेरी, राख लेय प्रभु शरणीं मोहे

राग सोरठ ताल भजनी ठेका

जब लौं प्रभु बुझाए नाहीं, अगन कभी भी बुझत है नाहीं
जब लौं प्रभु सुझाए नाहीं, तब लौं कुछ भी सूझत है नाहीं
जा को प्रभु दिखाए नाहीं, ताहे कुछ भी दिखत है नाहीं
जब लौं प्रभु कृपाल नहीं है, तब लौं कुछ भी मिलत है नाहीं
जब लौं प्रभु चलाए नाहीं, कुछ भी तब लौं चलत है नाहीं
जब लौं नहीं सुनाए प्रभु जी, तब लौं कुछ भी सुनत है नाहीं
नानक मूरख जीव सदा ही, समझे रहता झूठ को साचा
जब लौं प्रभु नहीं यह चाहे, तब लौं सूझ पड़त है नाहीं
तीर्थ शिवोम् नाम उपजाया, सद्गुरुदेव प्रभु ने आपे
जब लौं कृपा प्रभु न होवे, तब लौं भेद मिलत है नाहीं

राग बिलावल ताल केहरवा

झूठे नाते जोड़े जिस भी, टूट सभी वह जावें इक दिन
राम नाम का नाता साचा, बिरथा जग हो जावे इक दिन
राम नाम ही सार समाया, राम नाम ही जगत लंघाए
राम नाम का पल्ला पकड़ा, राम नाम, तिर जावे इक दिन
डोलत इधर उधर क्यों भाई, राम नाम न धारत हिरदय
मिले जहाज चरण-गुरु रूपी, भव छुटकारा होवे इक दिन
नानक प्रभुहिं सर्व समाना, जल थल पुर रह्या आकाशे
वहीस्वामी सर्व नियन्ता, काल करे वह आय इक दिन
तीर्थ शिवोम् नाम-रस बरसे, मूरख पीवत ता को नाहीं
रस अमृत जो पान करत हैं, पार उतर वह जावे इक दिन

राग शिव रंजनी ताल धुमाली

हरि बिसारे, बिसरत नाहीं
अब तो प्रीत प्रबल है होई, जात भुलाय बनत है नाहीं
विषय-विकार जरे सब मन सों, प्रेम अगन में विरह अगन में
रहत सदा ही प्रेम समाया, याद पिया में, जगत है नाहीं
ऐसी दशा भयी या मन की, करो जतन कितना भूलन का
याद न जाये कबहूं मन सों, याद टलाए टलत है नाहीं
मृग मोहित संगीत सों होवत, तैसे हिरदय प्रीतहि लागा
प्रीत बिना अब है नाहीं कुछ, प्रीत बिना जीवन है नाहीं
नानक लागा हरि-चरण में, लागा लाग गया बस लागा
तीर्थ शिवोम् नहीं अब छूटे, करो उपाय, हटत है नाहीं

राग बिलावल ताल केहरवा

संसारी धन संचय लागा, और और रट लाई
भक्त तभी हो जावे निर्धन, बिसर प्रभु जब जाई
दिन ऊगे, दिन ढल गया, बिरथा बेला जाए
मनवा लागा भागा जगहिं, अहंकार उपजाई
कोई जीते, कोई हारे, पर मन समझे नाहीं
प्रभु समर्थी सब कुछ देखे, हसत हसत वह जाई
सत संगत, हरिनाम अमोलक, प्रभु के पासे, प्रभु ही देवे
पारस छूए, लोहा सोना, नानक जीव बनाई
तीर्थ शिवोम् मिले गुरु पूरा, किरपा कर के जे अपनावे
मन मलीन, निर्मल हुई लागा, दर्शन हरिहिं पाई

राग काफी ताल भजनी ठेका

रंग रंग दीसे मोरा प्रीतम, जा रंग रंगा सोई रंग सोहे
जा रंग रंग उसे हौं देखूं, उसी रंग में मोहित मोहे
हस्ती, चीतल मच्छली पाखी, सब रूपन में रूप उसी का
कहीं छोट, कहीं बड़ो बनो है, जैसा घट वैसा ही सोहे
पाने प्रभु को कष्ट उठाते, तीरथ भ्रमते, नाक रगड़ते
नाक पकड़ कर सांस चढ़ावें, मिलत प्रभु फिर भी न कोहे
नानक रोग अहम् तड़पावे, काम क्रोध की अगन जलावे
ता ते प्रभुवर हाथ न आवे, सूझ कछु भी पड़त न मोहे
तीर्थ शिवोम् यही है मारग, गुरु शरण ही, सेव गुरु ही
होवत मुक्त वही है इक दिन, या में संशय होत न माहे

राग तिलक कामोद ताल झुमाली

चरनन एक सहारा मो को
एक पछानूं राम हरि को, दूजी ठौर न कोई मो को
तुम स्वामी तुम ठाकुर मोरे, सीस नवाऊं तो को
तुम मोरे, मैं तोर कहावत, एको बल तुम ही हो मो को
अलख अपार अनन्ता प्रभु जी, तुम ईशों के ईश
कृपा करे तू ही दीनन पर, करो कृपा तुम आय मो को
गुरु कृपा ही तुम्हें मिलाए, सन्मुख प्रकट कराए
मैं याचक बन दर पर आया, दर्शन दीजो प्रभु जी मो को
नानक जा जन किरपा होई, ता को अपना कीनो
तीर्थ शिवोम् मीत प्रभु प्रीतम, प्रेम-कृपा अब कर दो मो को

राग बिलावल ताल केहरवा

और ठौर न कोई मोहे, चरण शरण मैं तेरी पकरी
ठाकुर दीनदयाला मोरा, प्रेम तिहारे ही मैं जकरी
ठाकुर बिरद पतित-पावन को, करत उद्धार जगत सारे का
शरण पड़े का हाथ पकर कर, लेत उबारे क्षण में झटकी
गिरी जगत खाई में गहरी, जावत नाहीं निकलत मो सों
मायाधीन हुई मैं व्याकुल, पिया निकाले मोहे पकरी
नानक स्वामी नाथ अनाथन, निर्मल करत मलीनों को तुम
आश मेरे मन दर्शन तुमरे, आशाओं ने मोहे पकरी
तीर्थ शिवोम् हरि गुण गाओ, पूरन ब्रह्म गुणन से न्यारा
करत अनुग्रह दीनन पर हो, जगे भाग जिन को तुम पकरी

राग आसा ताल भजनी ठेका

पाप करन में आलस नाहीं, विषय भोग शरमावत नाहीं
दिन तो गया जगत के लेखे, हरि सिमरन मन जावत नाहीं
खावे, पीवे, मौज मनावे, यही गति या जग की होवे
सिरजनहार भुलाय बैठा, गोविन्द के, मन जावत नाहीं
जीवन बीता माया पेखत, जग में रमया, भरम भुलाना
माया पाछे अंध की नाईं, राम तो हिरदय आवत नाहीं
नानक बार-बार समझाय, समझ न कोई जग में पाया
माया जकड़ा जीव बेचारा, समझ मति कछु आवत नाहीं
तीर्थ शिवोम् प्रभु ही राखा, मन में शोक करत तू काहे
गुरु की संगत हो निस्तारा, फिर माया मन कारत नाहीं

राग शुद्ध कल्याण ताल केहरवा

जीव कुछ पाता तभी है, वह जभी किरपा करे
नाम जागे तब हृदय में, नाद परकाशित करे
राम ही आधार जीवन, एक ही मारग गुरु
जाप मन आनन्द आवे, काट वह किल्मिश धरे
जिस का कोई आसरा न, वह हरि पा जाय है
नाम राखे जो हृदय में, पाप उस के सब हरे
नाम सिमरन एक केवल, बाकी वाद-विवाद है
नाम ही इक तरन-तारन, भाग सोए जग परे
पार नानक ने किए जो, जल रहे संसार में
सिमर ले शिव ओम बंदे, शोक काहे जग करे

राग पट्ट बिहाग ताल झुमाली

जो जन लागे श्री गुरु शरणीं, जीवित मुक्त भए बड़भागे
रहत लीन प्रभु चरणीं माहीं, तिन के भाग सदा ही जागे
गर्व छोड़, मनमुखता त्यागी, पंथ गुरु जिन धारण कीना
तिन के पाप कटे सारे ही, जगत त्याग परमारथ लागे
भक्त जिए नित गुरुगुण गाए, नाम गुरु नित मीठा लागे
गुरु गुण गाय, गुरु गुण धिआए, मारग गुरु खुलन सब लागे
जो संसारी, जगत पिपासु, ताहे लिपटे मद अज्ञाना
कर्म करे नित, आवे फिर फिर, आवागमनहिं घूमन लागे
नानक हरदम नाल हरि के, जा मिलया, फिर बिछड़े नाहीं
तीर्थ शिवोम् राख प्रभु शरणीं, मन उचाट जग होवन लागे

राग बहार ताल भजनी ठेका

गोविन्द लीला अपरम्पारा
जो कुछ करे सोई सत् जानो, सत् ही सर्व अधारा
अणंद मनाओ, नाम कमाओ, सुरत नाम पर लागी
जावे असत् नहीं मन कबहूं, रहत जुड़ा करतारा
ज्यों ज्यों बाढ़े प्रीत हरि सों, त्यों त्यों जग से भागे
मनवा रहे आनन्दित चरणीं, लीन तजि बिस्तारा
नानक जब लौं प्रीत न चरणीं, तब लौं मनवा चंचल
पावे किरपा सदगुरुदेवा, छूटा मोरा तोर हमारा
तीर्थ शिवोम् गुरु अनुकूला, दर्शन पावे साजन प्रभु का
मायातीत हरि हो सन्मुख, भव निस्तारा, मिलत किनारा

राग नीलाम्बरी ताल अद्धा

हरि के चरणां, हरि के चरणां, हरि के चरण पड़ीजै
पंख ज्ञान-बैराग लगा कर, हरि के संग जुड़ीजै
प्यास दर्स की लागी मोहे, मन मोहित हरि कीनो
हरि की छाया नयनन माहीं, हरि चरण मन दीजै
वन दरयाव नगर सब खोजे, खोजा देस बिदेसा
साधु-संग हरि मो मिलया, नित सतसंग करीजै
नानक करत बिनय प्रभु आगे, करो अनुग्रह मो पर
दर्शन पाए अणंदित मनवा, अमीरस कृपा करीजै
तीर्थ शिवोम् शरण में तेरी, ताप जलत मन तनवा
बांह गहि, काढ़ो भव जल सों, शरण पड़ा रख लीजै

राग भैरवी ताल दादरा

जगत असार, सार न कोई, नाम ही सार समाया
बाकी सगला काम है माया, माया मन भरमाया
अंधकूप में जीव पड़ा है, उलझा घर परिवारा
छूट न पावे कबहों या ते, भूला देखत छाया
नरक समान बना बिस्तारा, डूबत उतरत जाय
फिर भी समझ न पाए मनवा, मोहित बनया माया
नानक भटकट योनि-योनि, कबहों छूट न पाए
गुरु कृपा ही दे छुटकारा, गुरु ही पार कराया
तीर्थ शिवोम् बिनय गुरु चरणीं, बख्शा देओ सतसंगा
नाम धिआऊं, कार कमाऊं, जग बिरथा उलझाया

राग भैरव ताल केहरवा

राम को सिमरे, राम को ध्यावे, पाप सभी कट जावें उस के
लेखा जोखा कर्मन का भी, कागद सब फट जावें उस के
साध-संग सत-संग बैठ के, अणंद प्रेम-रस जो वह पावे
प्रभु-प्रेम परगट हो अन्दर, अन्तर भ्रम हट जावें उस के
सिमरन राम से शीतल हिरदय, दास तेरा यह शरण तेरी है
भय-चूका, नाशा तम सारा, अंधकार नठ जावें उस के
मारग दिखलाया गुरुदेवा, जग छुटकारा, जीवन-मुक्ति
तन मन सदा प्रेम-रत भगती, बाधक सब छुट जावें उस के
नानक पाया राम का दर्शन, राम का दर्शन, प्रेम का पर्शन
राम कराया राम का दर्शन, दूर सभी जग नाटक उस के
तीर्थ शिवोम् शरण में आया, साथ में मनवा जो भरमाया
प्रेम भरो प्रभु पातर मोरा, पाऊं दर्शन हरदम उस के

राग शुद्ध सारंग ताल धुमाली

प्रभु का, मोरा, साथ नित्य है, प्रभु है अन्तर्यामी
सिमरे राम, कुशल सब भान्ति, जो है सब का स्वामी
साजन मोरा, मीत वही है, वह ही सखा है मोरा
विसर न जाऊं नाम प्रभु का, पड़े न कोई खामी
पूरन गुरु मिलाया स्वामी, किरपा करी अनन्ता
कोई जग में नहीं सहायक, भरत न कोई हामी
नानक रहे भरोसे उस के, निर्भय होत जगत में
तीर्थ शिवोम् करे वह रख्या, ऐसा साचा सुआमी

राग जोगिआ ताल भजनी ठेका

प्रभु का रूप जाति मुरव नाहीं, नाहीं दिरवत किसे ही
सद्गुरुदेव कृपा हो जिस पर, जपत जो नाम उसे ही
नाम निवास कृपा से होए, जतन किए कछु नाहीं
किरपा के आधीन रहे जो, मिलता नाम उसे ही
जा का धर्म, कर्म नहीं माला, ज्योति ब्रह्म स्वरूपा
सद्गुरु से ही मिलत है जन को, जन जो भक्त उसे ही
व्रत नियम नाहीं उपदेशा, गत-अवगत का भय न
ऐसी फुरना सद्गुरु होए, गुरुमुख होए उसे ही
नानक आस निरासा नाहीं, सुरत समाई निसदिन
तीर्थ शिवोम् वही प्रभु पावे, जागी सुरत उसे ही

राग भैरव ताल केहरवा

लाखों लाख तुम्हें अभिवंदन, वार देऊं यह मन को ऊपर
सिमरन ताप भगाए दूरी, दुख संताप गिरे भू ऊपर
नाम निधान है ऐसी औषध, सर्व ही मंगल जा सेवन से
सिद्ध होएं सब कारज जन के, विघ्न उड़त आकाशे ऊपर
मनवा पान करत जल शीतल, नाम रूप में, ध्यान रूप में
भक्त पुजारी जा चरनन के, करत कृपा तुम उन के ऊपर
रिक्त पात्र पूरा भर देवे, सूखा वृक्ष हरा कर देवे
आश्रय वही निराश्रित जन का, नज़र प्रेम की सब के ऊपर
नानक दया करे जा जन पर, हो परतक्ख उसी के सन्मुख
तीर्थ शिवोम् तन शीतल मनवा, वर्षा किरपा जन के ऊपर

राग दरबारी कान्हड़ा ताल केहरवा

बना प्रयास न मो से कोई, दर्शन दियो आप ही आए
ऊंघ रही थी विषयन माहीं, लिया जगाए, प्रभु ने आए
न कछु जानूं, न कछु समझूं, माया क्या है, जगत पसारा
अनहोनी न जानूं कुछ भी, मुख दिखलाया, साजन आए
मैं तो केवल सहजे पाया, मन से भोली, भाव कछु न
किरपा प्रभु ने ही है कीनी, आ सोती को, मोहे जगाए
यह संयोग बना कुछ ऐसा, साधुन आ कर दर्श कराए
अब मन भटकत इधर उधर न, संशय मन के सभी मिटाए
नानक अब मो लागी प्रीती, प्रभु चरण में, प्रभु शरण में
तीर्थ शिवोम् दियो सब त्यागे, कण-कण प्रभु दियो दिखलाए

राग देस ताल धुमाली

पढ़ पढ़ पुस्तक वक्ता बनता, करत फिरत उपदेशा
नाच बजावत गाय गाय कर, मन न जात कलेशा
जब अनुभव अन्तर में होता, भेद तभी सब खुलता
दुविधा भ्रम सब नाश होय तब, रहत नहीं अंदेशा
जब हौं जावत सिमटत मन सों, छूटा मेरा तेरा
जो कुछ भी है एक प्रभु का, देश सभी परदेशा
नानक नाम निरंजन धिआओ, मायातीत अनन्ता
ता के सिमरे सब दुख नाठे, पावे दर्स महेशा
तीर्थ शिवोम् नाम सब व्यापे, पाईए गुरु पूरे ते
करे कृपा तो बंधन छूटे, मस्त भए दरवेशा

राग मावती ताल भजनी ठेका

सब कुछ मेरे स्वामी का है, सब कुछ स्वामी करता
रहे हुकम के अन्दर उस के, भव सागर से तरता
पावे आतम- ज्ञान गुरु से, बुरा न दीखत कोई
नाम-ध्यान ही डूबा रहता, सफल वह जीवन करता

दाता एक प्रभु जग का है, वह ही मेल मिलाए
सेवा करत उसी दाता की, शब्द-ज्ञान में रमता
गुरुमुख जीव नाम मन उपजे, सदा सुखी वह रहता
हरि नाम गुण गाय गाय, मन निर्मल वह करता

तीर्थ शिवोम् प्रभु गुण गाओ, नानक नाम धिआओ
किरपा पाय गुरु-मुख होता, राम राम नित करता

राग- मिश्र खमाज ताल- भजनी ठेका

कलियुग लोगन कूकर नाईं, निन्दा-चुगली भोजन उन का
मिथ्या बोलत, बिरथा भौंकत, होवत न वीचार है उन का
जीते जी सन्मान न कोई, मुए गति भी वैसी होवे
जो करमन में होत वही है, होवत नहीं भला कुछ उन का

मन मुख पुरुष, गंवारू नारी, पड़े कुमारग सब के सब ही
शील, विचार, धर्म नहीं कोई, कार, विहार, अचार न उन का
पुरुषारथ मारग सब छूटा, मान नहीं, मर्यादा कोई
एको नाम प्रभु ही साचा, ता सों न कुछ काम है उन का

तीर्थ शिवोम् विचारे नानक, अपना आप समेटो अन्दर
अन्दर जाए, पार पए हैं, कलियुग करे नहीं कुछ उन का

राग भैरवी ताल भजनी ठेका

राम-नाम-ध्यान हिरदय धारो, शरण प्रभु सब कष्ट निवारो
कलियुग नाम अधारा केवल, सिमर सिमर जन भव-जल पारो
नाम बिना हो कुछ भी साधन, केवल रवेह पड़त है सिर में
दुर्लभ बहुत प्रभु का नामा, गुरु कृपा ही पार उतारो
हरि-नाम वह जानत समझत, गुरुमुख से जो लेत उसे है
करे समर्पन हरि के ताईं, न डूबत वह जल मझधारो
गुरु का नाम, गुरु की शक्ति, गुरुदेत उपदेश के माहीं
नानक जो जन पावै ताहे, होत कृतारथ, उतरत पारो
तीर्थ शिवोम् नाम प्रभु दीना, परम अनुग्रह मो पर कीना
किरपा रहे सदा ही मो पर, परले पार, नहीं मझधारो

राग शुद्ध कल्याण ताल केहरवा

कवन कवन मैं गुण गिनवाऊं, दीन दयाल गोविन्दा
रंग अनेकों, अनिक तरंगें, प्रतिपालक गोविन्दा
करत अनेकों जप तप साधन, मधुर कला संगीता
मौन साधना, तीरथ न्हावे, पावे तुझे गोविन्दा
पाठन-पठन, बजावे घण्टे, आसन कण्ठी माला
तुम को पाय सकत पर नाहीं, अगम तुम्हीं गोविन्दा
नानक करत सकल पुरुषारथ, पर नहीं नाम धिआवे
नाम धिआए दूर सभी दुख, पावत तुम्हें गोविन्दा
तीरथ शिवोम् कृपा बिन तेरी, नाम न धिआया जावे
तेरी किरपा, तुम्हें मिलावे, प्रकट तुम्हीं गोविन्दा

राग गौड सारंग ताल भजनी ठेका

सद्गुरु मौन देख कर सेवा, सोई करत सकत है भगती
जीवित मरै, समर्पन पूरन, सोई समझ सकत है भगती
ऐसा भगत रहे संसारा, मोह रहित, अभिमान रहित वह
एक प्रभु ही राखे मन में, सोई चलत सकत है भगती
प्रभु की भगती, भगत न छोड़े, न परवाह जगत हंसाई
बस जाए प्रभु नाम हृदय में, सोई धार सकत है भगती
नानक जगत जलत माया सों, संत खेलता नाम सदा ही
मो पर कृपा करो भगवन्ता, कैसे जान सकत मैं भगती
तीर्थ शिवोम् जगत सब माया, कोई निकलत किरपा पाया
शरणीं तेरी हौं अब आया, ज्ञान-दान दो मोहे भगती

राग मियां मल्हार ताल केहरवा

राम प्रभु का नाम जपे जन, ध्यान धरे औ सेव कमावे
राम सकल भरपूर रह्या जग, एक ही रूप अनेक बनावे
वही प्रसारित चहुं ओर है, वो ही कारण सर्व क्रिया का
वो ही मच्छ-कच्छ उपजाए, भक्त उसी का ध्यान जमावे
जीव न जाने, जीव न समझे, प्रभु को न पहचाने कुछ भी
जग में लीन सदा ही निसदिन, मारग राम कभी न जावे
मो ग़रीब को पदवी ऊंची, क्या से क्या कर दीना मोहे
आदर देत जगत अब मो को, चरणों आगे सीस झुकावे
तीर्थ शिवोम् प्रभु शरणाई, मन, क्रम, वचन करे जो भाई
निकल जात वह 'भव-जल पारा, सहजे आतम लाभ कमावे

राग सिन्ध भैरवी ताल भजनी ठेका

राम नाम जब सुनता हूं मैं, मन हर्षित होता तब मेरा
राम नाम मी लागत मीठा, मन आह्लादित हो तब मेरा
गुरु उपदेश राम मन लागे, सहजावस्था जाग्रत अन्तर
पान करत अमृतरस पाए, चहक उठत मनवा तब मोरा
लाकड़ माहीं अगन बसत ज्यों, लाकड़ रगड़ो, होत प्रगट है
ऐसे राम हरि की जोती, देखत अगन प्रकट मन मोरा
नौ दर सों विषयन रस निकले, नाम के आगे फीका वह रस
सतगुरु किरपा, मिले राम रस, तृप्त भया मनवा तब मोरा
नानक कृपा करो भगवन्ता, राम नाम रस पाऊं छक कर
तीर्थ शिवोम् राम के द्वारे, आशा राम की, मन तब मोरा

राग मिश्र षड्ज ताल - रूपक

याचना तुम से करूं मैं, साधु-संगत दे प्रभु
सन्त की सेवा में रह कर, नाम जप लूं हे प्रभु
चरण की पूजा कराओ, शरण ठाकुर की रहूं
जो प्रभु करता-कराता, सुख उसी में है प्रभु
जा कृपा सद्गुरु मिली हो, लक्ष्य दुर्लभ पाय वह
दूर भ्रम अज्ञान सारा, प्रकट सद्गुरु है प्रभु
जो हरि, नानक, है भजता, राम मिल जाए उसे
सफलता जीवन में पाता, मुक्त बनता है प्रभु
मन लगा है राम में ही, रैन-दिन मेरा शिवोम्
राम ही भावे है मन को, राम सिमरन है प्रभु

राग दरबारी कान्हड़ा ताल केहरवा

नाम तिहारो प्रीतम पावन, जगत उधारन, पाप नसावन
जगत वासना छीन करे सब, अति लुभावन हिरदय भावन
रूप अनेक किए प्रभु धारण, फिर भी अनुपम अगम अगोचर
ऐ मन, धावत रूपन में क्यों, जगत भुलावन, मन परचावन
संत-दर्श नयनन सों कर तू, कानन श्रवण हरि यश कर तू
पार होय भव-सागर बेड़ा, प्रभु शरण दुख पीर भगावन
नानक भजन श्वास-प्रश्वासा, संत चरण मन अपना दीनों
प्रभु नाम ही सर्व सहायक, जगत छुड़ावत, राम मिलावन
तीर्थ शिवोम् बखान करूं क्या, गुण तेरे नहीं कहन में आवत
दर्श-पर्श मन आशा लागी, तुम ही दुविधा भरम हरावन

राग गुण-कली ताल धुमाली

बहु विधि माया खेल दिखाए, बहु विधि नाच नचाए
बहु विधि लेत फसाए जग में, भान्ति-भान्ति भरमाए
मोह क्रोध के रूप धरे बहु, जीव को बहुत रुलाए
कभी काम का ताण्डव होए, पुतली नाच नचाए
जतन करत बहु बचने कारण, सफल होत कोई विरला
गुरु सेवक हो, प्रभु पिआरा, पूरन भक्त कहाए
डोलत जीवा इधर-उधर जग, पाए दुख घनेरा
अन्ते तन धन सभी पराया, साथ नहीं कछु जाए
नानक पापी राख लेय प्रभु, अपने पासे, चरणों माहीं
सत-संगत सुख देओ मोहे, प्रभु कृपा बरसाए
तीर्थ शिवोम् करे चतुराई, प्रीतम साजन भूला
अब हूं शरण तेरी हौं आया, दिया मोहे विसराए

राग गौड़ सारंग ताल दादरा

नाम हरि जो अच्छो लागे, दुख संताप सभी जल जाई
आनन्द उपजे मन के माहीं, भोग-विकार सभी बल जाई
सतसंगत मारग जो चाले, मनहिं उपजे प्रेम हरि का
सेवा कारज करे प्रभु का, मन की आशा सभी टल जाई
संत-चरण धूली जो मस्तक, आदर भाव लिए जिन लाई
तिन पाया फल जप-साधन का, दुष्ट भाव सभी गल जाई
नानक दीसे प्रभु ध्यान में, सब जग दीसे राम समाया
मन में, तन में, अन्दर बाहर, दुविधा भाव उसी पल जाई
तीर्थ शिवोम् शरण प्रभु मांगत, यम के दूत होय छुटकारा
कृपा करो स्वामी गुरुदेवा, तुमरी नज़र, जगत जल जाई

राग भूप ताल भजनी ठेका

विनती सुनो प्रभु दीनदयाला
एक मोर मन पांच रिपु हैं, छूट सकत कैसे किरपाला
तीन गुणन दुख देवत मन को, भाव-कुभाव उभारें अन्तर
माया पार मैं पाऊं कैसे, समझ न आवत मो नन्दलाला
जतन करत हूं मैं बहु भारी, पर मो किए नहीं कछु होए
अब तो मोहे राख लेयो प्रभु, दूर रिपु हैं जो विकराला
नानक वंदन करत शरण में, जग बंधन के तोड़नहारे
एक सहारा अब तेरा ही, करो कृपा गिरधर गोपाला
तीर्थ शिवोम् लगूं मैं पायं, अंग अंग जकड़ा भ्रम माया
संत कृपा ही सकत छुड़ाए, दूजा कौन सुने एहवाला

राग मिश्र खमाज ताल केहरवा

हरि हरि क्यों नहीं कहत रे मनवा
सतगुरु-चरण नहीं तू पूजत, राम चरन नहीं परत रे मनवा
गुरु कृपा से राम मिलत हैं, गुरु कृपा मन निर्मल होय
गुरु कृपा परमारथ मारग, परमारथ नहीं चलत रे मनवा
काम क्रोध अभिमान मोह मद, यह सब गल में फास समाना
सतसंगत में बैठ के चर्चा, क्यों तू नहीं करत रे मनवा
नानक रहा तुझे समझाए, राम सिमर ले, नाम सिमर ले
राम ही तेरे काम है आए, क्यों तू नहीं जपत रे मनवा
तीर्थ शिवोम् कृपा भगवन्ता, संत चरण धूली मो दीनी
तेरे आगे विनय यही है, जग में नहीं परे यह मनवा

राग खमाज ताल खेमटा

जानत भक्त हरि बिन को ना
पार उतारनहार जगत में, छोड़ प्रभु को, दूजा को ना
जागत रहे सदा गुरुसेवा, मन से, तन से, वाणी से भी
गुरु लगावे मारग हरि के, राह दिखावत, दूजा को ना
तन धन गर्व करत तू काहे, बिनस यह इक दिन सगला जासी
एक प्रभु ही नित्य निकट है, निकट रहे जो, दूजा को ना
देह ढले यह कांच की नाईं, अगन जलाए देवत या को
करो जतन, पर बचत यह नाहीं, वही बचावे, दूजा को ना
नानक सपना यह संसारा, आंख खुले कुछ दीखत नाहीं
एक प्रभु ही सत्य सरूपी, सत्यसरूपी दूजा को ना
तीर्थ शिवोम् रहो प्रभु चरणीं, गुणी, अकर्मी, ज्ञानी, दाता
एक वही है, एक वही है, उसे छोड़ कर, दूजा को ना

राग यमन ताल भजनी ठेका

मो पुकार सुनत क्यों नाहीं, साजन प्रीतम स्वामी म्हारो
अच्छा-बुरा करत हूं जो भी, सब ही देखत कर्म हमारो
नाम बिना जो कुछ भी करता, कुछ भी नाहीं, कुछ भी नाहीं
एक नाम ही साचा साथी, बाकी सब फिरता अंध्यारो
नानक तुम दाता, इक, स्वामी, अटक रह्यो हूं मैं जग माहीं
तीर्थ शिवोम् एक ही हमरो, भ्रम में ताही दियो बिसारो

राग काफी ताल केहरवा

संतों का संग, भ्रम का नाशक, आतम लाभ मिलत है
प्रेम नाम में, अणंद हृदय में, अनुपम काज सरत है
अपलक देखूं संतन ताईं, नयना लागे रहत अपर ही
भोग-जगत मन लागत नाहीं, सुख संतोख मिलत है
गुरु पूरा पाया सुखदाता, परमानन्द प्रदाता
दर्शन पावत, मन हर्षावत, मनवा जगत हरत है
नानक प्रगट होया गुरु अन्दर, दुविधा नाही सब ही
तीर्थ शिवोम् हुआ किरतारथ, माया जाल कटत है

राग पीलू ताल भजनी ठेका

जनम हमारो बीता जाए, हरि मिले बिन बिरथा जाई
प्रीत हरि जो हिरदय नाहीं, खान-पान सब बिरथा जाई
धन जोबन सुख विविध प्रकारा, मन को अच्छे सब ही लागें
प्रभु मिलन बिन सब ही थोथा, धन जोबन सब बिरथा जाई
भोग-जगत सगरे मृग-तृष्णा, अस्थिर, भासित केवल छाया
मन लागा इन ही के पाछे, जनम यूहीं सब बिरथा जाई
नानक जीव पड़ा मद माया, छूटत नाहीं, राम बिसारा
तीर्थ शिवोम् दास की विनति, अब की बेर न बिरथा जाई

राग झोलक ताल केहरवा

राम नाम यश गाओ मनवा, हिरदय अपने धरि मिटाओ
अगम अगोचर साजन तोरा, सद्गुरु किरपा निसदिन पाओ
जा जन होय किरपा प्रभु की, प्रीत हरि की ता मन उपजे
न मन राखो अपनी इच्छा, जो प्रभु भावे, वही बनाओ
धन्य जीव जो हरि-गुण लागे, लेख लिखाए लाए मस्तक
प्रीत हरि, तिन दर्शन पाए, ता जन सेवा, नित्य कमाओ
नानक बालक हम प्रभु तेरे, मात पिता गुरु स्वामी तुम हो
तीर्थ शिवोम् भया आनन्दा, हरि चरनन जा सीस नवाओ

राग तिलंग ताल धुमाली

हे सुख स्वामी, अन्तर्यामी, शरण तिहारी हूं मैं आयो
प्रीत लगी मन तेरे ताईं, सर्व त्याग कर चरणीं आयो
मागूं क्या मैं तुम से स्वामी, तुम सर्वज्ञ विधाता दाता
प्रीत सदा ही हिरदय तेरी, याचन ये ही करने आयो
नानक रंग दे हे गोपाला, रंग अपने में रंग दे मोहे
तीर्थ शिवोम् हृदय में राखूं, चरण-कमल मेरे मन भायो

राग भैरवी ताल धुमाली

तुमरी सेवा, तुमरा साधन, राम करूं मैं नित ही तेरा
ऊठत बैठत सोवत जागत, कभी न छोड़ूं पलड़ा तेरा
सांस सांस हरिनामहि सिमरूं, हिरदय नाम बसे मन आय
दान कियो प्रभु ठाकुर मोहे, सेवक सदा चरण का तेरा
पावत जीव वही सुख मनहिं, गुरु-उपदेश, राम गुण गाए
सर्व- कला परवीण वही जन, सिमरन सदा भजनवा तेरा
नानक ता बलिहारी जाऊं, कलिजुग जा ने नाम पछाना
तीर्थ शिवोम् प्रभु बनवारी, चरण-शरण यह मनवा तेरा

राग आसावरी ताल भजनी ठेका

भगत ज्ञानी योगी ध्यानी, केवल बात बनावें
पारब्रह्म चीन्हन को नाहीं, चर्चा समय गवावे
अहंकार बौराये सब ही, जाने किसे न कुछ भी
जहां जात वह घूम फिरत है, मौत साथ ले जावे
गर्व वृथा सन्मान तियागो, नानक देत सलाय
मृत्यु द्वारे आन खड़ी है, वेल वृथा ही जावे
तीर्थ शिवोम् भजन कर बंदे, जीवन अति अमोलक
मूढ़ जीव पर सुनत है नाहीं, विषयन पाछे जावे

राग आभोगी ताल केहरवा

हरि बिछुड़े मन लागत नाहीं, आश मिलन की मन पतियावे
चरण-कमल रस पान करन को, बार-बार मन हुई हुई आवे
जा को प्यास तुम्हारी लागी, राग-द्वेष मन ठहन न पावे
जा को बिसरा प्रीतम पिआरा, जग डूबे, वह मर ही जावे
हौं पेखत सद निकटे साजन, तन मन ताही अर्पन कीना
बिआपक सर्व नियन्त सुआमी, वोही कर्ता, मन तिस जावे
नानक शरण पड़ा प्रभु तेरी, चरणीं मस्तक सीस नवावे
तीर्थ शिवोम् प्रभु गुण गाए, अवर नहीं मन कबहूं जावे

राग यमन कल्याण ताल झूमाली

भक्त जनां हरि मिलन की आशा
कब मिलसी मेरा प्रीतम आए, एक यही अभिलाशा
हे भगवन्ता, तू बे-अन्ता, महिमा अपरम्पारा
चरण तिहारे कब उर धारूं, एक यही बस आशा
तीर्थ शिवोम् नाम हरि जप ले, नानक कहत विचारे
कमल-चरण हिरदय में राखे, बाकी सकल तमाशा

राग तिलंग ताल-धुमाली

वन-वन नगर नगर तू भटका, हर्ष बहु मन चाओ
अब तो चालो राम धाम को, बिरथा नहीं गवाओ
सत्संगत आनन्द उठाओ, आतम लाभ कमाओ
मन में राख उमंग पिया की, आशा मिलन जगाओ
माया त्रिगुणी मोहित करती, का से कहूं मैं पीरा
किए उपाय लाख अनेकों, याद प्रभु मन लाओ
नानक कहत बात है मन की, साध संग कर वासा
तीर्थ शिवोम् राम भज बंदे, हर्ष-हर्ष गुण गाओ

राग पीलू ताल केहरवा

राम धुन अच्छी मन को लागे
चरण-कमल जो ध्यान धरत हैं, भाग तिन्हां घर आये जागे
धोवत पाप सकल मन अपने, नाम जपन सों, नाम ध्यान सों,
पाप ताप अंकुर सब काटे, परमारथ पथ जावे लागे
पावत मुकती ता ही संता, लेखा मस्तक पर जो होई
ज्ञान-ध्यान का पैण्डा भारी, भाग होय तब ही पग आगे
नानक करत विचार गुणों का, प्रभु शरण का, नाम जपन का
तीर्थ शिवोम् प्रभु की शरणीं, मन से, तन से, तृष्णा भागे

राग दरबारी कान्हड़ा ताल त्रिताल

प्यास प्रभु दर्शन की मोर
ऐसी लागी, मन में जागी, सकत इसे मैं नाहीं छोर
मोर सब कुछ मोरा प्रीतम, पति, पिता, गुरु, स्वामी
राखे प्रीत जगत में जो जन, राख पड़े सिर, कुछ न होर
नानक उदित होय जब भागां, आए मिलत प्रभु किरपाला
तीर्थ शिवोम् कृपा की वर्षा, रहत अनन्दित मनवा मोर

भक्त शिरोमणि तुकारामजी

राग दुर्गा ताल भजनी ठेका

जो जन होत पराये शत्रु, होवत ऐसा प्रभु कृपा से
मनवा शुद्ध जो होवे अपना, कष्ट टलत हैं प्रभु कृपा से
त्यागें हिंसा सर्प सिंह भी, कहें न कुछ भी जन को वह भी
होवत हित ही भक्त जनन का, विष अमृत हो प्रभु कृपा से
दुर्व्यवहार करें जो दूजे, लेत हैं शिक्षा नीति की जन
दुख देत, फल अनुकूला ही, अग्नि शीतल प्रभु कृपा से
तुका होय मन निर्मल जा का, सगले करते प्रेम उसे हैं
अन्तर भाव सभी के एको, भाव प्रकट हो प्रभु कृपा से
तीर्थ शिवोम् हुआ यह अनुभव, दया प्रभु की, विपद घड़ी में
हो अनुकूल सभी प्रतिकूला, बिगड़त संवरे, प्रभु कृपा से

राग चारुकेशी ताल भजनी ठेका

दयामयी हे मैया मोरी, छाया- छत्र तुम्हीं हो मोरी
इतनी जल्दी बालवेश में, आई दौड़ी मैया मोरी
अपना सुन्दर रूप दिखाया, समाधान मन सभी कराया
हिरदय मोर कराया शीतल, प्रिय अति ही, मैया मोरी
आए संत, चरण जो लागे, उन भगतन से टहल कराई
कष्ट दिया मैं तुम्हें घनेरा, करो क्षमा हे मैया मोरी।
यही एक दुख मन है मोरे, बिरथा कष्ट दिया क्यों तोहे
तीर्थ शिवोम् हुआ शरणागत, कष्ट न फिर दूं मैया मोरी

राग पहाड़ी ताल केहरवा

मन का भाव जान कर मेरा, दिया बताए सही उपाए
सरल मंत्र भी वही बताया, निर्मल मन मेरा हो जाए
यह मारग ही चले अनेकन, संत जनों भव उतरे पारा
ज्ञान - अजान शिष्य जो जैसा, मारग वही गुरु बतलाए
भिन्न - भिन्न अधिकार है सब का, मारग सब का एक हो कैसे
कोई, नदी उतार पह होए, तो ही जन को पार कराए
कोई संगी साथ लिए बिन, पार सकत है जाए नाहीं
कोई नाव सहारा ले कर, नदिया पार उतर ही जाए
तुका और है कोई ऐसा, बे- परवाह पार कर जाए
तीर्थ शिवोम् शिष्य हो जैसा, गुरु से वैसा साधन पाए

राग जोग ताल धुमाली

लोक संग से आलस बढ़ता, भजन नहीं हो पाता कुछ भी
देख देख छल- छंद जगत के, चकित होत, न होता कुछ भी
चाहत छंद गोबिन्द हरि का, पड़े जाल में, इन के नाहीं
मन निश्चल एकान्त रहे जो, संसारी हित-बोध न कुछ भी
जानत शत्रु प्रेमी जन को, अच्छी बात लगे तिन कड़वी
ऐसे बहिर्मुखी जीवों को, दुख ही होत, सुफल न कुछ भी
तुका लगे अब यह ही अच्छा, भले अकेले, मौन ही रहना
सुख एकान्त कहा न जाए, चंचलता मन होत न कुछ भी
तीर्थ शिवोम् करे जो अनुभव, एकल सुख का, मौन होय का
फिर वह फसे नहीं जग माहीं, रुचिकर उसे न जग में कुछ भी

राग जोगकंस ताल अद्धा

कृपा मिली कि नाहीं मोहे, यह तो मन मेरा न जानत
कृपा होत, होता उद्धार मैं, क्या मैं हूं, यह मैं न जानत
काम क्रोध मन लोभ समाया, यह तो लक्षण कृपा नहीं है
मन आनन्द नहीं क्यों मेरे, तुम ही जानत, और न जानत
कृपा करी दूजन पर स्वामी, मुझ पर करत नहीं हो काहे
काहे देर लगाई मोहे, तुम को छोड़, कोई न जानत
जग में फसा तुका है जाए, करत जतन पर निकल न पाए
कैसे हो छुटकारा मोरा, तुम ही जानत, मैं न जानत
तीर्थ शिवोम् प्रभु बनवारी, मैं बलहीन बना लाचारा
एक आस तुमरी ही राखूं, और कछु भी मैं न जानत

राग हंसध्वनि ताल भजनी ठेका

अन्तर्भाव है कैसा मोरा, विदित हो गया है यह मोहे
कुछ भी कीना प्रेम तेरे बिन, भक्ति-फल भी मिला न मोहे
केवल कष्ट दिया जीवों को, अक्षर जोड़ दिखाई कविता
अन्तर में कुछ हाथ न आया, परमारथ तो मिला न मोहे
लोगन कहें मिलत भगवाना, पर दुख ही मैं रहा भोगता
कहे तुका भगवान मिला न, जग का सुख भी मिला न मोहे
तीर्थ शिवोम् रहा लटकाना, रहा इधर न, उधर गया मैं
बीता जीवन बिरथा मोरा, प्रभु प्रेम भी मिला न मोहे

राग भटियार ताल रूपक

पेट भरने का ही धंधा, रह गया मेरे लिए
नाम न भगवान का कुछ, ही नहीं मेरे लिए
मैं तेरा प्रेमी कहाऊं, पर जगत पाछे चलूं
क्या लिखा मस्तक पह मेरे, क्या बना मेरे लिए
जी रहा है छटपटाए, अमन तो मन को नहीं
जोड़ता अक्षर रहूं मैं, क्या यही मेरे लिए
दे बता दे, तू बता दे, अर्ज़ करता है तुका
क्यों करूं मैं, मैं करूं क्या, क्या लिखा मेरे लिए
दिल मेरा घबरा गया है, अब तो मेरा ऐ शिवोम्
सूझता कुछ भी न मोहे, तू ही इक मेरे लिए

राग भीमपलासी ताल भजनी ठेका

कागद पढ़ पढ़ जो भी समझा, वही बताया लोगन को
मेरे मन की बात न बैठी, वृथा बताया लोगन को
गायन में जो बोल थे सीखे, रहा सुनावत लोगन को
पर अन्तर में रस न आया, रहा रिझावत लोगन को
मन राखें संकल्प अनेकों, बिना विचार न मन मेरा
लिए तिहारे क्या है करना, रहा बतावत लोगन को
अब लौं तुका नहीं मन भीगा, अब लौं प्रेम प्रभु नाहीं
अब लौं पिण्ड जगत न छूटा, रहा भ्रमावत लोगन को
तीर्थ शिवोम् हरि-हर मेरे, कब लौं भ्रमित रहूं फिरता
अब तो कृपा करो हे स्वामी, पास न कुछ भी बोलन को

राग भोपाली ताल केहरवा

वाद-विवाद करे जो निन्दा, कपट दम्भ जो जन रस लेता
ता का संग किए दुख पायो, विषय वासना मन भर देता
सत् का संग मिला जब मोहे, दिया गवाय जगत कमाया
जग में प्रेमी सदा विराजें, संत पाए मन दुख तज देता
तुका भया मन सुख आनन्दा, नाच गाय हरि कथा सुनावें
श्रवण करे जो गान प्रभु का, प्रेम हृदय, मन थिर कर लेता
हरि दास जब मिलत परस्पर, पाप-ताप सगला छुट जावे
चरण छुए हरि, संत-जनों के, मन-संताप सभी भग लेता
तीर्थ शिवोम् मिलत सौभाग्य, सत संगत का, हरि कथा का
नाचत गावत संत जनों संग, प्रेम-प्रभु अन्तर भर लेता

राग दरबारी कान्हड़ा ताल भजनी ठेका

संत-चरण-रज जहां पड़त है, बीज-वासना जात जलत है
राम के नाम रुचि मन जागे, घड़ी-घड़ी सुख जात बढ़त है
कण्ठ प्रेम से गद्गद् होता, नयनन प्रेम से नीर बहत है
नाम-रूप हिरदय में परगट, सुलभ यह साधन भाव-चढ़त है
अन्तर अनुभव कीना मैं ने, संत चरण रज करत है क्या क्या
ऐसा सुख पाया मन माहीं, दुख न होवत, जात गलत है
हरि दासन का दास हुआ मैं, मन, तन और कर्म वाणी से
हरि दासन संग प्रेम भरा है, दुर्बुद्धि सब जात गलत है
तुका सुफल जीवन का पाया, मन आशा जो रही पुरानी
तीर्थ शिवोम् चरण-रज पाई, संशय सब ही जात गलत है

राग तोड़ी ताल धुमाली

वाणी मेरी प्रभु समर्पित, इच्छा केवल पाण्डुरंग की
जाए बहत प्रेम की धारा, सेव करूं तो पाण्डुरंग की
वाणी केवल हरि लिए है, दूजा न उपयोग कहीं भी
कहना सुनना एक हरि ही, बात करूं तो पाण्डुरंग की
होत पवित्र अन्न है वो ही, जा का भोग हरि चिन्तन में
भोजन स्वाद रहत है ताहीं, याद हो जा में पाण्डुरंग की
तुका नहीं मो वाणी ऐसी, वर्णन करूं छवि तेरी का
छवि तिहारी जानत तू ही, बात करूं क्या पाण्डुरंग की
तीर्थ शिवोम् हरि-मुख ऐसा, सुख ही दाते, सुख ही देवत
सुख की प्रतिमा, दुख हर लेवत, उपमा नाहीं, पाण्डुरंग की

राग जयजयवन्ती ताल भजनी ठेका

चमत्कार है ये ही जग में, जिस ने मन को वश कर लीना
कर असवारी मन पर जिस ने, मारग सीधे, मन धर लीना
विषयन ओर है दौड़त मनवा, ऊंच नीच न देखत कुछ भी
हाथ लगाम कसी है जिस के, मन-रथ उस ने सरपट कीना
वही सूरमा है इस जग में, जो रथ पीछे खेंच सकत है
छोड़ भटकना जग विषयन में, अन्तर्मुख मनवा कर लीना
प्रभु-कृपा ही होत सहायक, प्रभु-कृपा ही एक कृपा है
अपना जतन सफल तब होवत, तब ही मनवा वश कर लीना
कहे तुका जा जतन है साचा, साची किरपा पाई उस ने
तीर्थ शिवोम् 'वही जन साचा, करतब साचा जिस कर लीना

राग भीमपलासी ताल धुमाली

आदर सेवा आस करें जन, पर यह द्वार नरक का भाई
धरती पर पटका कर मारें, नहीं काम यह जन का भाई
कर्ता हर्ता एक प्रभु ही, गर्व भाव को थान कहां है
जो अभिमान करे नर मूरख, लाभ न कोई उस का भाई
जैसे होत सत्य यह परगट, इच्छा-मान विलीन सभी ही
विमुख होत पाने से आदर, मन आनन्दित उस का भाई
कहते लोग तुका है संता, पर संतोष न इस से कोई
चित्त सदा ही विकल रहे है, दूर रहत हित उस का भाई
तीर्थ शिवोम् कोई सुख नाहीं, न पुजने, न पुजवाने में
अपना आप रहो सम्भाले, रहने दो जग जिस का भाई

राग भैरवी ताल दीपचन्दी

नाम महिमा, जोश में, मैं ने बखानी बहुत है
रस मिला मुझ को नहीं कुछ, सुख से तूका दूर है
महिमा अपनी अब दिखाओ, राख मन अवगुण नहीं
दास जानो मुझ को अपना, चरण से वह दूर है
तुम को ही हूं जानता, दूजा कोई भाता नहीं
नाम तेरे को ही लागा, जग तो एक फितूर है
आ बसो, आ मन में मेरे, रास्ता देखूं तेरा
सुख नहीं, न याद तेरी, मन से जो काफूर है
अब नहीं तड़पाओ मोहे, शरण में तेरी शिवोम्
तड़प बस तेरे दर्स की, दर्स ही में नूर है।

राग धानी ताल धुमाली

षठ, पाखण्डी, धूरत होय, मुख सों नाम- हरि जन लेवे
मन तन से मैं दासा ता का, सतसंगत में जो मन देवे
ऊंचा कुल हो, नीच कुलीना, यह विवेक मेरे मन नाहीं
मैं ताही के चरण पड़त हूं, हिरदय प्रेम-हरी भर देवे
ता ही जन है सब से ऊंचा, हरि का नाम लेत मन माहीं
अवगुण ताहीं सब भुल जावें, चित्त प्रभु-चरनन कर देवे
तुका जात बलिहारी ता जन, बदकारी संसारी कुछ भी
मैं तो राम नाम ही जानूं, अन्तर मल बाहर कर देवे
तीर्थ शिवोम् नाम सुख दायक, देत मिटाये सब दुर्गुण को
राखत राम नाम उर प्यारे, मन सुख देअ, पार कर देवे

राग पीलू ताल दादरा

नाम लेत मन शीतल होय, लागत झरने मुख सों अमृत
रंग हृदय तुमरे ही रंग सों, होवत पान नित्य ही अमृत
ऐसी कृपा भयी मो विट्ठल, चढ़ा नशा हरि नाम का मनहिं
मनवा लागा चरण तिहारे, कुछ न पान करूं बिन अमृत
बैठत, खेलत, धावत, खावत, गात सदा ही नाम तिहारा
सभी क्रिया में संग प्रभु का, बरसत रहत सदा ही अमृत
इन्द्रिन भूख मिटत जावत है, सिमरन चिन्तन चलत निरन्तर
ऐसा रस जो पड़त हृदय में, छाया रहत सदा ही अमृत
तुका नाम से काल है जावत, बाकी बचत नाम का चिन्तन
तीर्थ शिवोम् धन्य हरि नामा, बांटत रहत सदा ही अमृत

राग काफी ताल केहरवा

देहनिरास नहीं हो जब लौं, जग- बुद्धि भी जात नहीं है
तब लौं जीव बना संसारी, आतम- लाभ भी पात नहीं है
संसारी न संत कहावे, लोभ बड़ाई इच्छा मन में
वेष बहिर साधु का होवे, अन्तर तृष्णा जात नहीं है
मणि समान है ओला-चमकत, मणि नहीं वह केवल-चमकत
ऐसे संत दिखावा केवल, करत-धरत कुछ आत नहीं है
तुका प्रभाव नहीं मन इन का, न उपदेश लेत ही इन से
आप जो डूबा, तारे कैसे, आपुन तरना आत नहीं है
तीर्थ शिवोम् प्रभु भगवन्ता, ऐसे संत, बचाओ मोहे
चरण तिहारे थाम लिए हैं, और कहीं मन जात नहीं है

राग छायानट ताल धुमाली

ज्ञानी जन में खोजत थाका, मिला न हरि कहीं भी
अहंकार का सकल पसारा, न हरि-ज्ञान कहीं भी
पाठी-वेद याग यग लागे, राग द्वेष ही डूबे
इक दूजे को देत पटखनी, न हरि राम कहीं भी
निष्ठा आतम देखन चाहूं, उलटा सब ही दीखे
स्वार्थ निष्ठ देखा जग सारा, निष्ठा राम कहीं भी
योगी देखे, ध्यानी देखे, पर मन चंचल ताहीं
तुका एक पर एक झपटता, न भगवान कहीं भी
तीर्थ शिवोम् राम मैं पाऊं, चरण तिहारे माहीं
जग को छोड़ चरण उर धारे, न आराम कहीं भी

राग भीम पलासी ताल केहरवा

चालो चालो मनवा चालो, पंढरपुर को अब तो चालो
पंढरपुर में सुख घनेरो, छोड़ वासना, अब तो चालो
कब लौं रहे जगत में लागा, कब लौं विषयन माहीं पागा
कब लौं देखत प्रभु ओर न, तुम्हें बुलावत, कृष्णा कालो
सुख को पालो, अणंद मना लो, त्याग भटकना, मन ठहरा लो
पंढरपुर में सीस नवालो, प्रेम प्रभु का अब तो पा लो
तुका चलेगा संग ही तोरे, प्रभु मनाने, प्रभु रिझाने
अंधकार से निकलो अब तो, ओर प्रकाश कभी तो चालो
तीर्थ शिवोम् करत यह विनय, हरि-भक्तन से, सीस नवाए
एक जगह पर बैठे मनवा, शरण प्रभु भी अब तो पा लो

राग अहीर तोड़ी ताल रूपक

गिड़गिड़ाए जात हूं मैं, तुम हृदय पाथर किए
तुम पर कोई भी असर न, क्यों रहे चुप्पी लिए
मन मेरा भागा ही फिरता, भव में जाए डूबता
तुम इधर न देखते भी, भांग हो जैसे पिए
इस विकलता में ही शायद, बीज जय मन का छिपा
इस लिए सुनते नहीं तुम, मौन साधे इस लिए
हे प्रभु देखो तुका अब, विकल, होता जा रहा
अब तो आओ, मन को रोको, जो सदा भागा किए
निकल पानी सिर गया है, अब विनय यह ही शिवोम्
मन तेरी चरणीं पड़ा हो, यह ही इक आशा लिए

राग हिन्डोल ताल केहरवा

लोग पाछे क्यों भटकत हो, दोन मुखी तलवार यह लोगन
बोलत एक बात कभी दूजी, दुविधा देत है डालत लोगन
जो प्रपंच, तो कहते दोषी, छोड़ो सब, तो कहें आलसी
नियम संयम, तो आडम्बर, छोड़ो कहें, भ्रष्ट ही भोगन
करत कोई सतसंग कीरतन, बोलें भक्त बड़ा ही बनता
नहीं सतसंगत, कहें अभागा, जो मुख आवें, कहत हैं लोगन
निर्धन कहें दरिद्र तुका है, धनिक कहें उन्मत्त बना है
मिलत नहीं कुछ, पाछे चाले, छोड़न अच्छा ऐसे लोगन
तीर्थ शिवोम् प्रभु ही ऐसा, बना एक रस नित्य जो रहता
सो ही सिमरो, ताहे ध्याओ, मिलत नहीं कुछ पाछे लोगन

राग चन्द्रकौंस ताल त्रिताल

लागत भक्त प्रभु मन प्यारा
प्यारा नाहीं जग को होए, होय प्रभु का वह इक तारा
माया जाल फसो मत भाई, काल ग्रसन चाहे ही तोहे
हरि धिआओ, नाम कमाओ, कहन दो पागल, जग मतवारा
निर्जन बन ही वास करो तुम, प्रभु भक्त, दोनों ही केवल
नहीं सताए जग भी तुम को, रमे रहो, हरि अपरम्पारा
तुका करत सब निन्दा ता की, हर्षित भक्त हृदय में होवत
नहीं चाहिए कुछ भी जग सों, जग केवल दुख देवनहारा
तीर्थ शिवोम् जगत जा त्यागा, वह ही चाला पंथ प्रभु के
वह ही होवत प्रिय प्रभु को, जिस ने भी अपना मन मारा

राग खमाज ताल धुमाली

मायातीत प्रभु-चरणों में, बैठ आनन्दित हो मन अपने
कहत हृदय की, सुनत हरि की, राखे खोल ही वह मन अपने
रवाया पीया जात पचत जो, बार बार वह रुचिकर होता
सुख एकान्त हृदय में बैठा, अच्छा लागत वह मन अपने
उचटा मन लोगन संग ऐसा, इच्छा हो न किसे मिलन की
जग-बुद्धि भी रही न मोहे, मनहिं हर्षित हो मन अपने
तुका नहीं अब चिन्ता कोई, रस यह मधुर अकेलेपन का
नित आनन्द भया मन माहीं, यही स्वभाव भया मन अपने
तीर्थ शिवोम् हे पांण्डुरंगा, अब न मोहे डाल जगत में
जग से तो मन ऊब गया है, रहने दो खुश अब मन अपने

राग बिलावल ताल केहरवा

ऐसा लागे मन में मोहे, वक्त मो सम और न कोई
पारंगत मैं वाद-विवादा, मो सम बुद्धिमान न कोई
पाण्डुरंग सर्वज्ञ उदारा, कुछ परिहार करो प्रभु मोरा
खाए जात अहम् मोरा मन, मुझ सा दुखिया और न कोई
काम क्रोध न छोड़ा आसन, जमे ही बैठे, मन के माहीं
अहंकार आ धमका ऊपर, तेरे सम बलवान न कोई
भार तुका पर अब न कोई, विनय करी मैं तुमरे आगे
मोरा काम तुम्हीं अब जानो, तुम सा जाननहार न कोई
तीर्थ शिवोम् मेरे भगवंता, और तेरी ही मो इक सूझे
हौं तो पड़त तेरे ही पैंया, तुम सा राखनहार न कोई

राग देस ताल धुमाली

कथनी - पढ़नी से क्या होगा, करनी बिना वृथा सब जाए
करनी में जो ज्ञान न उतरे, काम का न वह, वह सब जाए
मुख सों अमृत-वाणी निकलत, पर मनवा तो बहुत दुखी है
वह वाणी किस काम की वाणी, काम न आए, धुल सब जाए
कौड़ी कौड़ी कर के जोड़े, गाड़ के राखे, खेत में ताहे
दूजे ही धन ले जावत हैं मिलत कछु न, खो सब जाए
तुका वन्दना करता ता जन, आप किया सो आप ही खाए
करमन की गति बड़ी अनूठी, आप मुए, छूटत सब जाए
तीर्थ शिवोम् प्रभु बनवारी, करनी - कथनी एक कराओ
किया धरा बिरथा न जाए, आशा - तृष्णा अब सब जाए

राग बिहाग ताल केहरवा

नाम गाता मैं हरि का, झूम उठते लोग सब हैं
नाच उठते, डोल उठते, बुत बने से लोग सब हैं
लागती नीरस यह वाणी, मुझ को अपनी, जो मैं गाता
प्रेम न उस में प्रभु का, न ही डूबें लोग सब हैं
न कृपा का चिह्न कोई, न ही आसन ही रमा है
है दिखावा सब यह लगता, कुछ न पाते, लोग सब हैं
न तुका मिलता कोई रस, न हृदय ही भीग पाता
ना ही मन निर्मल है होता, देखता बस, लोग सब हैं
वैखरी केवल न आदर, सुन प्रभु मेरे शिवोम्
कर कृपा भक्ति परा की, मैं रंगूं संग लोग सब हैं

राग कामोद ताल अद्धा

मान चतुर बैठा अपने को, हिरदय भाव नहीं है कोई
केवल गर्व भरा मन मेरे, लक्षण भक्त नहीं है कोई
अब तो कूप गिरन ही बाकी, मन में बैठे क्रोध लोभ मद
खोजत औरन गुण दोषन को, दीखत अपना न है कोई
तुका करत उपदेश जगत को, अवगुण एक हटा न पाया
क्या है गति, थिति है मेरी, सद्मारग है पग न कोई
नाच गान गुण-हरि करत हूं, पर पाथर सा हिरदय मोरा
दे पिघलाए पाथर को भी, नहीं प्रेम मन उदित है कोई
तीर्थ शिवोम् करत हूं बातां, प्रभु मिलन की, हरि विरह की
प्रेम से नृत्य न होवत मो से, मन न प्रेम भरत है कोई

राग दरबारी ताल भजनी ठेका

बुलवाते जैसा प्रभु तुम हो, अनुभव वैसा आत नहीं है
कैसा बना विडम्बन, उलझा, समझ यह मेरे आत नहीं है
मीठा हो, पर नहीं मिठासा, फिर मीठा काहे का मीठा
हुआ श्रृंगार, नहीं पर प्राणा, जीवन मानत आत नहीं है
स्वांग धरा, तन्मयता नाहीं, रूपवान, पर हो गुण हीना
सम्पत्ति पर संतति नाहीं, फिर आनन्द तो आत नहीं है
तुका हाल ऐसा ही मेरा, लोगन कहत हैं निज अनुभव न
अन्दर प्रेम न दीखत कोई, बातन इन में सार नहीं है
तीर्थ शिवोम् जो हो बदनामी, तो ही क्षीण गर्व यह होवे
साधु मान करत जन सेवा, सेवा लेन का हाल नहीं है

राग दरबारी ताल भजनी ठेका

परले पार प्रभु जी मोरे
रस्ता मिलत, न लांघ सकूं मैं, क्योंकर दर्शन पाऊं तोरे
दुस्तर घाट यह बैरिन का है, काम क्रोध ने रोका मारग
कैसे निकलूं, मैं बच भागूं, सूझ परत कुछ भी न मोरे
दुखी हुआ इस मन के कारण, रख्या भगाय, रख्या नचाय
तुम ही रोक सकत हो इस को, बीच खड़ा जो मोरे तोरे
तुमरे रोके रुकत नहीं यह, यह लागत अचरज है मोहे
यह विकार, यह जगत भुलावा; खड़े रहें क्या संमुख तोरे
तुका पड़ा आ शरण तिहारी, पिण्ड छुड़ाओ इन से मोरा
तीर्थ शिवोम् नहीं है दूजा, एक सहारा तुम ही मोरे

राग भैरवी ताल केहरवा

ऊंच नीच प्रभु देखत नाहीं, केवल मन का भाव ही देखत
ब्राह्मन बनिया शूद्र कोई भी, प्रभु एक बस प्रेम ही देखत
प्रेम को जानत एक प्रभु ही, बाकी सब ही प्रेम दिखावा
जीव बेचारा मोह में डूबा, जग को रहत सदा ही देखत
नीच को ऊचा कर दे भक्ति, नीच को लेत सवारे भक्ति
कूप से नीच निकाले भक्ति, भक्ति सार-प्रेम ही देखत
तुका तुम्हरी धन्य है लीला, धन्य प्रभु सब भक्त तिहारे
धन्य तुम्हारा प्रेम का नाता, धन्य जनन करते ही देखत
तीर्थ शिवोम् धन्य प्रभु भक्ति, नीच ऊंच सब पार उतारे
नीच ऊंच को, ऊंच नीच को, सब को ही प्रभु सम कर देखत

राग सिन्ध भैरवी ताल केहरवा

मन निरोध का जतन करत हूं, पर विकार तो जात ही नाहीं
आप रहे मन में जो होते, विषयन अन्दर आत ही नाहीं
विषयन द्वार बहुत ही दुस्तर, अन्दर आत तो निकलत नाहीं
अन्दर करत उपद्रव नित ही, पल भर बैठन आत ही नाहीं
मन इन्द्रिन का मेल पुराना, युगों युगों से बाहर खुलता
ता से विषयन अन्दर आवें, मन निरोध होवत ही नाहीं
श्रवण मनन साधन जितने भी, मन है जाता भूल सभी को
ज्यों ही विषयन सन्मुख आवें, संयम रख पाता ही नाहीं
आप करो निस्तारा प्रभु जी, तुका विराजो मन के माहीं
तीर्थ शिवोम तो कर न पाए, किए मोर कुछ होत ही नाहीं

राग शिवरंजनी ताल धुमाली

अंगीकार करो प्रभु मोरे, मन से हूं घबरा गया
भक्तपन, भगवानपन, दोनों पर संकट आ गया
तुम को तो सब ठीक है, तुम सर्व शक्तिमान हो
मैं कहां जाऊं, करूं क्या, मैं तो हूं बौरा गया
बैठता हूं जब अकेला, मन नहीं इक ठौर है
देह की हालत हुई यह, देखा सुख, मन आ गया
जीभ मेरी बन चटोरी, मांगती पकवान है
नीन्द और आलस बढ़े हैं, मन नशा सा छा गया
अब निराशा ने मुझे, आ कर पकड़ ही है लिया
है तुका बेकार में, जीवन बिता अपना गया
लाज रख मेरी प्रभु अब, है विनय ये ही शिवोम
लाज तेरी पर भी है, संकट का बादल आ गया

राग वृन्दावनी सारंग ताल केहरवा

अन्दर क्या क्या दोष भरे हैं, कुछ भी छिपा नहीं मो से
पर अपना मन काबू नाहीं, कुछ भी होत नहीं मो से
मुख से बहुत करत हूं बातें, पर करता कुछ और रहा
काय करूं, कुछ सूझत नाहीं, मन वश होत नहीं मो से
इन्द्रिन मन हो एक इकट्ठे, लगे झगड़ने मुझ इक से
बन मध्यस्थ, दया हो मो पर, दूर हरें दोषन मो से
मोरे अवगुण दीखत मुझ को, पर वश चलत नहीं कुछ भी
नारायण आ, बीच में जाओ, रूठ रहे हो क्यों मो से
तुका होत वाणी करने को, पर करना तो कठिन बड़ा
तीर्थ शिवोम् बना आधीना, हाथ छुड़ाओ न मो से

राग भिन्नषडज ताल दीपचन्दी

जैसा कैसा भी हूं तेरा, अपना लो, मो को, प्रभु मोरे
दया सिंधु जो नाम धरो हैं, सत कर दिखलाओ प्रभु मोरे
मन को रोको, मन को मारो, बिनती कितनी करी प्रभु से
वह तो रुकत तनिक भी नाहीं, साधे मौन रहे प्रभु मोरे
दयासिंधु चुप-चाप ही बैठा, मुंह तक अपना खोलत नाहीं
नहीं हुआ कुछ मन का अब लौं, तुम हो सुनत नहीं प्रभु मोरे
मनवा विषयन पाछे तूका, मानत नहीं मनाने से भी
लिए पतन की ओर जात है, अब तो सुन लो हे प्रभु मोरे
तीर्थ शिवोम् दिखाई दे न, कोई जो मन अंकुश राखे
एक घड़ी भी ठहरत न वह, काय करूं मैं, हे प्रभु मोरे

राग बिहाग ताल केहरवा

दोषन अपने, अपने अवगुण, जो देखूं तो लाभ इसी में
क्या जग दोषन देखन राखा, होत न सुख, दुख जान इसी में
करत उपाय जग तरने का, इस में जग का क्या है जाता
अपना लाभ सभी जन देखें, रहत जलत संसार इसी में
काय पड़ी है मेरी जग को, जग से मुझ को भी क्या लेना
अपना देखो, लाभ विचारो, परमारथ का लाभ इसी में
सिमरें नाम या सोऽहं घर में, अन्तर भी को या न कोई
लाग तुका हरि नाम धिआने, होवत मन कल्यान इसी में
तीर्थ शिवोम् प्रभु भगवन्ता, करत विनय हूं चरणों तुमरे
दोष पराए न मैं देखूं, नाम जपूं, सुख-धाम इसी में

राग कामोद ताल केहरवा

मैं हूं भजन करत प्रभु तोरा, तो भी मन विक्षेप बने है
क्या मैं करूं, करूं क्या नाहीं, कुछ भी सूझत नहीं बने है
न मैं जानूं कागद पन्ने, न ही जानूं वेद पुराणा
मैं तो नीच रहा अंजाना, कुछ भी नाहीं ज्ञान बने है
कहत कोई तुम निराकार हो, नित्य, अरूप, अगुण, अविनाशी
भजन गात काहे को तुम हो, कहत न कुछ भी मोर बने है
भजन करूं या नहीं करूं मैं, देओ तुम्हीं बताए मोहे
करत भला, जग लगत बुराई, बुरा सभी से तुका बने है
तीर्थ शिवोम् कुशल जन कलियुग, भजन करत जो उसे सतावें
यह संशय मन मोर भी जागा, भजन करूं या नहीं बने है

राग बागेश्वरी ताल रूपक

पाप की गठड़ी बना मैं, सेव चोरी करना लागा
दण्ड दो मोहे प्रभु जी, पाप संचय करन लागा
फैंक दो अभिमान मेरा, धूर्त बन सेवा कराता
न तेरा, संसार का ही, बीच गोते खान लागा
है कोई अधिकार नाहीं, लेन सेवा का मुझे है
पर मेरा अभिमान जागा, लेन सेवा मैं हूं लागा
अब तुका तो कर गया है, पार सीमाएं सभी ही
इस लिए मन करत चिन्ता, क्यों मैं सेवा लेन लागा
कुछ नहीं बिगड़ा है तेरा, संभल जा अब भी शिवोम्
शरण ले विट्ठल प्रभु की, मन तेरा चरणीं ही लागा

राग मारू बिहाग ताल कैहरवा

देव हैं समझत लोग मुझे सब, यह तो बड़ा अधर्म हुआ
लोगन को यह क्या है सूझी, यह तो बड़ा अनर्थ हुआ
सीस झुका है सन्मुख तेरे, खड़ग है तेरे हाथों में
काट डाल इस सिर को धड़ से, कुछ तो मेरा काम हुआ
जैसे लोग हैं पूजत मोहे, मेरा को अधिकार नहीं है
मन तो जानत, क्या मैं बनया, संचित क्या क्या क्रम हुआ
तुका देखता बाहर जग ही, मन जानत बातें मन की
अपने मन की काय कहूं मैं, योग सफल यह नहीं हुआ
तीर्थ शिवोम् हे कृष्ण मुरारी, पाप कर्म अब छुड़वाओ
जैसा हूं रहने दो मोहे, विनयशील मैं यही हुआ

राग जोगिया ताल केहरवा

गुण तो गात गात हूं तेरे, हिरदय में तो भाव है नाहीं
शोभा कारन जग में केवल, ढोंग करत पर चाव है नाहीं
करत हो पावन दीन पतित को, सत कर राखो बात इसी सो
पतित दुआरे आया तुमरे, विनय करत पर भाव है नाहीं
मुख से तो मैं दास कहाऊं, पर मन विषयन माहीं लागा
माया लोभ भरा अन्तर में, चरण तिहारे भाव है नाहीं
तुका दिखाऊं वेष मैं जैसा, अन्तर वैसा तेरा नहीं है
तुम ही एक हो राखनहारे, दूजा जग में भाव है नाहीं
तीर्थ शिवोम् विनय हरि आगे, लेत उबारत क्यों न मोहे
सेवक मैं तेरा तो ही हूं, अब तो मन में भाव है याहीं

राग धानी ताल केहरवा

सेव किए बिन दास कहाऊं, करत कपट मैं पेट भराऊं
झूठ न चाले आगे तुम के, झूठ-मूठ मैं भगत कहाऊं
करूं दिखावा भगत बनन का, अन्तर भाव द्वेष का राखूं
लोभ पाल कर राखा मन में, बाहिर उदार बड़ा बतलाऊं
यह जग अच्छा लागे मोहे, खिंचा उसी में और ही जाता
बाहर बाहर त्यागी बनता, मन में कुछ, पर कुछ दिखलाऊं
तुका मेरा क्या होगा विट्ठल, कैसे हो निस्तारा मेरा
डूबत जात हूं नदिया गहरी, क्या मुख मैं तुम को दिखलाः
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, करनी कथनी अन्तर कैसा
क्यों मैं बीच फसा माया के, क्यों न तुमरा नाम धिआऊं

राग सारंग ताल केहरवा

कविता करे बड़ा परिवारा, वेद पाठ तप तीरथ सोहे
प्रेम-प्रभु जौं लगि मन नाहीं, प्रभु-भक्त जन नाहीं होवे
यह तो है सब बुद्धि कौशल, प्रेम प्रकट हो हिरदय माहीं
जब लौं हिरदय नहीं खुलत है, गिनती भक्तन नाहीं होवे
सुत दारा इत्यादि पाछे, लागा मनवा जब लौं जग में
कर्म-चक्र ही रहे घूमता, प्रभु-चरण मन नाहीं होवे
तुका भक्त सो ही जन कहिए, प्रभु-प्रेम ही मस्त रहे जो
सर्व जगत एको प्रभु देखे, मन प्रभाव जा नाहीं होवे
तीर्थ शिवोम् हे मेरे सतगुरु, ऐसा भक्त बनाओ मोहे
मस्ती में ही छका रहूं मैं, मनवा चंचल नाहीं होवे

राग माण्ड ताल धुमाली

ब्राह्मण हो कर भक्त नहीं जो, ता का मुख उजला न काला
विषयन माहीं रहे विचरता, पाप कमावन जग में चाला
शूद्र होय पर भक्त प्रभु का, धन्य होत है माता ता की
जनम दिया कुल पावन कीना, प्रभु का देखा, प्रभु का भाला
यही तथ्य सब संत बखाना, वेद पुराणन मत में जाना
नहीं बात यह निज की मोरी, प्रेम हृदय मन का नहीं काला
तुका बड़प्पन आग लगे ता, दूर प्रभु से जो ले जाए
बड़ा वही जो हरि को भाए, कटत हैं पापन, मन का जाला
तीर्थ शिवोम् हरि भगवन्ता, साची भगती दान करो मो
रहूं नहीं हीं गर्व ही डूबा, मन न होय कभी भी काला

राग तिलक कामोद ताल केहरवा

योनि योनि भटकत भटकत, दुर्लभ मानुष यह तन पायो
नर-तन जैसा ठांव मिला है, गुरु अमोलक है धन पायो
खोल खोल तू खोल रे नयनां, खुले नहीं अजहूं लगि तेरे
आलस किए पड़ा है काहे, अवसर तू ने है जद पाया
क्या जनमा तू पाथर जैसा, जड़वत् होत न तो सों कुछ भी
नर तन पाया, गुरुधन पाया, होश नहीं तुझ को पर आया
तुका सार्थक कर ले तनवा, जा विधि होय, वही विधि कर ले
संत तो उतरे, तुझे जगां कर, नाम बिना न को तर पाया
तीर्थ शिवोम् हे मूरख मनवा, काहे जनम बिगारे अपना
अब तो जाग, त्याग मन जड़ता, सूझ बूझ तू न कुछ पाया

राग खमाज ताल केहरवा

हो उत्तम या गति अधो हो, मन ही देवनहार है बस इक
वही उठाए, वही गिराए, मारन-तारनहार है बस इक
मन ही एक है देवा ऐसा, जो खुश होवे, निर्मल कर दे
साधन मन का कर लो पहले, काढ़नहार वही है बस इक
मन जो निकले जगत विषय से, बाहर हरि-नाम बंध जाए
ये ही मन का खुश है करना, वही निकालनहार है बस इक
तुका कहे मन अंकुश राखो, भटकत भ्रमित इसे मत छोड़ो
यह ही अनुभव होवत अन्तर, प्रीत करावनहार है बस इक
तीर्थ शिवोम् संभारो मनवा, मन से ही मन अंकुश राखो
सावधान चंचलता मन की, अकुश राखनहार है बस इक

राग भूप ताल धुमाली

मारग भक्ति जैसा नाहीं, करत जो निर्मल मन को भाई
जैसे जागे प्रेम हृदय में, मनवा अन्दर को ही जाई
कठिन बड़ा मन वश में करना, लाख जतन कर, वश न आवत
धीरे-धीरे हौले-हौले, मन का भाव बदल ही जाई
करे तुका अभ्यास जो मन का, बाँज वह जारे अपने मन के
तीर्थ शिवोम् कृपा-प्रभु पाए, मन-भ्रम सगला विरत ही जाई

राग भैरवी ताल केहरवा

अनुभव बिन जो ज्ञान हो वाचक, ज्ञान वह थोथा, बिरथा है वह
दूजे के धन हाथ में जो हो, किसी काम का नाहीं है वह
मन मलीन वह कर देवत है, चिन्ता मन में भर देवत है
चंचल होत घनेरा मनवा, काम न धनवा आवत है वह
चिन्ता लगी यही मन रहती, धन देवेगा या न देगा
और बिचारत बात न कोई, ध्यान कहीं न जावत है वह
कागद पत्र तुका ने डाला, पावन नदिया, गहरे जल में
तीर्थ शिवोम् सबन से छूटा, शेष रही न चिन्ता है वह

राग शिवरंजनी ताल भजनी ठेका

मानत है उपकार भक्त का, ऋणि होत है प्रेमी जन का
प्रभु सेवक है भक्त के अपने, करत वही जो मन सेवक का
नहीं मान राखत प्रभु अपना, मान भक्त का ही उर धारे
मान भक्त का रखने कारण, देत लगाए तन मन उन का
जो जन प्रिय हरि प्रीतम के, ता ऊपर सर्वस्व निछावर
लाड करत, मनुहार करत हैं, भेद नहीं कुछ अपना, उन का
तुका राम के जाऊं वारे, परम उदार भक्त हितकारी
तीर्थ शिवोम् शरण में आया, दोष न देखत अपने जन का

राग विलासखानी तोड़ी ताल झुमाली

जाति हीन मेरी पर फिर भी, संतन आदर दीना मोहे
अहंकार आना स्वाभाविक, गर्व सताने लागा मोहे
करने हरण मेरा सब कुछ ही, गर्व ने आ कर घेरा मोहे
ज्ञाता ध्याता मैं ही एको, ऐसा अब लागत है मोहे
तुका विनय है चरणों माहीं, मुझे बचा लो, डूब रहा हूं
बीच पड़ा मझधार हरि-हर, जान बचावन मुश्किल मोहे
तीर्थ शिवोम् बचाओ मो को, हाहाकार करत हूं आरे
पाछे गर्व लगा है मोरे, तुम्हीं बचावन हारे मोहे

राग मालकंस ताल त्रिताल

मन पर अंकुश राखो भाई
अन्तर में आनन्द उदय हो, मनवा सुख में ही रम जाई
यह अन्तर तेरे ही अर्पण, तेरा तुझ को सौंप दिया है
तुका संभारो यह संसारा, मन आनन्द मगन हुई जाई
तीर्थ शिवोम् यह सोचत मनवा, जग की बातें, जग की घातें
मन लागे अब चरणीं तेरे, यह ही मन मेरे में आई

राग मिश्र काफी ताल केहरवा

धीरज भगती प्रभु पसीजें, होन देत न दुखी भगत को
सकल उठावत चिन्ता प्रभु ही, नहीं निराशा कभी भगत को
हरि कीरतन करे भाव से, प्रेम के साथ प्रभु गुण गाए
कलि-निवारण करत सुदर्शन, करत अभय हरि दीन भगत को
बोझ होत बच्चों का भारी, छोड़ है देवत माता उन को
प्रभु त्यागत कबहूं नाहीं, लेत संभालत प्रिय भगत को
तुका कहे अनुभव से अपने, सत्य सदा है सत्य ही रहता
तीर्थ शिवोम् जात न बिरथा, प्रभु बचावत प्रभु-भगत को

भक्त नामदेव जी

राग दरबारी ताल अद्धा

घट में तीरथ वास करत है
घट तीरथ अस्नान करत हूं, कृष्ण पिआरा नाच नचत है
काग़द पन्ने एक झमेला, कब लौं कोई सीस खपाए
अनहद नाद सुनो अन्तर में, अन्तर सगला ज्ञान बसत है
साधन बाहर होत नहीं है, यह तो घटना अन्दर की है
अन्तर भक्ति अन्तर तीरथ, अन्तर अनुभव, भरम हरत है
अन्तर राम कृष्ण त्रिपुरारी, अन्तर दत्ता बिसन गणेशा
अन्तर मल, अन्तर निर्मल है, अन्तर माया भरम करत है
नामदेव जा देखा अन्तर, अन्तर देखा जगत समाया
तीर्थ शिवोम् कृपा जा होवे, अन्तर जीवा ब्रहम मिलत है

राग शिवरंजनी ताल भजनी ठेका

प्रभु के भक्त प्रभु दीवाने
काहे करत दिखावा झूठा, प्रभु के भक्त प्रभु परवाने
जिन के चढ़या रंग प्रभु का, रंग रंगे वो रंग प्रभु के
शेर की खाल, न शूकर शेरा, प्रभु के भक्त प्रभु मस्ताने
छोड़ प्रभु न सूझत कुछ भी, प्रभु ही दीखत चार दिशाएं
प्रभु ही कर्ता भर्ता हर्ता, प्रभु के भक्त प्रभु ही जाने
एक भक्त ही मिलत प्रभु हैं, भक्त ही एक हरि-सुख पावें
एक भक्त ही हिरदय निर्मल, बाकी जगत सकल अनजाने
नामदेव जो भया दीवाना, रहत सदा ही वह मस्ताना
तीर्थ शिवोम् प्रभु ही देखें, प्रभु के भक्त प्रभु ही माने

राग मालगुंजी ताल केहरवा

चरण- कमल प्रभु शरण गही जब, चारों मुक्ति पाई अभिमुख
छूटा जगत पसारा सारा, मनवा भया प्रभु के अभिमुख
कौन भगत जिस किरपा पाई, कौन भगत जिस जग बिसराई
कौन लीन है प्रभु-चरण में, कौन भागशाली जन गुरुमुख
मुक्त भए जग सारा जाना, यशोगान, जग सारे माना
कौन भगत सुमिरन जा पाया, कौन भगत जो कल तक मनमुख
राम शक्ति, निर्भयता पाई, युगों युगों की ताप मिटाई
बिरह अगन, मन लगी, बुझाई, छूट गया झगड़ा सब मनमुख
नामदेव केशव प्रभुताई, वश भक्तन के रहत सदा ही
तीर्थ शिवोम् चरण में तेरे, तेरी शरण, जगतन सन्मुख

राग जनसम्मोहिनी ताल केहरवा

सफल जीवन कर दिया, मेरे सिरी गुरुदेव ने
सारी चिन्ता दूर कर दी, सुख दिया गुरुदेव ने
दे दिया किरपा का अंजन, मन खुशी से भर दिया
ज्ञान चक्षु खुल गए हैं, क्या किया गुरुदेव ने
नाम बिन नर-देह केवल, नाम की ही देह है
नाम ही से चेतना , चेतन किया गुरुदेव ने
माथे राखूं नाम गुरु का, लूं उसे हिरदय बसा
धन्य नामा हो गया , कर दी कृपा गुरुदेव ने
क्या से क्या मुझ को किया, गुरुदेव ने मोहे शिवोम्
मन मेरा छोटा बना , मोटा किया गुरुदेव ने

राग यमन ताल केहरवा

मोर भक्त मोरा निज रूपा
दर्शन पाय ताप त्रय जाए, करत अनुग्रह, कादत कृपा
मैं बांधूं, वह देत छुड़ाए, ताकी बंधी न छूटत मो सों
पर मोहे वह बांध लेत हैं, पड़ा रहूं मैं बंधा अछूता
भक्त मेरे हैं मेरा जीवन, जीवन मैं सब ही जीवों का
दोष-गुणों से भ्रमित हुआ जग, रंक हो चाहे, चाहे भूपा
नामदेव जितना हो गहरा, भाव हो मन में जितना उतरा
होत प्रकाश भी उतना गहरा, पावत अणंद अनूप अनूठा
तीर्थ शिवोम् प्रभु भगवन्ता, महिमा तेरे भक्तन न्यारी
तू भक्तन में, भक्त तेरे में, एकमेव हो, रूप अनूठा

राग धानी ताल केहरवा

छोटी जाति, भक्त बड़ा था, आया मन्दिर करता भक्ति
मुख प्रसन्न था, मनवा हर्षित, मगन-चि वह करता भक्ति
हीन जाति पर भोला भाला, बड़ी जाति न लागा अच्छा
दिया उठाए, उसे भगाए, करन दीन उस को न भक्ति
भक्त राज ने ओढ़ा कम्बल, लौट चला वह घर को अपने
सिसक सिसक कर, रोता रोता, क्यों कर पाया, वह न भक्ति
नामदेव ता भक्त-हृदय की, व्यथा बखानी जाये कैसे
ऊंची जाति जनम हुआ न, यही पाप, कर सका न भक्ति
तीर्थ शिवोम् मेरे भगवन्ता, लीला तेरी समझ न आए
ऊंच-नीच का गर्व भरा जग, नीच सकत, कर भी न भक्ति

राग जोग कंस ताल केहरवा

राम नाम भज हरे मुरारी
सेवूं चरण तिहारे निसदिन, हे गोविन्द प्रभु बनवारी
गुरु-शब्द बैकुन्ठ सारणी, मन प्रयाग रस-प्रेम बाहिनी
सिमरूं नाम तिहारा प्रीतम, हिरदय नाम तिहार बिचारी
मानुष जनम लिया जा कारण, घट अन्दर ही साजन पाया
कृपा भयी गुरुदेव की मो पर, पायो नन्द किशोर बिहारी
नामदेव ब्रज का नन्दलाला, कहीं कधु न जाए वा की
हौं तो हिरदय ही में पायो, कुंजबिहारी बंशीधारी
तीर्थ शिवोम् प्रभु गोविन्दा, तुमरी ही इक प्रीत लगी है
दर्शन दे किरथारथ कीनो, कृष्ण मुरारी हे गिरधारी

राग खमाज ताल भजनी ठेका

दास जगत सों भया निआरा
का से पढ़ूं वेद श्रुत नाना, नाहीं मोर पढावनहारा
दही बिलोय, काढ़ लियो घृत, तैसे मन से जगत हटाया
जात पुनि न जग बिषयन में, रहत सदा ही जग से न्यारा
कर कर जतन, प्रकट कर अगनी, लौट के फिर न जाय लकड़ में
तैसे मनवा जग बैरागा, जावत नाहीं जगत पसारा
नामदेव जप राम निआरा, छोड़ दई करमन की आसा
लेन-देन सब छूटा जग का, छोड़ दिया मिथ्या संसारा
तीर्थ शिवोम् नमन है करता, राम-भक्त, जो नाम धिआए
राम नाम ही प्रणव प्रकाशा, राम नाम जग सकल अधारा

राग बागेश्वरी ताल भजनी ठेका

मात पिता है एक गोविन्दा
जात पात गुरु स्वामी सब ही, जग का मालिक एक गोविन्दा
ज्ञान ध्यान सब पूजा अर्चा, योग याग सब कर्म जगत के
जो कुछ दीखत जग विस्तारा, सब में रहवे एक गोविन्दा
गोविन्द नाचे, गोविन्द गावे, गोविन्द सब ही कार कमावे
गोविन्द राम राम गुण गावे, ज्ञानी ध्यानी एक गोविन्दा
नामदेव एको गोविन्दा, कण-कण व्यापक एक गोविन्दा
जहां देखूं तहां एक गोविन्दा, जग का सार एक गोविन्दा
तीर्थ शिवोम् शरण में तेरी, तू ही मारे, तू ही तारे
तुम को छोड़ न कोई दूजा, एक गोविन्दा, एक गोविन्दा

राग दरबारी ताल केहरवा

हिरदय माला, नन्द का लाला
हिरदय धारूं नाम हरि का, हिरदय एको दीनदयाला
हिरदय नाम, कीर्तन हिरदय, हिरदय प्रभु का नाम धिआऊं
हिरदय वासा प्रीतम तेरा, हिरदय देखत कृष्ण गोपाला
हिरदय राधा, हिरदय सखियां, हिरदय गलियन कुंज समाई
गंगा जमना सब ही हिरदय, हिरदय वृन्दावन के लाला
नामदेव सब ही हिरदय में, बाहर जग आभासित केवल
जो कुछ भी, सब हिरदय माहीं, शिव शंकर राधा गोपाला
तीर्थ शिवोम् दिखाओ प्रभु जी, हिरदय माहीं, अन्तर माहीं
दर्शन तुमरे मैं भी पाऊं, मोर मुकुट वैजन्ती माला

राग छाया नट्ट ताल त्रिताल

एक राम बिन दूजा नाहीं
एको राम जगत बिस्तारा, राम बिना है पूजा नाहीं
एक राम आकाश पताला, एक राम अंधरा उजियाला
एक राम ही अगम प्रकाशा, एक राम बिन दूजा नाहीं
एक राम ही रूप अनेका, पवन भूमि जल तत्व अनेका
स्वाग बनाए भान्ति अनेका, एक राम बिन दूजा नाहीं
नामदेव इक नाम पछाना, ताही घट-घट व्यापक जाना
बाकी पहला गर्व का बाना, एक राम बिन दूजा नाहीं
तीर्थ शिवोम् राम किरपा कर, डूबत नैया पार लंघा दे
लेत मिलाए अपने अन्तर, एक राम बिन दूजा नाहीं

राग नन्द ताल त्रिताल

मैं अपराधी तेरा
साची भक्ति तोर न कीनी, औगन मोहे घेरा
डूब रहा अज्ञान जगत में, विषयन ही संग कीना
किए कुकर्म, कुसंगत लागा, मन न निर्मल मेरा
दान किया तो जगत बखाना, करता भजन दिखावा
धर्म-अधर्म विचार न कीना, मुंह से तेरा चेरा
नाम-देव आय कर जग में, जग के कारज लागा
भूला सिरजनहार जगत का, करता मेरा मेरा
तीर्थ शिवोम् खमा हे स्वामी, मैं अपराधी तेरा
शरणी आया है प्रभु तेरी, जग का छोड़ बखेरा

राग जौनपुरी ताल केहरवा

मिले कठिनता मानव तनवा, ग़फलत काहे करत रह्या तू
सावधान हो राम भजन कर, नींद अचेतन सोय रह्या तू
हरि कृपा कर जन्म है दीना, ताही तू बिसराय दियो है
हाथ मलत रह जाए पाछे, जान नहीं क्यों पाय रह्या तू
जो करना सो कर ले आजे, समय नहीं फिर मुड़ आएगा
उड़ जाएगा हंस अकेला, सपनन महल बनाय रह्या तू
आया एकल, एकल जाना, माया झूठी पसरी सन्मुख
लाख चौरासी सिर पर आई, देख नहीं क्यों पाय रह्या तू
नाम देव तू संभल रे भाई, काल तो सिर पर आय गयो है
तीर्थ शिवोम् शरण में तेरी, मन की गांठ बढ़ाय रह्या है

राग दुर्गा ताल भजनी ठेका

दर्शन करूं प्रभु जब तेरे, नाम तेरा गुण गान करूं मैं
मिलता धीरज दास को तेरे, प्रभु बड़ाई काय करूं मैं
जब ते किरपा सद्गुरु पाई, शब्द अनाहत गूंजा अंतर
झिलमिल तारे, जोति दर्शन, अन्तर गगन विहार करूं मैं
भेद यह पाया सद्गुरु सों मैं, कमल-कोठड़ी रतन भरा
बिजली चमचम करत निरन्तर, करत प्रकाशा अणंद करूं मैं
नामदेव प्रभु दूर है नाहीं, नाहीं निकट वह है बैठा
भाव भरूं जब हिरदय माहीं, अनुभव परगट उसे करूं मैं
तीर्थ शिवोम् कृपा प्रकटाए, सद्गुरु अनुभव है दीना
परम तत्व अन्तर पहचानूं, अन्तर आनन्द रमन करूं मैं

राग धनाश्री ताल धुमाली.

घर पकवान बहुत कुछ होवे, कुछ भी अच्छा लगत है नाहीं
कभी नहीं कुछ भी हो घर में, मन मांगत, पर मिलत है नाहीं
कभी मांगता टुकड़े घर घर, कभी बीनने लगता कचरा
माया प्रभु की है यह कैसी, जीव समझ कुछ पात है नाहीं
सुख में, दुख में रखत रमैया, हाल उसी में खुश रह प्यारे
राम ही जानत, राम ही समझत, जग से समझा जात है नाहीं
कभी नचावत घोड़न को वह, कभी फिरत है पग-पग मारा
कबहीं सोवत खाट बिछौना, कभी घास भी मिलत है नाहीं
नामदेव इक राम ही ऐसा, जो कर सकत जीव का मंगल
तीर्थ शिवोम् मिले गुरु पूरा, ता बिन मुक्ति होत है नाहीं

राग भीम-पलासी ताल धुमाली

अपना आप दिखत ज्यों दर्पण, तैसे राम दिखत अन्तर में
निज को नाहीं लेत छिपाए, बंधन-मुक्त होत अन्तर में
जैसे मुख दीखत जल माहीं, ऐसे विट्ठल अन्तर माहीं
राम बिआपे सर्व जगत में, केवल दीखत वह अन्तर में
सर्व- स्वतंत्र होत वह अनुभव, मन की गति न चाले वा पर
मन इन्द्रिन बुद्धि से न्यारा, राम प्रकाशित हो अन्तर में
वही समाया कण- कण माहीं, वही बिआपे देह रह्या है
वही समाया जल आकाशे, किरिया करता वह अन्तर में
नामदेव किरपा-गुरु पाई, वे ही विट्ठल पावत अन्दर
तीर्थ शिवोम् भये जन मुक्ता, देखत सर्व क्रिया अन्तर में

राग भैरवी, ताल केहरवा

धन्य धन्य है कृष्ण की मुरली, शब्द अनाहत बाज रह्यो है
हिरदय भाव प्रगट है करती, मधुर-मधुर धुन गाज रह्यो है
धन्य धन्य कांबलिया काली, जो प्रभु ओढ़ी तन के ऊपर
छिटक रही मुस्कान रसीली, गोपिन रास रचाय रह्यो है
ठुमक ठुमक पग धरत है भू पर, नृत्य मधुर वंशी की धुन पर
मन हर लेत है गोपिन वंशी, मोहित जग करवाए रह्यो है
धन्य देवकी, मथुरा नगरी, जा अवतार धरा प्रभु आए
करत किलोल प्रभु आंगन में, देखत जग हर्षाए रह्यो है
नामदेव है करत वंदना, राम कृष्ण से, वंशी धुन से
तीर्थ शिवोम् शरण में राखो, नयननहिं सुख आय रह्यो है

राग शिव रंजनी ताल दीपचन्दी

तार दे, प्रभु तार दे, प्रीतम पिआरे तार दे
मैं अज्ञान, नदान बालक, तैरना कथा तार दे
सद्गुरु किरपा है कीनी, दे दिया मारग मुझे
अब कृपा तेरी हो मो पर, तार दे प्रभु तार दे
तर गए पापी अनेकों, नाम से, किरपा से ही
मैं ने डोरी नाम पकड़ी, तार दे प्रभु तार दे
पद दिया प्रह्लाद को जो, मो को वह ही दे प्रभु
मैं तेरे दर का भिकारी, तार दे प्रभु तार दे
अर्ज़ चरणों में यह नामा, जगत विपदा में पड़ा
कर कृपा शिव ओम् पर भी, तार दे प्रभु तार दे

राग झीलक ताल केहरवा

अकुल प्रभु इक खेल रचाया, घट-घट माहीं ब्रह्म समाया
जो कुछ घटित होत सो जाने, तैं ने, मैं ने, किसे न पाया
ज्यों माटी से कुम्भ प्रकाशित, वैसे विट्ठल सभी प्रकाशित
कर्म जीव का बंधन कारण, प्रभु किया सो ही घट पाया
भाव हृदय में जिस का जैसा, नाम देव फल मिलता वैसा
जो व्याकुल हो प्रभु के ताईं, पद अमरत्व उसी ने पाया
तीर्थ शिवोम् नाम जप प्राणी, गति प्रभु की न को जानी
जिसे मिलाए, वह ही मिलया, अपने जतन किसे न पाया

राग किरवानी ताल धुमाली

कुछ भी होय, चरण न छोड़ूं
हिरदय राखूं, मनहिं राखूं, नयनन चरनन ताईं मोड़ूं
चरनन एको जग में मेरो, चरन बिना कुछ दूजा नाहीं
मस्तक चरणीं लाए राखूं, मुंह को दूजी ओर न मोड़ूं
नामदेव मन मोरा लागा, चरन कमल विट्ठल के माहीं
तीर्थ शिवोम् यही है विनती, चरनन ताईं, जग से तोड़ूं

राग तोड़ी ताल भजनी ठेका

नाम हरि का सुमिरन करते, भ्रम सारे ही नष्ट भए
हरि सुमिरन तू करत नहीं क्यों, नाम जपे जन पार पए
नाम ही आवागमन मिटाए, नाम ही पार कराए है
नाम ही भ्रम भय शोक मिटाए, नाम से शत्रु खेत भए
नामदेव आदर से जो जन, नमन करत हरि भक्तों को
नाम सहारा जिन ने लीना, भ्रम भय शंका दूर भए
तीर्थ शिवोम् प्रभु गुरुदेवा, नाम दान मोहे दीजो
नाम ही तारन-तरन जगत में, नाम लिए भव पार गए

राग रागेश्री ताल केहरवा

पंछी आवत पिंजरे माहीं

यह संसार जाल है माया, रमत रह्या क्यों जग के माहीं ______

धन जोबन सब कारण माया, गर्व करत क्यों जग के माहीं ______

बचपन जोबन गया बुढ़ापा, फिर न समझत जग के माहीं ______

काचा कुम्भ बिखर जाए जल, तू पछताए जग के माहीं ______

नाम देव सुन साधु संता, न कुछ रखिया जग के माहीं ______

तीर्थ शिवोम् प्रभु भगवन्ता, सूझत न कुछ जग के माहीं ______

राग धानी ताल दादरा

काय करूं मैं जाति पांति, सीता राम के मैं गुण गासी ______

मन गंगा, मन मेरा कासी, राम कृपा काटूं जम फांसी ______

जग व्यवहार लगा संसारा, राम बिना कैसे भव जासी ______

राम जो सेवे, जम डर भागा, बिन जाए मथुरा या कासी ______

सुरत की सूई, प्रेम का धागा, माला नाम गले में पासी ______

नाम देव जप सांस की माला, वो ही तुम को पार लंघासी ______

तीर्थ शिवोम् शरण भगवन्ता, कृपा बिना गल-फंद न जासी ______

राग मालकंस ताल अद्धा

चरणीं राम ही लागा मनवा, राम ही मोहे रह्या संभारे

अर्पन राम है तन मन अपना, राम ही सगले काज संवारे

राम रमे तर जात यहीं पर, जात मिले जाय बनवारे

राम रमे मन होत अनन्दा, किरपा करतां कृष्ण मुरारे

वह ही जन सौभाग्यवन्त है, राम प्रभु के जो गुण गावे

नाम देव है यही बड़ाई, देहधारे पावे गुणकारे

तीर्थ शिवोम् धन्य जन प्यारे, जो हरि नाम सदा ही जपते

जीवित सुखी, सुखी मर कर भी, जावत धामहिं कृष्ण मुरारे

परम तपस्विनी ललद्यद

राग मांड ताल दीपचन्दी

कठिन तपस्या दुख भोगत क्यों
रहा तपाए अगन की भान्ति, रहा कछु भी सोचत न क्यों
मानुष देह मिला न तो को, कारन छारन गलन को
अपना शत्रु आप बना तू, हरि-प्रेम को लोचत
काहे करत कठोर साधना, क्यों दुख बिरथा पाय रहा
पाए क्योंकर ईष को पगले, ठीक रासते चालत न क्यों
ऐसा बीज न डाला अन्तर, जो फल मीठा खाय सके
ये ही कारण एक बना है, सुख आतम का पावत न क्यों
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, सुख की राह मुझे दिखलाओ
दुख में बीता सारा जीवन, सुख अभिमुख में पावत न क्यों

राग बिलावल ताल रूपक

कर्म पर अंकुश लगा तू, कर्म पार लगाए गा
कर्म जैसा जो करेगा, वैसा फल वह पाएगा
न कोई भुगतेगा दूजा, जो करे सोई भरे
छूटता कोई भी नाहीं, फिर तो तरले पाएगा
कर्म कर, कर्तव्य तेरा, छोड़ फल भगवान पर
फल में हो आसक्त नाहीं, तो ही तू बच पाएगा
फिर जहां भी जाएगा तू, होगा हित ही हर जगह
न कोई चिन्ता न शंका, मुक्त तू हो जाएगा
क्यों बना आसक्त प्यारे, सुन तू बन्दे ऐ शिवोम्
कर्म-बंधन में पड़ा जो, भव में गोते खाएगा

राग देवगिरि ताल भजनी ठेका

एक ही वचन गुरु ने कीना, काया पलट हो गई मेरी
बाहर से अन्दर को जा तू, और मिटी दुविधा सब मेरी
होई जब थी वृत्ति बाहिर भटकती, तब लौं मनवा चंचल मेरा
अब वृत्ति जब अन्तर होई, गई कल्पना ही सब मेरी
लोहे को सोना कर दीना, कौआ से भी हंस बनाया
नीचे थी मैं, ऊंचे कर दी, मनोकामना पूरी मेरी
अब तो मनवा निर्मल होया, मोह-शोक निर्बीज भए हैं
निर्मल मन मैं नाचन लागी, भ्रम शंका सब मिट गई मेरी
तीर्थ शिवोम् वाह गुरुदेवा, कैसा अचरज कर दिखलाया
भव अगनी में जलत रही मैं, बुझ गई ज्वाला मन की मेरी

राग गुणकरी ताल केहरवा

पढ़ते पढ़ते उमर बिताई, होंट जीभ सब फट गए मेरे
अजहूं समझ न आई मोहे, कर्म हटत न क्यों मन मेरे
समय बिताया सोचत समझत, पर मन हुआ साफ न मेरे
क्या करना, क्या नाहीं करना, कैसा क्या कर्तव्य है मेरे
थाका हाथ अंगूठा मेरा, फेरत फेरत माला मेरे
अजहूं हुआ नहीं तो कुछ भी, दुविधा गई न मन सों मेरे
कैसे जाएं दुखों के बादल, कैसे साफ हों कांटे मेरे
कब टूटेगी भीत यह माया, मन चकरावत सोचत मेरे
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, कैसी अजब निराली उलझन
छूटूंगा भव-बंधन से कब, आन मिलें कब प्रीतम मेरे

राग यमन ताल भजनी ठेका

जनम मरन है एक समाना, मैं न रोऊं किसी को
न मेरे को कोई रोए, रोना वृथा किसी को
जीवन मरन बदलना चोला, यह ही एक हकीकत
न को मरे, न पैदा होए, रोना काहे किसी को
चलता जाए एक पथिक है, दृश्य बदलता रहता
फिर भी रूप पथिक न बदले, कहूं यह भेद किसी को
रोना धोना काम जगत का, जो न बात को समझे
रोएं, धोएं, छाती पीटें, कुछ न मिले किसी को
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, सभी तिहारी लीला
जीव पड़ा माया के अन्दर, सुख न मिलत किसी को

राग तिलक कामोद ताल केहरवा

माता बन कर दूध पिलाए, पत्नी बन सुख भोग कराए
माया रूप भ्रमित हर कोई, हरि का रूप नार कहलाए
बांधे प्रेमी प्रेम जाल में, कुलटा हो कर रूप जाल में
भगिनी करत है भैया भैया, हरि का रूप नार कहलाए
सास बहू का राड़ अनूठा, भाभी देवर राग अनूठा
कभी नचाए पी को अपने, हरि का रूप नार कहलाए
कभी कर्कषा, कभी रसीली, कभी मोह मन सखी सहेली
कभी दिखाए नाज़ अनेकों, हरि का रूप नार कहलाए
कभी रोय सिसके चिल्लाए, कभी हसत मन लेत लुभाए
कभी झूठ साची वा कथनी, हरि का रूप नार कहलाए
तीर्थ शिवोम् प्रभु ही बनया, माया रूप नार वह बनया
वही फसाए, वही निकाले, हरि का रूप नार कहलाए

राग गोरख कल्याण ताल भजनी ठेका

वहां न मैं हूं, न ही तू है, ध्याता ध्यान ध्येय भी नाहीं
कर्म, क्रिया, न कर्ता भर्ता, इन का कुछ भी ज्ञान भी नाहीं
चित्त न बुद्धि, मन भी नाहीं, नाहीं इन्द्रिन, दृश्य जगत है
ऊंच नीच न, नहीं दिशाएं, किसी तरह का भान भी नाहीं
न चन्द्रा, न सूरज चमके, रहत उजाला परम-अनन्ता
ज्ञानी सिद्ध अलौकिक आसन, साधन किरिया ज्ञान भी नाहीं
अंधों को कुछ दीखत नाहीं, योगी ज्ञानी सब ही देखत
दीखत उन्हें चेतना चेतन, जग तो सकत जान भी नाहीं
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, मधुर अनूठा रूप दिखाया
देखत जाऊं, सिमटत जाऊं, मान तान अपमान भी नाहीं

राग देवगिरी बिलावल ताल केहरवा

मनवा एक है भव सागर
देखन में तो मीठा लागे, पर है विष की गागर
जगत रिझाए, जगत सताए, उलटे सीधे नाच नचाए
मन को जन के, देत भुलाए, है यह गहरा सागर
जो मनवा जाए जग ताईं, करत रहा चिन्ता तू काहे
मन को मन का काम करन दे, तू भज नटवर नागर
मन तुरंग को वश कर राखो, बिरथा जग को धाय
राम भजन से थिरता आए, नहीं तो खाए बागर
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, प्रेम का पंथ निराला
मन में प्रीत, हृदय में बिरहा, मिलत है गिरधर नागर

राग कौशी कान्हड़ा ताल केहरवा

जो-जो कुछ भी कर्म किए हैं, पूजा मेरी सोई प्रभु जी
जो भी वाणी कभी उचारी, मंत्र जाप है सोई प्रभु जी
भक्त करे न कर्म कभी भी, वह तो केवल पूजा करता
उस के कर्म सभी ही सेवा, पूजा-अर्चा सोई प्रभु जी
भक्त है प्रेमी चरण-प्रभु का, भक्त है सेवक चरण प्रभु का
भक्त की चाहत, चरण प्रभु का, चरण दास है सोई प्रभु जी
अर्पे चरणीं जो कुछ पासे, जो कुछ पासे सभी समर्पित
एक प्रभु ही उस के पासे, ध्यान भजन है सोई प्रभु जी
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, धन्य कृपा जो दर्स कराया
सेवक मगन भया चरणों में, मन आनन्दित सोई प्रभु जी

राग गौरी ताल भजनी ठेका

छुप बैठे हिरदय में मेरे, डगर-डगर मैं खोजत हारी
रात दिवस हौं ढूंडत फिरती, पाई देखी खुली कौबारी
कैसी अजब अनोखी माया, घर में वस्तु, बाहर खोजे
खोजत-खोजत उमर बिहाई, बिरथा फिरती मारी मारी
जा दिन पाया तुम को अन्दर, मो से दूसर दीखत नाहीं
आनन्दित हो झूम उठी मैं, जग की निपटी बिपदा सारी
अब तो दीखत तुम ही जग में, फैले, पसरे, कर्म कमाते
तुम बिन तत्त्व नहीं कोई दूजा, नाशा भ्रम, हट गई खुमारी
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, कैसा अनुपम अनुभव है यह
नाना रूप, एक ही प्रीतम, बाकी भ्रम की, सकल पिटारी

राग बिभास ताल चुमाली

चाहे भोग करो कितना भी, चाहे त्याग करो तुम कितना
पर संतुष्टि होत कभी न, चाहे करो धरो तुम कितना
संतुष्टि है प्रेम हरि में, मिलन हो चाहे, चाहे बिरह
फिर आनन्द रहे मन माहीं, चाहे लूट सको तुम कितना
प्रेम खज़ाना अनुप अखण्डा, बटता रहे दिवस और राती
रिक्त कभी भी होवत नाहीं, चाहे भर झोली तुम कितना
प्रेम तत्व ही तत्व अनन्ता, प्रेम का दाता राम ही मेरा
प्रेम बिना न मिलत प्रभु है, जतन करो चाहे तुम कितना
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, मैं भी ठाढ़ा भरन को झोली
एक नज़र तेरी मो पर भी, और रुलाओगे तुम कितना

राग मालश्री ताल भजनी ठेका

न कुलीन, अकुलीन भी नाहीं
न मैला न सुथरा है वह, काला गोरा भी वह नाहीं
परे सभी सीमाओं से वह, मस्त आपने आप रहे वह
मौन भी नाहीं, मुद्रा नाहीं, सुखी दुखी भी तो वह नाहीं
शिव शक्ति का भेद भी नाहीं, हो है जाती लीन वहां पर
गर्मी सर्दी रुत वसन्त भी, गीला सूखा भी वह नाहीं
न विद्वान, है मूरख नाहीं, भाव-अभाव से है वह न्यारा
भूख प्यास कुछ भी न लागे, पतला मोटा भी वह नाहीं
तीर्थ शिवोम् बचा जो बाकी, पास में तेरे प्यारे साधक
समझो वही परम उपदेशा, आवत जावत भी वह नाहीं

राग कलावती ताल भजनी ठेका

जनम अनेकों धारण कीने
कभी पिया जल गंग का मैं ने, कभी अहिंसक कर्म भी कीने
पक्षी, पशु कभी मैं मानव, भान्ति भान्ति के कौतुक कीने
पत्नी कभी, पुत्र बन आया, भाव अनेकों मैं ने दीने
कभी गमन आकाश में कीना, कभी रेंगता पृथ्वी ऊपर
कभी तैरता जलचर बन कर, सुख-दुख जग को लीने दीने
फिर यह सोचत हूं मैं मन में, मैं तो वो ही एक जीव हूं
कभी दरिन्दा, कभी परिन्दा, क्या क्या रूप हैं मैं ने लीने
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, आवन-जावन चक्र यह कैसा
जीव घूमता कोल्हूं नाई, बैल समान कर्म सब कीने

राग शुद्ध कल्याण ताल भजनी ठेका

मनवा चिन्त करत तू काहे
प्रभु करत हैं चिन्ता तोरी, चंचल बना तू काहे
प्रभु ही जानत, प्रभु ही देखत, प्रभु ही करत सभी हैं
जब वह चाहे, इच्छा पूरी, भटक रहा तू काहे
ध्यान प्रभु का, नाम का सिमरन, प्रभु का चिन्तन कर तू
छोड़ दे चिन्ता सभी प्रभु को, भय को भरत तू काहे
देख-भाल जग की वह करता, फिर तेरी क्यों नाहीं
देख रहा वह पल-पल सब को, निज डफली तू काहे
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, मनवा बड़ा ही चंचल
थक हारे संतन समझाय, जग में पड़ा तू काहे

राग यमन ताल दादरा

जितना जग का भोग करेगा, उतना ही मन चंचल
अग्नि में घी डालो जितना, अधिक अधिक मन चंचल
जितना त्याग करे भोगन का, उतना ही अभिमाना
उतना ही मन कलुषित होगा, बनता है मन चंचल
मत कर तू अभिमान त्याग का, समझ के भेद विरागा
जग में रह कर, मन पर संयम, हो नाहीं मन चंचल
बंद द्वार तेरे खुल जाएं, अन्तर में आनन्दा
या विधि चाले जो तू मनवा, काहे हो मन चंचल
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, भेद विराग बताया
किरपा तेरी, मन संयत हो, नहीं बने मन चंचल

राग मिश्र खमाज ताल भजनी ठेका

मैं तल्लीन प्रभु चरणों मे, ऐसी हुई कि खोय गई मैं
यह भी मनवा भूल गयो है, जग में आए खोय गई मैं
चरण ही चरण सुहावें मोहे, चरण ही हिरदय धारूं
चरण प्रसारित जग ही दीखें, मन की कालुष धोय गई मैं
भूली भटकी, भटक रही थी, एढ़ी टेढ़ी राहें
मारग न था सूझत मोहे, खड़ी अकेली रोय रही थी
कृपा गुरु ने कीनी ऐसी, हुआ उजाला अन्दर
अंधकार में डूब रही थी, जग विषयन में खोय गई मैं
तीर्थ शिवोम् धन्य गुरुदेवा, धन्य ही किरपा कीनी
जग बंधन सगले ही छूटे , प्रेम तिहारे खोय गई मैं

राग झिंझोटी ताल त्रिताल

मनवा बना बड़ा बलवान
लेत है वह बल विषयन माहीं, घूमत फिरता संग अज्ञान
मान लेअ तू बात यह मेरी, भटक रहा चौरासी काहे
भटक-भटक न थाका अजहूं, करत न काहे एक मकान
विषयन माहीं लेत रहा रस, अजहूं प्यास बुझी न तेरी
भोगन उछल रहा फिर काहे, क्यों तू नाहीं बनत सुजान
बल यह नाहीं, निर्बलता है, विषयन के वश काहे होया
साचा बल तो राम भजन में, बल साचा अंदर पहचान
तीर्थ शिवोम् हे मूरख मनवा, त्याग वृथा की हठ को
हरि सिमरन में, राम भजन में, हित अपना तू लेअ पछान

राग बागेश्वरी ताल दादरा

जानत है पर मानत नाहीं
कहता कुछ, करता कुछ ही है, ज्ञान क्रिया में लावत नाहीं
मनवा बुद्धि संग न चाले, बिलग है दोनों की पगडण्डी
मनवा चाले जगत दिशा को, ताहीं मन सुख पावत नाहीं
अन्तर में तो झूठ भरा है, मुख सों बनता सत्यस्वरूपी
वाणी डाले झूठ पह परदा, झूठ कहन शरमावत नाहीं
बातें करता सदाचरण की, कदाचरण ही हरदम चाले
करत दिखावा मिथ्याचारी, धर्माचरण करावत नाहीं
तीर्थ शिवोम् हे मूरख मनवा, तू जानत पर मानत क्यों न
जानन करन होयं सम दोनों, तो मनवा दुख पावत नाहीं

राग अडाना ताल अद्धा

जब जोबन की चलत है आंधी
देह रूप का गर्व घनेरा, जात न वश में बांधी आंधी
काम क्रोध मद लोभ भी चाले, चाले पशु व्योहारा
तोड़ फोड़ घनघोर तमाशा, चलती जात है अंधी आंधी
रोक-टोक बिन मन मतवाला, समझे किसे न कुछ भी
सिर ऊंचा और आखें टेढ़ी, लिए उड़ाए जात है आंधी
कितनों के घर इस ने जारे, निरापराधी कितने मारे
सूर सेठ सब दिए लताड़े, गज़ब की आंधी अजब है आंधी
तीर्थ शिवोम् है जोबन आंधी, संभल के चलना धीरे धीरे
जो तू चाले परमारथ पथ, आपत-काम करत है आंधी

राग गुणकली ताल केहरवा

राम ही आगे, राम ही पाछे, बीच भी राम समाया
फिर भी जीव देख न पाए, उलझा जग की माया
राम ही वेद कितेब पुराणा, सहजे सुख उपजाए
जीवन का आधार राम है, बाकी सगली छाया
राम समाया, छुप के बैठा, दीखत, पर न दीखत
जल, थल, वायु, अगन, अकाशा, रूप अनेक बनाया
जग में सार है नाम हरि का, पल-पल उचरण राखो
तो ही जन अमृत-फल पाए, जिन पाया, तिन पाया
तीर्थ शिवोम् हरि चरनन में, मनवा जे लग जावे
मन मलीनता दूर हटे सब, शरणी राम कमाया

राग पट्टबिहाग ताल खुमाली

मनवा क्यों आसक्त बना तू
झूठ में तोहे सत्य प्रतीति, मूरख अजब बना तू
धर्म से अपने पतित हुआ तू, गर्त पाप में डूब रहा
आवागमन छूट न पाता, जग का रूप बना तू
भले बुरे की समझ न तोहे, पाप पुण्य कर माने
मेरे तेरे रहे उलझता, ऐसा नीच बना तू
जग आसक्ति, विषयन रमता, राग-द्वेष मन दीना
धर्माधर्म विचार न कोई, मन आधीन बना तू
तीर्थ शिवोम् जगत दुखदायी, क्यों तू या में लागा
राम भजन में रस न माने, जग का दास बना तू

राग अडाना ताल त्रिताल

काल गति जानत न कोई
चूल्हा अभी दहकता देखा, अगली धूआं कुछ न होई
राजकुमारी देखी सुन्दर, निर्धन के शरणागत होई
लाख करोड़ों स्वामी को भी, मांगत भिक्षा, देत न कोई
काल किसे कब क्या कर देता, समझ न पावत जग में कोई
घर भरपूर, रहा न कोई, पूछनहार कोई न होई
करनी-काल, काल ही जानत, किसे उठाए, किसे गिराए
कालाधीन जगत यह बनया, काल-मुक्त हैं जन न कोई
तीर्थ शिवोम मेरे गुरुदेवा, एक तुम्हीं जो परे काल से
काल बिगार सके न तेरा, तुम आधीन-काल न होई

राग जयजयवंती ताल भजनी ठेका

कोई मुझ को गाली देवे, या का निन्दे हरदम मोहे
भला बुरा वह कुछ भी बोले, असर न कोई होवे मोहे
कोई भला भला कह बोले, सहज कुसुम से मोहे पूजे
आदर-मान करे वह बढ़-चढ़, असर न कोई होवे मोहे
खाऊं पीऊ मौज मनाऊं, भूखे चादर तान के सोऊं
फटे चीथड़े देह लपेटूं, असर न कोई होवे मोहे
सब अनुकूल रहे जग मेरे, या प्रतिकूल रहे वह मेरे
मुझ को जग से क्या है लेना, असर न कोई होवे मोहे
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, मन की ऐसी दशा निराली
सुख हो, दुख हो, कैसा भी हो, असर न कोई होवे मोहे

राग चारुकेशी ताल भजनी ठेका

घर को त्याग बने वैरागी, कुटिया वन में कीनी
कुछ भी हाथ न आया उन के, उथल पुथल मन कीनी
सांस सांस की गिनती कर तू, बिरथा एक न जाए
ध्यान ज्ञान, हरि के सिमरन, उमर न काहे दीनी
जिस भी हाल में राखे ईश्वर, सुख न मानत काहे
मन संतोष यही है साधन, बाकी बिरथा सब ही कीनी
जीवन यह भागन को नाहीं, भटक रहा तू काहे
बैठ ध्यान, हरि नाम सिमर ले, ताही तुझ को दीनी
तीर्थ शिवोम् हे मूरख मनवा, बिरथा भाग रहा क्यों
हरि को भूला, जग में लागा, प्रभु कृपा कर दीनी

राग मिश्र पीलू ताल केहरवा

कच्चे धागे नाव बंधी है, जात हूं खींचत भव जल माहीं
टूटे धागा, जाए जल में, खबर घड़ी पल भर अब नाहीं
रही पुकारत प्रीतम को मैं, कबर सुनोगे, कह न पाऊं
आएं, निर्बल पार लगाएं, धीरज और रहा अब नाहीं
मेहनत मेरी जात है बिरथा, किया धरा है नाहीं फलता
तुमरा एक भरोसा मो को, आशा दूजी को अब नाहीं
जात मचल है मनवा मोरा, जाऊं प्रीतम घर मैं अपने
कौन सा मारग, कैसे पहुंचूं, पता मुझे तो कुछ पर नाहीं
तीर्थ शिवोम् प्रभु भगवन्ता, अब के अर्ज़ हमारी सुनियो
पापन तापन भटक रही हूं, सूझत राह मुझे कुछ नाहीं

राग शिवरंजनी ताल केहरवा

फूट-फूट कर रोऊं तुझ पर, उलझा जग में तूं क्यों मनवा
माया मोह रहा तू धसता, ऐसी गति भयी क्यों मनवा
लोहा-लंगर किया इकट्ठा, छाया तक भी साथ न देगी
फिर भी रहा उलझता क्यों तू, समझत नाहीं तू क्यों मनवा
भूला तू निज रूप को काहे, गया उतरता माया काहे
सुख दुख भोग रहा तू काहे, निकलत न इन से क्यों मनवा
यह माया है एक भुलावा, देत दिखाए, करत छिलावा
जीव रहे करता पछतावा, तू भरमाया रे क्यों मनवा
तीर्थ शिवोम् है खोटी किस्मत, जो तेरे संग साथ भया है
डूबा आप, मुझे भी डोबा, अब पछताए रही क्यों मनवा

राग यमन ताल भजनी ठेका

खाई ऊपर नाच रहा तू, कैसा है तू मूरख मनवा
देख रह्या न संकट सन्मुख, गिर जायगा तू कब मनवा
तू तो लागा संचय धन में, छोड़ यहीं सब जाएगा तू
नहीं विचारत कुछ भी मन में, लागा माया लौं अब मनवा
तू जानत सब छोड़ है जाना, फिर तू सुख से सोया कैसे
संकट देत दिखाई क्यों न, जागेगा फिर तू कब मनवा
सभी सोचते अच्छा अपना, एक तू ही जो सोचत नाहीं
कब सोचेगा, कब चेतेगा, जाए उमर निकल तब मनवा
तीर्थ शिवोम् जगत में सोया, उस ने अपना सब कुछ खोया
सावधान हो रहो जागते, चेतेगा तू रे कब मनवा

राग सूर मल्हार ताल भजनी ठेका

आ तो गई जगत अंजाने, चलते चलते सीधे सीधे
लौट के जाना कठिन घना है, जग से चलते सीधे सीधे
माया लोभ प्रसारित जग में, चलना सीधे होए कैसे
वीर पुरुष ही निकल सकत है, जग से चलते सीधे सीधे
सेतु पार भी कर न पाई, सूरज चला समेटे किरणें
पूरा कर न पाई कारज, जग से चलते सीधे सीधे.
नहीं कमाई कोई कुछ भी, पास न पल्ले एक भी पाई
क्योंकर उतरूं पार नदी के, जग से चलते सीधे सीधे
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, कैसी अजब बनाई दुनिया
कठिन बनाया पार उतरना, जग से चलते सीधे सीधे

राग हंसध्वनि ताल भजनी ठेका

काय करूं विकार पांच का, क्या इन्द्रिन ग्यारह का
काय करूं वासना अन्दर, सूझ पड़त न घर का
सब मिल रवाली कर दीनों घर, लूट लिया धन सारा
आहें दुख ही शेष बचे हैं, खोया मालिक घर का
जात है कोई उत्तर पश्चिम, कोई दक्षिण भाग रहा है
चंचल मनवा इन्द्रिन ऐसी, बचा न कुछ भी घर का
एक दिशा जो सब यह जाते, ज़ोर लगाते रस्सी मिल कर
भाग के जाती गाय कैसे, अब तो पता न घर का
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, काय करूं तन-मन का
देख देख जग यह भरमावें, गया उजाला घर का

राग विहाग ताल केहरवा

रहे आत हैं, रहे जात हैं, काल-अनादि जग के माहीं
चलता चक्र निरन्तर रहता, फिर फिर आवें जग के माहीं
रहा चलत है, चलत रहेगा, टूटन में यह आत कभी न
हम चाहे, या न हम चाहें, फिर फिर आवें जग के माहीं
उत्तम या ही जीव लिए हैं, जावे फिर वह लौट न आवे
मन में संचय ही क्यों करना, फिर फिर आवें जग के माहीं
चला चक्र जो आवन-जावन, सीख नहीं क्यों लेवत संतन
मुड़ मुड़ के क्यों आवे फिर फिर, फिर फिर आवें जग के माहीं
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, आवन जावन छूटे कैसे
काल-चक्र से मैं घबराया, न फिर आऊं जग के माहीं

राग जयजयवंती ताल भजनी ठेका

मारग दिशा कौन से आई, कुछ भी मैं तो जानत नाहीं
मारग दिशा कौन से जाना, पता ठिकाना पावत नाहीं
कौन बतावे, कौन सुझावे, आवन-जावन मारग मेरा
मन की भोली, मन की मैली, ऊंच नीच कुछ जानत नाहीं
अपना जतन करे न कुछ भी, न कुछ फलितारथ ही होवे
गुरु बतावे, गुरु सुझावे, तब लौं बोध ज्ञान कछु नाहीं
नाक भी पकड़ा, श्वास चढ़ाए, मन्दिर जा खरताल बजाए
पुस्तक के पन्ने उलटाए, गुरु बिन मारग खुलत है नाहीं
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, सब जग छोड़ शरण में आई
कैसा क्या है, कौन गली है, मारग कुछ भी जानत नाहीं

राग जनसम्मोहिनी ताल झुमाली

वक्ता हो कर ज्ञान बखेरे, निर्बुद्धि से फिरते देखा
करे रसोई जगत परोसे, उस को भूख से मरते देखा
नाविक हो कर पार उतारे, उस को जल में डूबत देखा
दूजे को तो दे उपदेशा, आपुन गलती करते देखा
यह विरोध कैसा है जग में, उलझन सुलझ रही न मो से
जो समझे तो बात बड़ी है, जग को भ्रम में फसते देखा
मैं हताश, भ्रम माया उलझी, क्योंकर हो छुटकारा मेरा
निकलन चाहे, फसता जाए, जग बंधन में कसते देखा
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, जाल नहीं, पर जाल में उलझी
कैसे हो यह भ्रम निपटारा, विषधर जग को डसते देखा

राग गौड़ सारंग ताल झुमाली

सीधी आई, सीधी जाऊं, टेढ़ेपन से काम न कोई
टेढ़ा तो टेढ़ा ही चाले, सीधेपन से काम न कोई
टेढ़ा देत है दुख सीधे को, पर सीधा तो दुख न मानत
टेढ़े से भी रहत है सीधा, टेढ़ो की सीधी न होई
जानत सब हैं सीधी मोहे, टेढ़ापन कुछ नहीं बिगारत
टेढ़े मोहे क्या कर लेंगे, अपना अच्छा बुरा न कोई
सहज सरलता निर्भय कीना, मोरे मन में सुख भर दीना
टेढ़े की टेढ़े ही जानें, लेना देना मुझे न कोई
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, सीधी मुझे बनाए राखो
सीधेपन में सुख ही सुख है, टेढ़ेपन में सुख न कोई

राग माण्ड ताल भजनी ठेका

सहनशीलता नाम पिसन का, जग के सुख दुख झेले
सहनशीलता नाम तपन का, मन प्रभाव न किसी झमेले
सहनशीलता कदम-कदम श्रम, होत परीक्षा पल पल
अति कठोर है, अति कठिन है, तिरस्कार आदर सब झेले
सहनशीलता प्रथम अंधेरा, जगत विरोधी दीखे
जब लों नाहीं परिपक्वता, तब लों तो जग रहत अकेले
मनवा जो संतोष करे तो, सहनशीलता होत है परगट
तब वह चमके सूरज नाईं, सन्मुख कोई नहीं झमेले
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, जग से न्यारी सहनशीलता
जो जन अपना लेवे इस को, रहत आनन्दित सदा अकेले

राग भैरवी ताल दीपचन्दी

रेत की रस्सी काहे बटता
यह रस्सी न पार कराये, बिरथा काहे खपता
जगत भरोसे नैया अपनी, सोचे पार उतरना
नासमझी यह केवल तेरी, राम न काहे जपता
संत पुरुष, योगी, विज्ञानी, सब ने यही बताया
जगत भरोसा न मन राखो, जग तो रूप बदलता
तेरा मन तेरे ही साथे, राम भजन मन ला रे
तर जाएगा, संशय नाहीं, राम न काहे रटता
तीर्थ शिवोम मेरे गुरुदेवा, प्रभु प्रेम मन लाओ
तुमरी सेवा, राम भजन हो, याही में कुछ लभता

राग मध्यमाद सारंग ताल झुमाली

मन का स्वामी, दास प्रभु का, सो ही साचा भक्त कहाए
काम क्रोध मद जीत लिया जिस, वीर पुरुष वह भक्त कहाए
निराभिमानी निरासक्त हो, सेवा समझे, कर्म कमाए
सहजे पाए कृपा प्रभु की, ऐसा मन जा, भक्त कहाए
सुख वैभव सब राख समाना, हिरदय छाया प्रेम प्रभु का
एक लक्ष्य हो, एको दृष्टि, मानव ऐसा भक्त कहाए.
मन वाणी सब साची करनी, साचा ऊठन बैठन ताका
झूठ का कोई काम न ताको, सत्य हृदय ही भक्त कहाए
तीर्थ शिवोम मेरे गुरुदेवा, साची करनी मोहे दीजो
साचा सो जो साच समाय, साचा ऐसा भक्त कहाए

संत एक नाथ जी

राग मीरा अल्हार ताल भजनी ठेका

बाहर जग में, भीतर घट में, एक प्रभु ही दत्त विराजे
कण-कण माहीं, रोम-रोम में, वही समाया सगले काजे
मन हर लीनो वा ने मोरा, मोहित हर्षित है मन मोरा
'मेरा तेरा' भाव दबाया, बिगड़े काज सवारे आजे
सिंहाद्रि पर्वत पर वासा, भक्तन मन में प्रेम जगाया
आए सुनत विनय दीनन की, राखत सबन जनन की लाजे
एक नाथ प्रभु दीप जलाया, चिंता काजल न कोई ता
हुआ प्रकाशित मन भक्तन का, बाज उठे मन ताही बाजे
तीर्थ शिवोम् दत्त प्रभु स्वामी, शरणीं तुमरी भक्त पड़े हैं
पकड़ें-चरण, करत हैं विनती, पार करो प्रभु आए आजे

राग पट्दीप ताल केहरवा

कोई कहे भक्त है साचा, पुण्य-सलिल है कहता उस को
कोई कहे बना पाखण्डी, पापी दम्भी कहता उस को
न जाने यह ध्यान न आसन, न ही पूजा, जप, तप, अर्चा
शास्त्र पठन का पता नहीं है, एक दिखावा कहता उस को
न जानत यह मंत्र तंत्र कुछ, केवल जगत ठगाई करता
भोले लोगन फेर में इस के, कोई कपटी कहता उस को
एक नाथ इक नाम हरि का, जीवन नैया पार उतारे
कोई कहे, करे कुछ चर्चा, अन्तर कुछ भी नाहीं उस को
तीर्थ शिवोम् हरि जन पाके, राग न द्वेष कोऊ से करते
लोगन अपना काम करत हैं, काम से ही, बस काम है उस को

राग शुद्ध सारंग ताल केहरवा

कृष्ण छवि इक बार निहारी
जो कुछ सुन्दर जग में दीखत, कृष्ण-अंश ही सब बनवारी
नयनन भये दिवाने ऐसे, कृष्ण दर्स बिन नहीं सुहावत
लागे नयनन कृष्ण चरण ही, कृष्ण ही सूझत कुन्जविहारी
रूप आलिंगन श्याम मनोहर, मनवा मुड़ मुड़ जात वहीं पर
लीन मधुर हो कृष्ण कन्हैया, गोपिन मन हर लीन मुरारी
एक नाथ मन दीना तुमहिं, तन इन्द्रिन सब तुमरे अर्पन
अपने पास सभी तुमरा ही, एक तुम्हीं मोरे दुखहारी
तीर्थ शिवोम् कहूं मैं काय, एक भरोसा तुम ही मोरे
तुम को छोड़ नहीं कुछ मोरा, जनम मरण सब ही मैं हारी

राग गुणकरी ताल धुमाली

सादर मस्तक चरणों राखूं
करि कृपा दर्शन मो दीजो, नयनन छवि तिहारी भाखूं
भाव न, ज्ञान न, भक्ति मो में, त्याग बिराग नहीं कुछ पाया
तुमरी कृपा जो होवे मो पर, प्रेमामृत-रस दिव्य मैं पाऊं
हौं जानत मैं दीन-हीन हूं, सभी विकार भरे मन माहीं
किरपा तुमरी ताकत मेरी, ता मन चाहत, तोहे भाखूं
एक नाथ हूं शरण तिहारी, तत्त्व तिहारा जान सकूं न
तुम्हीं जनाओ, तो ही जानूं, प्रेम तिहारा हिरदय राखूं
तीर्थ शिवोम् आशा है तुम से, जग तो केवल लीला तुमरी
चाहो तरूं, मरूं चाहो तुम, तुमरी मौज हृदय में राखूं

राग सिन्ध भैरवी ताल भजनी ठेका

साचा साधक सतगुरु अंकित, अर्पण गुरु वचन पर मन हो
अर्पित जा ने तन धन कीना, चरणों पर श्रद्धा ही मन हो
जा से दुख आपुन को होता, वाणी-कर्म करे न दूजन
अनुभव जा से सुखी स्वयं हो, वही करन को करता मन हो
अन्तर धो डाले वह अपना, गुरु कृपा से, गुरु प्रीत से
जग में निर्मल हो व्यवहारा, ऐसा दिव्य अलौकिक मन हो
एकनाथ बिन मांगे मिलता, गुरु प्रसाद जो भोग करत है
रहे सदा संतुष्ट ही मन में, लोभ कभी न वा के मन को
तीर्थ शिवोम् सदा रत चरणों, सेवा भाव समाया अन्तर
प्रेम भरा हो हिरदय माहीं, राग द्वेष न कुछ भी मन हो

राग कौशी कान्हड़ा ताल भजनी ठेका

दारा, सुत, गृह, प्राण न्यौछावर, संतन इस को भजन कहा है
प्रेम सभी से मन में राखो, इस को ही इक जतन कहा है
मित्र भाव हो साधु संगत, वैर भाव काहू से नाहीं
निन्दा, तृष्णा, क्रोध संभारो, साधन का यह रतन कहा है
इन्द्रिन मन वश में हो भक्ति, यही योग का मूल मंत्र है
पल-पल छिन-छिन नाम रटन हो, भक्तन इस को जपन कहा है
एकनाथ साची कर वाणी, जो हिरदय सो वो ही मुख में
झूठ बात कुछ बोले नाहीं, योगिन यह ही कथन कहा है
तीर्थ शिवोम् रंग जिस मनवा, रहे गृहस्थी या संन्यासी
मिलत है दर्शन उसे प्रभु का, धर्म ने इस को दरस कहा है

राग सावनी कल्याण ताल भजनी ठेका

भजनानन्द में नाचत गावत
भजनानन्द है मस्ती ऐसी, हर्षित हो मन नाचत गावत
मदिरा-पान करे जो जन है, मदिरानन्द में बोलत बहकत
भजनानन्द सरूर अनूठा, प्रेम-प्रभु मन नाचत गावत
भक्तिभाव तरंगित मन में, भाव अनोखे उठते अन्दर
मस्ती का की अजब निराली, मस्त होय मन नाचत गावत
एकनाथ जो भक्त प्रभु का, पान करे इस मदिरा रस का
अन्तर आनन्द वह ही जानत, अनंद मगन मन नाचत गावत
तीर्थ शिवोम् धन्य प्रभु-भक्ति, मस्ती धन्य अलौकिक न्यारी
भाव-प्रभु, आनन्द भरा मन, क्रिया अनूठी, नाचत गावत

राग जोगिया ताल धुमाली

ध्यान गुरु का करे ध्यान में, ब्रह्मभूत काया हुई जावे
धन्य गुरु चैतन्य दिखाया, अन्तर प्रकट क्रिया हुई जावे
जगत विषैला अजगर लिपटा, दिया छुड़ाए, सद्गुरु आय
सद्गुरुदेव मिले किरपा कर, धन्वन्तर रूपी हुई आवे
शिष्य लाडला देवगुरु का, मन तन धारण गुरु ही कीना
शिष्यहिं प्रेम का दूध पिलाया, प्रेमहिं शिष्य बढ़त हुई आवे
एकनाथ सिर माथे धारूं, संतजनों को, गुरु जनों को
कर कल्याण मोर, अपनाया, मन मलीन, निर्मल हुई जावे
तीर्थ शिवोम् पड़ौं हौं शरणीं, देव गुरु की, परम गुरु की
जिन उपकार किया मो ऊपर, किरपा परगट हुई हुई जावे

राग दरबारी कान्हड़ा ताल केहरवा

एक प्रवाह अजब है मन में
न चाहे पर बहता जाए, बच न पावत जीव है जग में
बड़ा कठिन है या से बचना, जल की धारा तेज़ बड़ी है
मानव पक्षी पशु सभी हीं, जाएं बहत सलोने जग में
जो भी इस को जीत सके नर, परम-शूर है महावीर वह
लेत बचाय आपुन को वह, उलझत नाहीं, फिर वह जग में
एकनाथ कृपा जो होवे, , लेत बचाए जन को इस से
अपने जतन नहीं छुटकारा, फसत जाए यह जीव है जग में
तीर्थ शिवोम् प्रभु बनवारी, मुझे संभारो, विनती चरणी
डूबत जावत भव जल माहीं, कौन बचाए मोहे जग में

राग गौड़ सारंग ताल भजनी ठेका

विरला जानत प्रेम गुरु का
जो कुछ भी, सब सद्गुरुदेवा, पीवत हिरदय प्रेम गुरु का
नाम-गुरु ही नियम संयम, नाम-गुरु ही वेद हमारा
पाए शिष्य प्रेम गुरुसेवा, सकल साधना प्रेम गुरु का
नाम-कृपा-सेवा गुरु बख्शे, शक्ति अखुट अपार अनन्ता
पड़त साधना सब ही फीकी, जो जानत है प्रेम गुरु का
एकनाथ गुरु सेवा कीनी, किरपा सद्गुरु पाई ता ने
पाया अनत अपार अनन्दा, पाया मर्महिं प्रेम गुरु का
तीर्थ शिवोम् ज्ञान जो नाहीं, चिन्तन श्रम से, पठन पाठ से
पाया बोध गुरु किरपा से, महिमा अनुपम प्रेम गुरु का

राग मिश्र काफी ताल केहरवा

मन में प्रेम हरि गुण गाओ
मस्त रहे मन रंग प्रभु में, प्रेम-प्रभु में नाचो गाओ
भक्ति से जग तर जाओ गे, तर जाओगे, तर जाओगे
इस में संशय है को नाहीं, विट्ठल भजो, कृष्णहिं गाओ
भक्ति परमधाम गोविन्दा, भक्ति प्रकट स्वरूपा राधा
भक्ति नाचत है हर थाईं, एक भजो, आनन्द मनाओ
एक नाथ शंका मन त्यागो, शंका नाश करे भक्ति का
शंका हो मन भक्ति नाहीं, प्रेम हरि के रंग रंग जाओ
तीर्थ शिवोम् बजाओ थिरको - राम नाम गुण गाए गाए
मारग प्रेम हरि मिलने का, मन वृन्दावन, कृष्ण मनाओ

राग पीलू ताल भजनी ठेका

मन आशा पंढरपुर जाए
दर्शन पावन पाय प्रभु के, मन कलेश धुल सगले जाए
वेद भी पार सकत न पाए, वाणी संत भी मौन भयी हैं
को नहीं जानत, कह नहीं पावत, वर्णन तोर करत न जाए
पंढरपुर विट्ठल वीराजित, दर्शन देवत भक्त जनन को
भक्तन रहे निहारत हरदम, अगन हृदय हुई शीतल जाए
एक-नाथ गिरधर बनवारी, चरणों शरणों आए पड़ा हूं
पाप ताप सगले दुख काटो, प्रकट छवि हुई तुमरी जाए
तीर्थ शिवोम् कृष्ण गोपाला, पंढरपुर में वास तिहारा
मनवा पुनि पुनि जात वहीं पर, कहीं प्रभु-दर्शन हुई जाए

राग धानी ताल चुमाली

पी न सके क्षोभ जो विष का, निन्दा को जो सहन पाए
कोरे का कोरा ही रहता, परमारथ से वंचित जाए
दूजे के गुण-दोषहिं देखे, वह रहता विक्षिप्त सदा ही
दर्शन-दोष, पराई निन्दा, त्यागे जो वह सुख ही पाए
समदृष्टि जा सकल जगत में, एक प्रभु घट-घटहिं व्यापें
ऐसी दृष्टि जा जन होए, छोड़ विषम, समता मन पाए
एकनाथ किरपा गुरुदेवा, शिष्य भी है संवाद गुरु का
निन्दक जन का परम गुरु है, जो समझे निर्मलता पाए
तीर्थ शिवोम् दया गुरुवर की, ऐसी बुद्धि मो को दीनी
सेवा करता, निर्भय हो कर, मन में भाव, कृपा गुरु पाए

राग मिश्र खमाज ताल केहरवा

एक में दो का भाव जगाए, जग में वा को कहत हैं माया
जो असीम को सीमित कर दे, नाम उसी को देत हैं माया
जो हो नहीं, उसे दिखला दे, जो होवे, भ्रम में उलझा दे
कुछ का कुछ कर के दिखला दे, समझो रही छिपाये माया
दुख को जो सुख कर दिखलाए, जो छोटा सो बड़ा दिखाए
असत दिखाए सत ही कर के, काम यही तो करत है माया
एकनाथ यह माया ठगनी, उलझाती भरमाती जन को
जो हो नहीं, हुआ सा दीखे, वो विख्यात जगत में माया
तीर्थ शिवोम् यह माया ऐसी, गांठ नहीं, पर गांठ है मन की
जाल नहीं, पर फसा जीव है, अनहोनी होनी कर माया

राग जनसम्मोहिनी ताल दीपचन्दी

शरण में तेरी पड़ा हूं कर कृपा
जग की कोई कामना मुझ को नहीं, कर कृपा मेरे प्रभु तू कर कृपा
जो मिले वैभव त्रिलोकी का मुझे, तो भी वो कुछ काम का मेरे नहीं
वह तो सब पल भर का सारा खेल है, चाहिए मुझ को कृपा, तू कर कृपा
देख लूं तुझ को मैं अपने सामने, मैं समा जाऊं तेरे ही चरण में
भूल जाऊं, जो जगत दीखे मुझे, बस कृपा तेरी ही मुझ को, कर कृपा
जो मिले आधी घड़ी भी एकनाथ, सुख हो तेरे प्रकट का अनुभव मुझे
सुख सभी बिरथा हैं उस के सामने, हो तेरी किरपा प्रभु तू कर कृपा
तू प्रभु किरपाल है जग पर शिवोम्, दीन चरणों में ही तेरे है पड़ा
बिरद तेरी दीन पर करना दया, मांगता तुम से कृपा हूं कर कृपा

राग गौड़ मल्हार ताल भजनी ठेका

धन्य धन्य नर देह का मिलना, धन्य है साधु संगत
धन्य हैं रंग प्रभु रंग राते, धन्य हरि की रंगत
धन्य है मिलना गुरुदेव का, धन्य जो नाम कमाए
धन्य प्रभुहिं सीस नवाए, धन्य हैं ता की संगत
धन्य पुत्र जो करत है सेवा, धन्य पिया मन भाए
धन्य वह निन्दक राह लगाए, धन्य साध की संगत.
एकनाथ जो भक्त प्रभु का, ताकी महिमा न्यारी
रहे लगा वह हरि भजन में, उजली पावे रंगत
तीर्थ शिवोम् प्रभु भगवन्ता, धन्य तिहारी किरपा
जाहे मिलत अनुग्रह तोरा, रहत सदा ही रंगत

राग जयजयवन्ती ताल भजनी ठेका

पापी अधम करायी सेवा
करत रहे तुम सेवा मोरी, लेत रहा मैं तुमरी सेवा
पुष्प जुटाए तुम ने मोहे, पुष्प चढ़ाए मैंने तोहे
चन्दन घिस, पूजा सामग्री, सगली सेवा तुमरी सेवा
लीप पोत सब किया उजाला, खान पान सब तुम्हीं संभाला
मैं तो केवल बैठा ठाला, तुम्हीं संभाली, तुमरी सेवा
एकनाथ मोरे भगवंता, कैसा नीच पखण्डी हूं मैं
रहा करावत सेवा तुम से, आप न कीनी तुमरी सेवा
तीर्थ शिवोम् प्रभु तुम सेवक, निर्मल शुद्ध हृदय कर मोरा
मैं तो काम यह कर न पाऊं, एक यही है तुमरी सेवा

राग धनाश्री ताल भजनी ठेका

प्रेम बिना सब जतन वृथा है
ज्ञान, ध्यान, पूजा, जप जो भी, प्रेम नहीं सब होत वृथा है
प्रेम ही सार सकल साधन का, प्रेम ही एको साधन तुमरा
प्रेम बिना सब साधन फीका, प्रेम नहीं सब होत वृथा है
जा वाणी हरि-प्रेम समाया, सो ही वाणी सरस मधुर है
साचा है प्रभु-प्रेम अखण्डा, प्रेम नहीं सब होत वृथा है
एकनाथ हरि हृदय समाया, प्रेम प्रभु का, ज्ञान प्रभु का
प्रेम बिना हो ज्ञान निरर्थक, प्रेम नहीं सब होत वृथा है
तीर्थ शिवोम् प्रेम मो दीजो, प्रेमी तुमरा भक्त बनूं मैं
प्रेमहिं रंग चढ़े मो गहरा, प्रेम नहीं सब होत वृथा है

संत दादूदयाल जी

राग धनाश्री ताल भजनी ठेका

तू साचा तू साहिब मेरा
दीन-दयाल परम-हितकारी, मैं जन तेरा, सेवक तेरा
अन्तर्मन की जानत सब ही, भाव विचार सबन ही
मो पर कृपा तिहारी प्रभु जी, परम-अनुग्रह मो पर तेरा
तुम स्वामी, तुम खालिक मालिक, तीन लोक तुम ही उपजाए
हर घट रहे समाए प्रभु जी, नित मैं पाऊं दर्शन तेरा
दीन, दया को अभिलाषी हौं, आया हूं मैं दर पर तेरे
हूं ठुकराया जग का प्रभु जी, दीन-हृदय पर हूं मैं तेरा
दादू करत पुकार दुआरे, सुन लो आए विनय हमारी
तीर्थ शिवोम दरस मो दीजो, छोड़ कहां जाऊं दर तेरा

राग देवगिरि बिलावल ताल केहरवा

सोई संत सुजान अमान, हरि के गुण ही जो नित गावे
औगन तज के राम भजे जो, मन में गर्व नहीं जो लावे
असत न बोले, निन्दा नाहीं, दुख न देत किसी भी जन को
दोषन छोड़, गुणन अपनावे, मन अपना हरि चरनन लावे
राग-द्वेष न राखे कोऊ, आतम चीन्हे सब जीवन में
सुख देवे, मन समता राखे, आपा कबहूं नहीं जनावे
लीन सदा ही तत्त्व विचारा, दीन प्रभु-चरनन ही रहवे
हरि का सेवक, जग हितकारी, पर-उपकार नहीं दिखलावे
दादू भजे, जगत सों न्यारा, जग प्रभाव मन लावे नाहीं
तीर्थ शिवोम् कोई जन दीखे, लक्खन ऐसे मनीं धरावे

राग अड़ाना ताल झुमालौ

जब लगि मन में जग आसक्ति, तब लगि राम मिले न
मनवा तो जग ही में लागा, ताहीं राम मिले न
दीनदयाल कृपा दीनन पर, तब ही आवत राम पछाना
तब ही सुख आनन्दित मनवा, तब क्यों राम मिले न
मन चंचल बुद्धि मलीन है, पाप कर्म ही मो को भाएं
धर्माधर्म विचार करूं न, या विधि राम मिले न
तुमरी किरपा जो पाऊं न, तो मनवा निर्मल न मोरा
न ही साचा प्रेम जगें मन, मोहे राम मिले न
दादू जनम-जनम के बंधन, देखे, रोए मन के माहीं
तीर्थ शिवोम् कृपा मो पर हो, क्यों मो राम मिले न

राग नन्दकेदार ताल रूपक

जब से तुमरा नूर देखा, जग से फिर क्या काम है
तुम से ही है नेह लागा, जग हुआ बे-काम है
कर लिया अब वास हम ने, खीर-सागर जायकर
तेज अद्भुत हम ने देखा, अब हुआ विश्राम है
हो रहा आनन्द झिलमिल, सुख के सागर घर किया
अब नहीं है फिक्र कोई, एक बस आराम है
जोतियां बे-अन्त ही हैं, आर-पार कोई नहीं
उछलती हैं, खेलती हैं, ये ही उन का काम है
है लिया पहचान दादू, आदि-अन्त विहीन जो
अब नहीं शिव ओम् को भी, कुछ भी कोई काम है

राग मारूविहाग ताल धुमाली

तुमरा संग कभी न छोडूं, हे मेरे जीवन आधार
जग को छोडूं, तन धन छोडूं, छोड़ देऊं चाहे परिवार
तुमरे संग सुखी मन होए, तुमरे संग नहीं दुख कोए
तुमरे संग रहे थिर मनवा, तुम ही हो मेरी सरकार
जतन अनेकों मैं ने कीने, क्या-क्या करतब नाहीं कीने
अन्त तिहारी किरपा पाई, चरण कमल-मुख हिरदय धार
शरण तिहारी जो जन आए, वास तिहारा अन्तर पाए
चरण-कमल मन देअ निवासा, हीन-दीन, तुम करुणा सार
दादू मनवा अनत न जाए, चरनन ही में रहा समाए
तीर्थ शिवोम् शरण हौं तेरी, मन तो करत रहा तकरार

राग विहाग ताल केहरवा

अब तो छोड़ दे मेरा तेरा, सिर पर बैठा सिरजनहारा
क्यों तू सोचत मन में नाहीं, संग लिया क्या बंस तुम्हारा
मेर तेर सब गर्व तेरा है, गर्व ही तुझ को रहा नचाए
गर्व जगत विषयन में लाए, रहत बसा मन में हंकारा
कालचक्र में रहा पिसत तू, आवन-जावन, जग भरमाया
जब सिर तेरे आन पड़ेगी, जावत भूल सभी परिवारा
मन अपने को संयम कीजे, राम सिमर ले तू दिन राती
मेर तेर तब ही जाएगी, विकट पंथ यह है गिरधारा
दादू दास भया न अपना, यह तन जो अपना कर माने
तीर्थ शिवोम् होएगा कैसे, तेरा यह मिथ्या संसारा

राग भीमपलास ताल केहरवा

नीर नहावन जोग अधर है, भरम भुलाना लोगन सारा
जगहिं रहे बिताए जीवन, रहे फिरत हैं मारा मारा
वहां नहाए निर्मल होए, बाधा विघ्न सभी हट जाए
अलख अगोचर देखन आवे, दूर भए जग दुखड़ा सारा
घाट सुघट है निर्मल नीर, पीवन मिलत रहा भरपूर
साधू संत करें सतसंगा, मिट जाए मन संशा सारा
जाए घाट करो विश्राम. हो जाओ तुम पूरण काम
लागत नाहीं कुछ भी दाम, दूर हटे सब जग विस्तारा
दादू भेद न जाने ताका, देव ही देत बताए आए
तीर्थ शिवोम् घाट है ऐसा, देत मिटाए झगड़ा सारा

राग सिन्ध भैरवी ताल केहरवा

राम राम तू कह रे मनवा, राम राम तू कह रे
राम राम तू सहज सुनावे, राम राम तू कह रे
राम चरन मेरा मन लागे, जा मन संत सुहावे
कहा सुना सब सीस धरूं मैं, राम राम तू कह रे
लागी सुरत राम सों हरदम, राम प्रतीति मन में
ऊठत बैठत राम ही सिमरूं, राम राम तू कह रे
गांठ से तेरा कुछ न जावे, राम कहे से मूरख
पाप सभी कट जावें तेरे, राम राम तू कह रे
दादू कहत हरि गुण गाओ, मन आनन्द मनाओ
तीर्थ शिवोम: हरि सुख-साधन, राम राम तू कह रे

राग कौशिकान्हड़ा ताल धुमाली

तन सिंगार भगत न भावे, राम नाम कोई देअ मिलाए
मन तो लागा हरि चरनहिं, चरन हरि कोई देअ दिखाए
मन न भात है अंजन-मंजन, न ही चीरा, रूप सजावन
छोड़ दिए सगले सुखसाधन, मन पीरा कोई देअ मिटाए
मनवा तनवा सब ही मैला, अन्तर-भाव सभी ही मैले
कैसे हो छुटकारा मेरा, मन दुविधा कोई देअ हटाए
जैसे चातक जलहिं देखत, रहा निहारत राह तिहारी
कबहूं भाग उदय हो मेरा, जन भूला, कोई देअ जगाए
दादू भावत दूजा कुछ न, राम बिना दीखत अंधियारा
तीर्थ शिवोम् राम ही भावे, मम आशा कोई देअ पुराए

राग मिश्र काफी ताल केहरवा

मीठा है रे नीका, राम रस है रे मीठा
पीवत है, कृपा महान, राम रस है रे मीठा
साध संत सब रस में डूबे, न्हावत पीवत सीस चढ़ावत
चाहत रस सकल जहान, राम रस है रे मीठा
मीरा सूर कबीर ने पीया, रविदास तुलसी ने लीया
करत सबन गुणगान, राम रस है रे मीठा
तू भी पी ले, जम कर पी ले, छोड़ जगत कर, रस को पी ले
छूटत सब जाए जहान, राम रस है रें मीठा
दादू रस है अलख अभेदा, आवे अन्त न इस का कोई
करत शिवोम् बखान, राम रस है रे मीठा

संत रविदास जी

राग खमाज ताल धुमाली

चाहें सब ही पार उतरना, पार परा कोई भी नाहीं
रहें भटकते इसी किनारे, परले पार कोई भी नाहीं
कहत पार, इस पार से पारा, इस जग से जो रहे निआरा
भरम भुलाना सकल गंवारा, भ्रम से पार कोई भी नाहीं
पार राम घनश्याम बिराजे, निर्मल मन ही ताहे पावे
जगत बिआपे, गुप्त रहे वह, लखे उसे कोई भी नाहीं
राम कृपा ही निर्मल मनवा, राम कृपा ही पार उतारे
राम कृपा सगले दुख नाठे, किरपा बिन कोई भी नाहीं
कह रविदास प्रभु सुखसागर, जो पाए, आनन्दित मनवा
तीर्थ शिवोम् हरि इक दाता, दूसर जग, कोई भी नाहीं

राग गौड़ सारंग ताल केहरवा

सिमरेगा जब राम तू, भेद सब खुल जाएगा
मन तेरा निर्मल बने, मैल सब धुल जाएगा
जो सुख राम भजन में, ज्ञान है भगतन को
भक्त ही जानें समझें, प्रेम पथ खुल जाएगा
गुरु कृपा से चाले, वर्षा दीन जनन पर
धारण शरण गुरु की, भाग सब खुल जाएगा
जग तो भरम भुलाना, जगत पिपासा उलझा
छोड़ बखेड़ा सब ही, पाप सब धुल जाएगा
कह रविदास भजन कर, गर्व मिटा दे मन सों
तीर्थ शिवोम् समझ ले, बंद दर खुल जाएगा

राग भैरवी ताल भजनी ठेका

एक राम ही जग का जीवन, देना नहीं विसार प्रभु जी
मैं सेवक, मैं जन हूं तेरा, तेरे पड़ा दुआर प्रभु जी
चाहे विपदा मेरी हर लो, चाहे मन में जो भी उपजे
चरण कभी न छोड़ूं तेरे, जावन हो सो जाव प्रभु जी
दर तेरा ही पकड़ा मैं ने, जग के द्वारे देखे सगले
एक तेरे दर आसा जागी, दर पर करत पुकार प्रभु जी
कह रविदास दर्स ही मांगत, ता ही विनय करत हूं तो सों
सगला भार तुम्हीं को सौंपा, आया मैं दरबार प्रभु जी
तुमरी आसा, तोर भरोसा, तू ही राखनहार है मेरा
तीर्थ शिवोम् सहारा तेरा, कृपावन्त सरकार प्रभु जी

राग बिलावल ताल भजनी ठेका

अब हौं प्रीतम का घर पाया, ऊंचा भवन सदा मन भाया
गुरु कृपा सों सुख फल पाया, रोम् रोम मेरा हर्षाया
रामधाम कर जगत पछाने, सुख आनन्द वहां मस्ताने
नहीं सांसत न लानत कोई, ऐसा रूप प्रभु उपजाया
आवन-जावन दुख न कोई, राम बसे आनन्दित जोई
जो मन भावे, सो ही पाया, ऐसा करतब राम् जमाया
आशा तृष्णा पसरे नाहीं, राग द्वेष मन झगड़े नाहीं
सभी दिशाएं एक ही छाया, मन सों सगला भरम भगाया
कह रविदास प्रभु हे प्रीतम, कैसा देश बनाया अपना
तीर्थ शिवोम् नहीं है उपमा, राम राम ही रहत सजाया

राग वृन्दावनी सारंग ताल केहरवा

अब क्या गाऊं, क्या कह पाऊं
गावनहारा देख लिया है, अब मैं कुछ भी न कह पाऊं
जब लौं जीव करत मन आसा, तब लौं करता मेरा तेरा
जब मिलया ता प्रीतम प्यारा, न कुछ गाऊं, न कह पाऊं
जब लौं नदिया बहे जात है, तब लौं ताही गर्व समाना
ज्यों मिल सागर, रूप विलीना, न गर्वाऊं, न कह पाऊं
जब लौं मन आसा मुकती की, तब लौं मुकती नाहीं पावे
छूटी आस, मत्त तब मनवा, न मन आसा, न कह पाऊं
रविदास मन प्रीती राखो, आस-निरास सकल मन त्यागो
तीर्थ शिवोम् भजो गोविन्दा, न समझाऊं, न कह पाऊं

राग भूप ताल केहरवा

अनुभव होत है अन्तर माहीं, बाहर का को कहत न आवे
जब अन्तर में प्रीतम पावे, दूजे को कछु कहत न आवे
हरि जगत सर्वत्र समाना, जानो अपना, होए अपना
साखी दूसर और न कोई, अपना वह पर कहत न आवे
जो मन थिरता पाए तेरा, कोई बूझत उस को नाहीं
आपुन सुख ही विमल विवेका, अनुभव हो पर कहत न आवे
अन्तर की गति आपुन जानो, दूजा तो यह तन ही देखे
अन्दर क्या-क्या होत है जन के, जानत जन पर कहत न आवे
कह रविदास बात अनुभव की, का को कहिए, कौन सुनेगा
तीर्थ शिवोम् हरि ही जाने, जग को कुछ भी कहत न आवे

राग तिलक कामोद, ताल रूपक

छोड़ जाओ तुम मुझे जो, छोड़ दूं कैसे तुम्हें मैं
तुम को छोड़ूं, का से जोड़ूं, छोड़ दूं कैसे तुम्हें मैं
न करूं तीरथ वरत मैं, न अंदेशा मुझ को कोई
इक भरोसा है तुम्हारा, छोड़ दूं कैसे तुम्हें मैं
आना जाना सब ही पूजा, तुम सा देखा देव नाहीं
देव को दूं छोड़ कैसे, छोड़ दूं कैसे तुम्हें मैं
जोड़ लीनों मन हरि से, तोड़ कर सारे जगत से
अब तो लागा लग गया है, छोड़ दूं कैसे तुम्हें मैं
एक ही आसा तुम्हारी, अब पड़ा रविदास चरणीं
और न शिव ओम दूजी, छोड़ दूं कैसे तुम्हें मैं

राग भूपाली तोड़ी ताल केहरवा

जा के मन न दर्द प्रभु का, दर्द प्रभु को कैसे जाने
दुखिया ही दुखिया को जाने, जग का सुख, जग ही को जाने
दुर्भागन सुख पात पिया न, न ही सेव पिया कर पावे
जलती रहे विरह में पी के, एक हरि ही माने जाने
प्रेम का पंथ अति कठिनाई, एक अकेले, बिना सहारे
गिरते-पड़ते, आहें भरते, प्रभु सहारे को ही जाने
सुख की सार जगत में नाहीं, सुख की सार सुहागिन जाने
मन तन गर्व सभी चरणों में, प्रभु अर्पण, अर्पण कर जाने
रविदास न बात किसी से, नाम ध्यान ही मनवा लागा
तीर्थ शिवोम् नहीं कुछ जानूं, तुम ही मानूं, तुम ही जाने

राग मिश्र पीलू ताल दादरा

एक घूंट, बस एक घूंट ही, देय पिलाए आजे मोहे
एक घूंट का ही मतवाला, एक घूंट ही आजे मोहे
काय किया है साकी तैंने, एक घूंट में रस को नाहीं
गगन मण्डल में वासा नाहीं, नहीं नशा ही आजे मोहे
साकी कहत सुनो मतवाले, सिर जो देवे पात नशा वो
जो सिर राखे, जग ही भाखे, जग न लेवन आजे मोहे
एक घूंट जो अमृत पीए, जम को दूर, सदा ही जीए
जनम मरन का काटे फंदा, ऐसा घूंट ही आजे मोहे
रविदास सुख होय अनन्ता, जो पा जाए घूंट रसीला
तीर्थ शिवोम् हरि हे सजना, चरनन राखो आजे मोहे

राग देसी ताल धुमाली

चाहत ये ही हूं मैं मन में, सिमरूं नाम सदा मैं तेरा
दूसर अवर न चिन्ता मोहे, हिरदय ध्यान सदा मैं तेरा
जब चिन्ता तुम करत हो मेरी, फिर चिन्ता किस बात की मोहे
तुमरी नज़र सभी दुख जावें, जन कुरबान सदा मैं तेरा
पापी दीन जनन तुम तारे, कौन-कौन न पार उतारे
मेरी बेर विवशता कैसी, हूं तो दास सदा मैं तेरा
दीनदयाल पतिपावन हो, बिरद संभारो प्रभु जी अपनी
किरपा तेरी, रहूं भरोसे, पर अंजान सदा मैं तेरा
रविदास अपराधी तेरा, जग में आया, भूला तोहे
तीर्थ शिवोम् पड़ा हूं शरणी, चरनन दास सदा मैं तेरा

सहजोबाई जी

राग - चारूकेशी
ताल - भजनी ठेका

पूरन दाता सतगुरु मेरा
दान अभय दीनन को दीन्हें, भव-जल कीना पारा मेरा
डारे काटे सब ही बंधन, जम को दूर भगाया मो सों
रंक बनाय, राजा कीन्हा, हरि- धन दीन, उधारा मेरा
योग ज्ञान भक्ति सब दीन्हें, साधन अलख जगाया अन्दर
तन मन धन सुख मोहे दीन्हा, दूर किया अंध्यारा मेरा
सब दुख दूर, सभी सुख आए, ध्यान विचार सवारा मेरा
भला-बुरा जो शरणीं आवे, समदृष्टि है सतगुरु मेरा
सहजो आनन्द रूप गुरु है, लिप्त नहीं संसार शिवोम्
ताही चरणीं नमन करत हूं, क्या से क्या कर दीन्हा मेरा

राग पहाड़ी ताल भजनी ठेका

काया में ही वास कराओ
अन्तर दृष्टि, अन्तर देखो, सुरत निरत लौ अन्तर लाओ
वश कर राखो इन्द्रिन पांचों, ताप तीन को दूर भगाओ
सत संतोष दया कर धारन, अन्तर दुर्जन मार भगाओ
सील छमा धीरज अपना कर, अन्तर अनहद नाद बजाओ
पाप ताप को परे हटा कर, धर्म-कर्म सों संग कराओ
अन्तर नगरी, अन्तर दृष्टि, अन्तर माहीं वासा होवत
अन्तर मन निर्मलता पाओ, अन्तर बैरिन दूर हटाओ
सहजो संभल संभल कर चालो, सतगुरु मारग दीन्हा तोहे
तीर्थ शिवोम् सभी अन्तर में, अन्तर ही सगला सुख पाओ